

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही। ग्रन्थ ज्ञान रतन (भाखल दरिया साहेब) साखी - १					
	ज्ञान रतन मनि मंगल, विमल सुधा निजु नाम। करो विवेक विचारि के, जाय अमर पुर धाम॥ चौपाई					
सतनाम	विमल नाम मनि मस्तक टीका। विना विवेक भेखा सब फीका।१।	सतनाम	निरखि नाम निजु प्रेम समेता। काटि करम कलि मंगल हेता।२।	सतनाम	पूरन ब्रह्म पंडित सोइ ज्ञाता। निरालेप पुरइन ज्यों पाता।३।	सतनाम
सतनाम	पुरुष नाम निजु पारस अहई। भव मुक्ताहल जग में लहई।४।	सतनाम	विमल नाम निजु प्रेमहिं पोवे। सुरति धगा मंह जाय समोवे।५।	सतनाम	पुरुष नाम निजु विमल विरोगा। ज्ञान युक्ति जन छीजै ना जोगा।६।	सतनाम
सतनाम	नाम विना दुःख दारुन दावै। तपत शिला पर तावन तावै।७।	सतनाम	माया अतीत मन शक्ति संयोगा। हरे ना कलि-मलि विरह वियोगा।८।	सतनाम	माया मंदिर मानो आमृत छाया। नृप नाहि नेति नाम गुन गाया।९।	सतनाम
सतनाम	जीवन कंचित कंजनमें लागा। नाम बिसारि भोग रस पागा।१०।	सतनाम	साखी - २ ठाका मूल निजु नाम है, रहो चरन चित लाये। हंस वंश मुक्ताइहैं, जिन्दा जग में आये॥ चौपाई			सतनाम
सतनाम	विमल प्रेम नाम नाहि चाखै। कलि मह कथा बहुत चित राखै।११।	सतनाम	कवि आखर करि बहुत बनाई। माया भेद ज्ञान नहिं पाई।१२।	सतनाम	श्रुति पुरान कथाहि मुनि ज्ञाता। जीवन पदारथ सो भ्रमराता।१३।	सतनाम
सतनाम	कथि विराग मुनि स्वारथ साधी। अपने हाथ आप पगु बांधी।१४।	सतनाम	प्रेम तत्व प्रेम जब चीन्है। निजु गहि नाम सुरति महि भीन्है।१५।	सतनाम	दूरमति दोविधा कबहिं न भासै। काम क्रोध अपने मन त्रासै।१६।	सतनाम
सतनाम	करहु कृपा मोहिं सतगुरु दयाला। सुनी वचन मन होत निहाला।१७।	सतनाम	<div style="text-align: center;">1</div>			सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साखी - ५	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	काटि करम सत शब्द से, मिले गहिर गुरु ज्ञान।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भरम करम सब नासि कै, भयो अमरपुर ध्यान॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	छन्द - १	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	जम जाल काल विसारिके, सत्त शब्द में धुनि लावहीं।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गुरु ज्ञान विमल विरोग मद यह, कुमति कलि विसरावहीं।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	अमर लोक में शोक नहीं, सिकिल शोभा पावहीं।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भव भरम करम ना ब्यापु कबही, उदित मंगल गावहीं।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सोरठा - १	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	करो विवेक विचारि, अमर लोक अमृत पियो।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भव जल जाहि न हार, सतगुरु दया तरनी दियो॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	ज्यों भुवंग भरम में लागा। स्वारथ कारण योग जो जागा।४०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	उपजे मनि यह निर्मल नीका। मनि के आगे दीपक है फीका।४१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	काढ़ि मही मनि दीपक कीन्हा। उड़ी पतंग भोजन भोग लीन्हा।४२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सरग नरक नाहिं अविगति जाना। भवन भरमि नाहीं पद पहचाना।४३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	श्रुति पुराण कथि पंडित ज्ञाता। शील संतोष प्रेम रस माता।४४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	तृषुना चौगुन विखौ विकारा। सत्त शब्द नहिं करै विचारा।४५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	ममिता मद मन मोदित पासा। सखा सहित मुक्ति इन्ह नाशा।४६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	तेजि कमल दल कुमुदिनि पासा। विखि माला मंह चाहै सुवासा।४७।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	ऐसे नृप नर जात भुलाई। सकल शोभा यह मोह बनाई।४८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	संत सुबुद्धि वचन सत्त भाषा। शील संतोष रोष रचि राखा।४९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	मोह कोह यह तिरगुन फन्दा। विषय भवन में चाहे अनन्दा।५०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साखी - ६	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	विषय भाव रस मांगत, त्यागत संत स्नेह।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चौरासी के भवन में, फिर फिर धरिहैं देह॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	मैं सेवक तुम्ह सत्त गुरु दाता। तुमसे और कौन बड़ ज्ञाता।५१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	आदि अन्त निजु कथा सुनाई। होहु दयालु भर्म सभ जाई।५२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	को है राम जाहि लागा। वेद विदित मुनि पंडित जागा।५३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	3	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
को है सिया सकल जग गावै । सो साहब सत्त भेद बतावै । ५४ ।	भली मती भै पूछा तुम ज्ञाना । आदि अन्त भाखों परवाना । ५५ ।	ठीका मूल सत्त यह भाखों । तुमसे गोइ काहे के राखों । ५६ ।	कहो कथा युग-युग चलि जाई । संत सुखद मुल मंगल गाई । ५७ ।	अक्षय वृक्ष वोय पुरुष अकेला । सुत निरंजन सो संग चेला । ५८ ।	सोरह सुत सब लोक नेवासा । सुकृत सदा पुरुष के पासा । ५९ ।	सोइ सुकृत सोई जोग जीता । महिमा अलख प्रेम निजु हीता । ६० ।
			साखी - ७			
			उतपति सकल स्नेह यह, प्रगट कहूं सब जानी ।			
			सुनो संत चित हित दे, लेहु वचन सत्त मानी ।।			
			चौपाई			
सत्तर युग रहु शून्य बेसूना । तब नहिं होते पाप ना पूना । ६१ ।	तब नहिं राम रमिता जग आये । जाके वेद लोक सब गाये । ६२ ।	तब नहिं होते पवन नहिं पानी । तब नहिं संग ना सीव भवानी । ६३ ।	तब नहिं होते वेद कर मूला । तब नहिं गर्व ना ज्ञान अंकूला । ६४ ।	तब नहिं कच्छ बराह सरूपा । राव रंक नहिं अविगति रूपा । ६५ ।	तब नहिं होते फल नहिं फूला । तब नहिं होते गर्व अंकूला । ६६ ।	तब नहिं ब्रह्मा वेद उचारी । तब नहिं गंगा रहली बेचारी । ६७ ।
तब नहिं कांध रहे कर जोरी । तब नहिं मुरली मुख महं मोरी । ६८ ।	तब नहिं चांद सूर्य विस्तारा । तब नहिं भयल दसो अवतारा । ६९ ।	आदि अन्त नाहीं कुल केऊ । नाहीं कुल पंडित नाहीं कुल देऊ । ७० ।	सत्तर युग सैन सुखा बासा । सत्त पुरुष कै अजब तमाशा । ७१ ।	युगन जात उन्हि जाना । सत्त सुकृत मिलि दीन्हों पाना । ७२ ।		
			साखी - ८			
			सत्त पुरुष निजु आप से, कीन्ह माया विस्तार ।			
			सत्त वचन यह बूझि कै, संत करहु निरुआर ।।			
			चौपाई			
पहिले हुकुम धरति तब कीन्हा । टारि सुमेर तब जाकन तब दीन्हा । ७३ ।	जो कन्या सतपुरुष ने कीन्हा । जोग भोग रस प्रगट लीन्हा । ७४ ।	शक्ति संग निरंजन बासा । तीन देव कीन्ह परगासा । ७५ ।				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तीन देव सखा बहु बानी। पत्र अनन्त किमि कहों बखानी।७६।	सतनाम	अब किछु कथा कहौ निजु आगे। सुनहु सन्त निजु प्रेम सुभागो।७७।	सतनाम	मन माया कर अइसन साजा। अरुझे राव रंक और राजा।७८।	सतनाम
सतनाम	कहीं योग कहीं भोग विलासा। कहीं दान कहीं पुण्य कै आशा।७९।	सतनाम	कहों कथा सब संतन्हि लागी। जाते मोह सकल भ्रम भागी।८०।	सतनाम	कहों राम सिया कर बाता। आदि अन्त जो बूझै ज्ञाता।८१।	सतनाम
सतनाम	साखी - ६					सतनाम
सतनाम	माया जनक गृह आइया, प्रगट भई तीन लोक।					सतनाम
सतनाम	शोभा सकल सँवारि कै, दीवो सभनि के शोक।।					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	अति विचित्र शोभा बहु भांती। पूरन चन्द्र शरद जनु राती।८२।	सतनाम	निरकेवल ज्योति सुन्दर अति कांती। विमल सरूप रचा एहि भांती।८३।	सतनाम	ताकर कवि किमि करहु बखाना। सकल माया कर जाना।८४।	सतनाम
सतनाम	ऋषि सोचत मन भौ वैरागा। बैठत उठत सोवत जागा।८५।	सतनाम	करब विवाह कवन विधि भांती। की कुल नेति राज गृह जाती।८६।	सतनाम	गुरु सों मंत्र मैं पूछों जाई। आज्ञा होइ सो करों उपाई।८७।	सतनाम
सतनाम	गये ऋषि शंकर के पासा। कै परनाम वचन परगामा।८८।	सतनाम	दुई कर जोरि वचन कहों स्वामी। सिया विवाह मूल मंगल धामी।८९।	सतनाम	की कुल कोई सकल संसारा। की राज काज गृह ब्याह विचारा।९०।	सतनाम
सतनाम	की ऋषि मुनि के सौंपो जाई। आज्ञा होय से करों उपाई।९१।	सतनाम	साखी - १०			सतनाम
सतनाम	शंकर मन महं बूझि के कहा वचन समुझाये।					सतनाम
सतनाम	धनुष स्वयम्बर रचिये, एहि विधि ब्याह उपाये।।					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	एहि जग धनुष तुरे जो कोई। सिया विवाह अवश्य के होई।९२।	सतनाम	ऐ स्वामी मोहिं संशय भारी। को यह चाप चढ़ाय उतारी।९३।	सतनाम	सीता सती सोई वर वरिहैं। या जग जीति समर जो करिहैं।९४।	सतनाम
सतनाम	सत वचन राखों परतीती। त्रिभुवन नाथ स्वयम्बर जीती।९५।	सतनाम	चले तुरन्त जनकपुर आये। यज्ञ पवित्र करि धनुष धराये।९६।	सतनाम	मुनि पंडित करि आनि बुलाई। यज्ञ आहुति करि मंगल गाई।९७।	सतनाम
5						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	धनुष कै पूजा कीन्हा बहु भाँती। चन्दन गंध पुहुप और पाती।६८।	सतनाम	निशि दिन सोचत मन्त्र विचारी। विधि परिपंच कठिन यह डारी।६९।	सतनाम	गये जनक जहां भवन निवासा। रानी आय बैठी चंहु पासा।१००।	सतनाम
सतनाम	रानी मिलि के मंत्र विचारी। प्रकट करि जग में परचारी।१०१।	सतनाम	तब बंदी के वेग बुलाई गुप्त मन्त्र सब प्रकट सुनाई।१०२।	सतनाम	जाहु जहां तहां कह समुझाई। सुजश सदा गुन भांट बड़ाई।१०३।	सतनाम
सतनाम	साखी - ११					सतनाम
सतनाम	सकल राव जग जो कोई, सबसे कहा पुकारी।					सतनाम
सतनाम	धनुष तुरे सो बरै जानकी, मिनती मंत्र विचारी॥					सतनाम
सतनाम	छन्द - २					सतनाम
सतनाम	नृप नृप अरु राव रंक सब, सभा सकल परचारहीं।					सतनाम
सतनाम	सुनो श्रवण महिं मंडल भूपति, सब बंदी भांट पुकारहीं॥					सतनाम
सतनाम	महा कठिन प्रन रोपेयो जनक यह, शंकर चाँप चढ़ावहीं।					सतनाम
सतनाम	धनुष तुरे सो महावीर भट, वेद विदित सब गावहीं॥					सतनाम
सतनाम	सोरठा - २					सतनाम
सतनाम	ऋषि मनि बोले विचारी, जो जन में जग राम अस।					सतनाम
सतनाम	सोइ पुरुष सिया नारी, जनक संशय सब मेटिहैं॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	कहैं भाट सुनु भूप सुजाना। सुनो श्रवण दे विदित परधाना।१०४।					सतनाम
सतनाम	धनुष तुरे सौ ब्याहै सीता। राव रंक जोई प्रन जीता।१०५।					सतनाम
सतनाम	सुनि के भूप चले दल साजी। देखि धनुष मूल मंगल राजी।१०६।					सतनाम
सतनाम	देश-देश के भूपति आये। रंगभूमि जहां धनुष धराये।१०७।					सतनाम
सतनाम	हो कुल हानि निकट नही जाई। एक-एक मंत्र पूछहिं सब आई।१०८।					सतनाम
सतनाम	कोई ज्ञानी नृप बोले विचारी। सुनो सकल मिलि वचन हमारी।१०९।					सतनाम
सतनाम	केहि नहिं परम सुन्दरी सुख शोभा। केहि नहिं कहिए माया कर लोभा।११०।					सतनाम
सतनाम	के नहिं भूखन भवन सुख सेज्या। के नहिं राज काज कुल लज्यो।१११।					सतनाम
सतनाम	केहि जग कन्द्रप केहि नहिं भीना। सब जग सलिता कहां ना मीना।११२।					सतनाम
सतनाम	के नहि भोग भाग सुख मांगे। के नहि योग जुगति से जागे।११३।					सतनाम
सतनाम	के नहिं पंडित सुबुद्धि सुजाना। के नहिं सिया करै मनमाना।११४।					सतनाम
सतनाम	6					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कोई-कोई भूप निकट भै दिखा। टरे न टारे धनुष कै रेखा।११५।	लिखा विरंचि जो अंक बनाई। के तेहि मेटि करै अधिकाई।११६।	साखी - १२	बीस भुजा दश शीशा रावना, रंगभूमि रजनी आये।	बल पौरुष सब तौलिकै, लंका चले लजाये॥	चौपाई	देखाहिं धनुष भयंकर भारी। बैठि रहे सब पौरुष हारी।११७।
लज्जित भये माथा करि नीचा। गृहिं नहिं जाहिं धनुष नाहिं घींचा।११८।	देखि विकल भई राजकुमारी। बैठे भूप सकल सब हारी।११९।	सारंग शक्ति भयंकर भारी। टूटे ना धनुष परीहे जग गारी।१२०।	सिया मुख देखि विकल भई रानी। यह प्रन कठिन धनुष तुम आनी।१२१।	आगे कथा अवधपुर गयऊ। रामजन्म जग परगट भयऊ।१२२।	आरति मंगल सब मिलि गाया। कहि कवि आखर शब्द सुनाया।१२३।	सहन भंडार लुटावहिं झारी। देहि रनिवास जरकसी सारी।१२४।
बाजन बाजत बहुत सुहाई। नट नागरि सब नाच बनाई।१२५।	मन के मनोरथ सबकै पूजा। राम पियार और नहिं दूजा।१२६।	चारु पुत्र जनमें अति नीका। सब गुन लायक वंश कै टीका।१२७।	जैसे मनि मन्दिल में राखा। देखि हरष भयो चारु साखा।१२८।	साखी - १३	यज्ञ पवित्र मूल मंगल, आनन्द मंदिल में झारी।	हरष भये सब देखि के, ब्राह्मण भांट भिखारी॥
चौपाई	यज्ञ समान किया पुनि आगे। गुनी ज्ञान वेद मत जागे।१२९।	करि भोजन सब कुटुम्ब समाजा। आनन्द मंगल बाजन बाजा।१३०।	खोलहिं चारु पुत्र पियारा। एक से एक शोभा अधिकारा।१३१।	जैसे मनि मस्तक का टीका। राम दरस देखि सब नीका।१३२।	विश्वामित्र दुखित मन भारी। मुनि दुःख देखि अवध पगु ढारी।१३३।	पहुंचे ऋषि जहां नृप राया। आदर भांति बहुत चित लाया।१३४।
कहे नृप ऋषि आयसु दीजै। महा प्रसाद भोजन फल कीजै।१३५।	कृपा समेत दाया बहु कीन्हा। भाग हमारि अवध पगु दीन्हा।१३६।					
7						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तब ऋषि अइसन बोले विचारी। राम के दीजै आज्ञा हमारी।१३७।	ऋषि वचन नृप लागे कारी। ज्यों भुवंग मनि लेत निकारी।१३८।	रानी विकल दुखित महतारी। करि रोदन पुहुंमी तन डारी।१३९।	अवध बुड़ा मानो जल मह शोगा। प्रान दुखित भव विपति वियोगा।१४०।	ऋषि तब क्रोध कीन्ह प्रचण्डा। मानो काल लिए शिर डंडा।१४१।	रामहिं नृप आगे तब दीन्हा। चरन छुड़ के विनती कीन्हा।१४२।	चलै तुरन्त निजु ऋषि के साथ। पीछे लखन आगे रघुनाथा।१४३।
सतनाम	सुरसरि मांह मंजन जो कीन्हा। रगरि चन्दन सिर चन्दन दीन्हा।१४४।	मृत्यु ताडुका निकट तुलाना। मारयो हृदय ताकि कै बाना।१४५।	हरषे ऋषि मुनि आरति कीन्हा। आशीष वचन राम कहं दीन्हा।१४६।	वेद विदित करि विमल पढ़ाये। ऋषि तब चले जनकपुर आये।१४७।	नगर देखि वाटिका गयऊ। उठि प्रातः आगे चलि अयऊ।१४८।	सिया सखिन संग गई फूलवारी। पद पंकज देखि हृदय सुखारी।१४९।	ललचि लगी मूरि मदन मयंगी। तै निकलंकी है निर्मल अंगी१५०।
सतनाम	संग सखी लिए जनक कुमारी। गये तुरन्त जहां चित्र सारी।१५१।	राव रंक नृप बैठे झारी। राम के देखि तहां पगु ढारी।१५२।	जनक सुता औ सखिन्ह समेता। राम के देखि भगन मन हेता।१५३।	नाहीं संशय सुखासागर नीका। टूटे धनुष तो सबै बनीका।१५४।	सिया प्रेम प्रीति निज हूली। मानो कली कमल की फूली।१५५।	दिन मनी दिन अम्बुज छवि छाये। भृंगा भाव रस अमिय सुहाये।१५६।	चले राम धनुष पहुँ कैसे। मानो वीर महा भट जैसे।१५७।
सतनाम	देखत दल सब अति अकुलाना। मानो कम्पित काल डेराना।१५८।	साखी - १४					
सतनाम	महा कठिन करालपन, रंगभूमि भव भीरि। कर गहि चांप चढ़ाइके, तानि तुरा रघुवीर॥						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	मधुर मनोहर बाजन बाजा। हरषे राम सिया सिर छाजा।१५९।	टूटे धनुष शब्द भव भारी। परशुराम सुनि लागु गोहारी।१६०।	चला कोपि करि आये तहवाँ। राम-लखन बैठे रहे जहवाँ।१६१।	बोले वचन क्रोध करि तीता। को तोरि धनुष बियाहे सीता।१६२।			

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	लषन कहा सुनो हो स्वामी। का तुम कहो गरब अति गामी।१६३।	सतनाम	यह पिनाक तो बहुत पुराना। तेहि तोरे का कियो पछताना।१६४।	सतनाम	अति सुन्दर है विषि का मूला। सुनि वचन मोहिं लागत शूला।१६५।	सतनाम
सतनाम	ज्यों लरिका करे लरिकाई। बड़ा होइ सो करे समाई।१६६।	सतनाम	क्रोध होइ धनुष हाथ कै दीन्हा। गर्व भंज पुहुंमि पर कीन्हा।१६७।	सतनाम	अति है गर्व गर्द मिलि जाई। पुरुष प्रताप राम यश पाई।१६८।	सतनाम
सतनाम	परशुराम तब चले लजाई। अति सकोच होए बदन छिपाई।१६९।	सतनाम	साखी - १५	सतनाम	अलि ब्रिंद के मान छवि, अलि मन मगन सुहाये।	सतनाम
सतनाम	उदय गीरि रेखा रवि, विलगि कहा गुन जाये॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	ऋषि के संग आये रघुनाथा। कृपा सिन्धु मोहिं कीन्ह सनाथा।१७०।	सतनाम
सतनाम	तुम नृप आय दरस मोहिं दीजै। सिया विवाह मूल मंगल कीजै।१७१।	सतनाम	विहित विहित कै लिखा बनाई। लेके दूत अवधपुर जाई।१७२।	सतनाम	पहुंचे दूत अवधपुर जबहीं। पाती नृप कहँ दीन्हों तबहीं।१७३।	सतनाम
सतनाम	पाँती बाँचत बहुत अनन्दा। जल महँ फूले शरद जनु चन्दा।१७४।	सतनाम	राजा उठी भवन में गयऊ। रानिन्ह से निज कथा सुनयऊ।१७५।	सतनाम	भई आनन्द कोशिला रानी। तलफत मीन बरषा जनु पानी।१७६।	सतनाम
सतनाम	जैसे गांसी तन की काढ़ी। मेटिग्यो पीरा प्रीति अति बाढ़ी।१७७।	सतनाम	रानी सभै आनन्दित भयऊ। बिसरी मनी हाथ जनु अयऊ।१७८।	सतनाम	अवध के लोग सब भया सुखारी। दुःख मेटा सुख भयऊ अधिकारी।१७९।	सतनाम
सतनाम	साखी - १६	सतनाम	हरषैं संत समाज सब, गुरु पद पंकज लीन्ह।	सतनाम	मुनि वशिष्ठ के आगे, जनक कथा कहि दीन्ह॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	नृप मुनि मंत्री बैठे पासा। राम विवाह कीन्ह परगासा।१८०।	सतनाम	विक्रि विक्रि के लगन सोचाया। सुदिन सुफल मूल मंगल गाया।१८१।	सतनाम
सतनाम	सिया बिलास ग्रन्थ अस भाषैं। राजा राम क्षत्र सिर राखैं।१८२।	सतनाम	नृप नेवता जहाँ तहाँ भेजा। लिखि के पाती जहाँ तहाँ जेजा।१८३।	सतनाम	कलशा चित्र लिखा बहु भाँती। चौमुख चार जरावहिं बाती।१८४।	सतनाम
सतनाम	9	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जूथ जूथ गावहिं नर-नारी। नित होखौ मूल मंगल चारी।१८५।	सतनाम	निशि वासर नित बाजन बाजा। करत आनन्द अवधपुर राजा।१८६।	सतनाम	अजमस बहुत बारात बनावा। भोजन भाव करि कुटुम्ब खियावा।१८७।	सतनाम
सतनाम	समाज राज दुओ सूत समेता। साज बाज मूल मंगल हेता।१८८।	सतनाम	गज तुरंग रथ सब साजी। शोभा सुगन्ध चहुँ ओर छाजी।१८९।	सतनाम	बाजन वाजे सोभु निशाना। अति धमण्ड चहुँ ओर घहराना।१९०।	सतनाम
सतनाम	दल बादल कै एकै साजा। बनी बारात अनेगनी राजा।१९१।	सतनाम	जार जनकपुर निकट तुलाना। देखी बरात सब सुबुधि सुजाना।१९२।	सतनाम	ऋषि राम लखन तहाँ आये। शोभा समाज सुन्दर तहाँ छाये।१९३।	सतनाम
सतनाम	दशरथ ऋषि के चरन मनायो। धन्य भाग मोहिं राम भेंटायो।१९४।	सतनाम	रानी सुनि आनन्दित भयऊ। अति विलास मूल मंगल गयऊ।१९५।	सतनाम	वेदी बांधि कलशा धरैऊ। मोतिन माँड़ों बहु विधि छयऊ।१९६।	सतनाम
सतनाम	भाँति-भाँति मनि खम्भ जो ठाढे। मानो कनक काटि कर काढे।१९७।	सतनाम	साखी - १७	सतनाम	बाजन सकल समाज सब, बाजति अति अघोर।	सतनाम
सतनाम	नरसिंहा अव तूरही, ताल मृदंग सँजोर॥	सतनाम	छन्द - ३	सतनाम	साज राम के कैसे बरनो, शोभा सकल सँवारि कै।	सतनाम
सतनाम	लात हीरामनि झलाझलि, मटुक अति छवि छाड़ कै॥	सतनाम	बसन झलकत केसरी सब, अग्र परिमल लाइ कै॥	सतनाम	चारु पुत्र सुगन्ध सुन्दर, हरषि राजा पाइ कै॥	सतनाम
सतनाम	खोरठा - ३	सतनाम	चली बरात बिचारी, देखि जनकपुर हरषि भव।	सतनाम	जूथ-जूथ नर-नारी, राम रूप सब देखहीं॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	परिछन करि आदर तब कीन्हा। जहाँ तहाँ डेरा करि दीन्हा।१९८।	सतनाम	भोजन परकार कीन्ह बहु भांती। जेकरा जेइसन जहाँ तहाँ जाती।१९९।	सतनाम
सतनाम	माड़ो मन्दिल तहाँ अति शोभा। नारि निहारि प्रेम अति लोभा।२००।	सतनाम	बनिता बनि बनि गावहिं गीती। राम रूप देखि अधिकें प्रीती।२०१।	सतनाम	सीतहिं राम विवाह कराया। वेद विदित मूल मंगल गाया।२०२।	सतनाम
सतनाम	10	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	राम सिया संग जहां चित्र सारी। संग सखी और सासु पियारी।२०३।	कोहबर माँह रइनि बीति गयऊ। तम भव दूरि बाहर चलि अयऊ।२०४।	निति निति भाव अधिक तब कीन्हा। प्रेम प्रीति करि आदर लीन्हा।२०५।	दाईज दान बहुत कछु दीन्हा। आदर कै तब बिदा कीन्हा।२०६।	अति कौतुक है अगम अतीता। भवन भरमि कोइ चीन्हें ना सीता।२०७।	सतपुरुष के कन्या कुमारी। इन्ह परिपंच विदित जग डारी।२०८।	
सतनाम	सोई राम निरंजन अहई। इहि जग जान तिरगुन में बहई।२०९।	यह लीला सत्तगुरु कहि दीन्हा। वेद परिपंच जानि हम चीन्हा।२१०।	अति अतीत गुन अगम अथाहा। कहि कवि परै तिरगुन जल बाहा।२११।	वेद समुद्र खारो जल तीता। खाये न पीये देखन कहैं हीता।२१२।	वेद मथी ज्ञान धृत काढ़ी। सत्तगुरु महिमा इमिकरि बाढ़ी।२१३।	त्रिगुण धार चले नाहिं तरनी। बिनु गुन ज्ञान काह कवि बरनी।२१४।	
सतनाम	गुन है पुरुष नाम निजु हीता। गुन और निरगुन प्रेम प्रतीता।२१५।	साखी - १८					
सतनाम	भव गुन ज्ञान नाम सत, करो विवेक विचार। कहैं दरिया सत्तगुरु मिले, तरनी खेवनि हार॥						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	आय जनकपुर सबै नचाया। माया भेद ज्ञान नाहिं पाया।२१६।	एहि कौतुक माया कर चीन्हा। आगे पगु अवधपुर दीन्हा।२१७।	जाय अवधपुर पहुंचे राया। आनन्द मंगल सब मिलि गाया।२१८।	राम देखि सब भया सुखारी। मेटा कल्पना बड़ दुःख भारी।२१९।	परिछन करि तब लीन्हा उतारी। रही निहारि अवध की नारी।२२०।	सीता रूप देखि सब सकुचाई। फेरी नयन सब बदन छिपाई।२२१।	
सतनाम	रूप राशि है अति सुठि शोभा। नयन कमल मानो भ्रमर लोभा।२२२।	आई भवन में चञ्चल चतुरी। अति होए प्रेम राम चित अतुरी।२२३।	सोई गिरा गुन सोई है सीता। घौरि फेरे कल करे अनीता।२२४।	माया अनंत है अगम अगाधी। तिरगुन तेज सबनि कह बांधी।२२५।	परा भवन में भर्म भुलाना। लखै सो किमि करि अलख अमाना।२२६।	साखी - १९	
सतनाम	मूरति में सुरति बसे, निरति रही अमान। दिल दरिया दर्पण देखिये, तामें पद निर्वान॥						

11

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	नृप मुनि मंत्र कीन्ह अस भाऊ। राम तिलक दीजै आनंद बधाऊ।२२७।	सतनाम	नृप कहें सुनो मुनि ज्ञाता। राम के तिलक दीजै निजु बाता।२२८।	सतनाम	अब विलम्ब किमि करिये कामा। बैठें सिंहासन सो श्री रामा।२२९।	सतनाम
सतनाम	आये नृप जहवाँ सब रानी। बोले प्रेम मधुर निजु बानी।२३०।	सतनाम	प्रेम प्रीति करि ऐसन भाषा। राम के तिलक लगन रचि राखा।२३१।	सतनाम	सब रानी सुनि भई अनन्दा। फूली ललनी शरद जनु चन्दा।२३२।	सतनाम
सतनाम	सबके मन में यह ठहराना। राम के तिलक किन्ह मनमाना।२३३।	सतनाम	साखी - २०	सतनाम	तिलक दीजै निजु राम कहँ, विनती कीन्ह प्रगास।	सतनाम
सतनाम	करि आनन्द मूल मंगल, छिरक्यो परिमल बास।।	सतनाम	जहाँ रही कैकई भवन सुख सैना। तहवाँ जाय बोली अस बैना।२३४।	सतनाम	राम कै तिलक तुम्हें का नीका। दीन चार गये होइ बहु फीका।२३५।	सतनाम
सतनाम	सवति मुम्हारि है गरव गुमानी।। किछु दिन गये बोली अभिमानी।२३६।	सतनाम	पुत्र के राज सीता भई रानी। दिन-दिन तोहरो होइहें पुनि हानी।२३७।	सतनाम	कहैं कैकई सुनु चेरिया अभागी। राम के तिलक हमें निक लागी।२३८।	सतनाम
सतनाम	जहाँ मंगल तहाँ बोलस कुफारी। कैकई बहुत दीन्ह तेहि गारी।२३९।	सतनाम	तब वै पेखाना बहुत पसारी। नयनन नीर तुरन्तहिं ढारी।२४०।	सतनाम	तुम रानी हम चेरिया तुम्हारी। हमरी बचन लागे तुम्हें कारी।२४१।	सतनाम
सतनाम	भरत के राज हमें बहुत सुहाई। जाते तोहरो होय अधिकाई।२४२।	सतनाम	तब कैकई मन भय गयो रोसा। कोह भवन में बैठी गोसा।२४३।	सतनाम	अति विकराल परी तहँ तानी। आजु तिलक के करिहैं हानी।२४४।	सतनाम
सतनाम	होत प्रातः तिलक के साजा। बहुत आनन्दित बाजन बाजा।२४५।	सतनाम	पुहुप सुगन्ध रगरि अति नीका। आजु राम के देबइ टीका।२४६।	सतनाम	मुनि वशिष्ठ औ शिष्य समेता। राजा रानी मंगल हेता।२४७।	सतनाम
सतनाम	बोले राजा कैकई कहवाँ। रानी संग देखा नाहिं तहवाँ।२४८।	सतनाम	साखी - २१	सतनाम	करे कल्पना कोह घर, सब मिलि करहिं पुकारी।	सतनाम
सतनाम	कठिन राव विस्मय भई, चले तहाँ पगु ढारी।।	सतनाम	12	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तब गिरा मति दीन्हों फेरी। मंथरा भई अयश की ढेरी।२४६।	सतनाम	यह चरित्र केहु नहिं जाना। सिया न चाहें राज्य अपाना।२५०।	सतनाम	यह चरित्र सब करें भवानी। वेद लोक जेहि कहै बखानी।२५१।	सतनाम
सतनाम	अस्थिर इन्ह संग किमिकर राजू। उत्पति परले इनकै साजू।२५२।	सतनाम	कहें राजा सुन प्रान पियारी। कवन कष्ट उपजा तन भरी।२५३।	सतनाम	राजा प्रेम प्रीति से बोले। नयन खोलि तनिको नहिं डोले।२५४।	सतनाम
सतनाम	कर गहि राजा लीन्ह उठाई। बोली बचन कहै समुझाई।२५५।	सतनाम	हमके वर आगे तुम दीन्हा। अब अवसर एहि प्रन लीन्हा।२५६।	सतनाम	देहु वचन की छोड़हु करारा। जेहि तें पुरविल होहु निस्तारा।२५७।	सतनाम
सतनाम	भरत बुलाइ तिलक तिन्हें दीजै। सब विधि आनन्द मंगल कीजै।२५८।	सतनाम	रामहिं बन भरत कहँ राजा। सब विधि पूरन तोहरो काजा।२५९।	सतनाम	नहीं तो प्रान हम देब निकारी। करत आनन्द बदी करि डारी।२६०।	सतनाम
सतनाम	राजहिं सुनि हिया लागे कारी। परे मोह पुहुमी तन डारी।२६१।	सतनाम	राम जाहिं बन प्रान न रहई। देऊँ तिलक तो इहि दुःख दहई।२६२।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - २२	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	राजहिं मोह तन ग्रास्यो, परे विकल तन डारि।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	भयो कल्पना महल में, सब रानी रही निहारि॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सब मिलि गये रहे नृप जहवाँ। बोले वचन प्रीति करि तहवाँ।२६३।	सतनाम	राजहिं सुधि बुधि एकौ ना सूझै। कोइ यह कहै कवन यह बूझै।२६४।	सतनाम	सुमन्त मंत्री बोले विचारी। राजा विनती सुनो हमारी।२६५।	सतनाम
सतनाम	यज्ञ पवित्र तिलक के साजा। यह परिपंच कस भयो अकाजा।२६६।	सतनाम	मुनि वशिष्ठ पंडित अस भाखा। सुफल धरी तिलक रचि राखा।२६७।	सतनाम	जो राजा तुम कहौ समुझाई। सो मैं मुनि से कहौं बुझाई।२६८।	सतनाम
सतनाम	मुनि से जाय कहो समुझाई॥ विधि परपंच जानि नहिं जाई।२६९।	सतनाम	राम के बन भरत के राजा। सब विधि करते कीन्ह अकाजा।२७०।	सतनाम	कैकई यह परपंच जो कीन्हा। तनु से प्रान होत मोर भीना।२७१।	सतनाम
सतनाम	अब मोंपै कछु कहि नहिं गयऊ। अब बन राम अवश्य के भयऊ।२७२।	सतनाम	गये मंत्री जहाँ मुनि ज्ञाता। बोले जाय वचन विख्याता।२७३।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	13	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २३			
सतनाम			रामहिं बन यह दीजिए, रात भरत कहँ कीन्ह।		सतनाम	
			यही वचन नृप बोलत हैं, भयो दशा मति हीन॥			
			चौपाई			
सतनाम			मुनि वशिष्ठ तब कहबै लीन्हा। कसि राजा मति भै गै हीना।२७३।		सतनाम	
			कहाँ तिलक कहां बन कहि दीन्हा। यह परिपंच कुमति कर चीन्हा।२७५।			
सतनाम			तिरिया मंत्र राज नहिं नेती। ऐसे राज बुड़ दहुँ केती।२७६।		सतनाम	
			राम के लेइ मुनि नृप पहुँ गयऊ। देखि दशा किछु कहत ना अयऊ।२७७।			
सतनाम			राम कीन्ह तब मुनि के भेषा। जानत सकल सृष्टि सब पेखा।२७८।		सतनाम	
			रानी सब भई विकल दुखारी। कैकई देत सकल जग गारी।२७९।			
सतनाम			मनि महिं बरत सो गया बुझाई। भावी विपत्ति निकट चलि आई।२८०।		सतनाम	
			विधि परिपंच परा दुःख भारी। रोवहिं कौशल्या बहुत दुखारी।२८१।			
सतनाम			गये राम कौशल्या पासा। विनय कीन्ह वचन परगासा।२८२।		सतनाम	
			सीता दासी अहै तुम्हारी। सुनु माता यह वचन हमारी।२८३।			
सतनाम			हमके विधि बन लिखा बनाई। राज भरत कहँ दीन्ह थपाई।२८४।		सतनाम	
			रही मौन मुख आउ न बाता। रही निहारि राम मुख माता।२८५।			
			साखी - २४			
सतनाम			ठाढ़ भये कर जोरि कै, कहो मृदु वचन विचारि।		सतनाम	
			माता आज्ञा मोहिं दीजिये, चल्यो पन्थ पगु ढारि॥			
			चौपाई			
सतनाम			तब सीता अस बोलि विचारी। राम के संग हम सदा सुखारी।२८६।		सतनाम	
			हम नहिं रबह अवध यह पूरी। राम चरन पद पोंछब धूरी।२८७।			
सतनाम			अति तिरछन है बोली बानी। सरब रूप इमि आदि भवानी।२८८।		सतनाम	
			गये राम कैकई रही जहवाँ। कीन्ह प्रनाम वचन बोलु तहवाँ।२८९।			
सतनाम			ऐ माता मोहिं आज्ञा दीजै। कोह कल्पना कछु जनि कीजै।२९०।		सतनाम	
			कहे चाहे फिरि रहे संकोची। जैसे परधान आनहिं मोंची।२९१।			
सतनाम			करि परनाम चले श्रीरामा। गये तुरन्त सुमित्रा धामा।२९२।		सतनाम	
			कर जोरि विनय कीन्ह जो ठाढ़ी। उर से प्रेम प्रीति अति बाढ़ी।२९३।			
सतनाम			बोले राम शीतल मृदु बानी। कीन्हों बोध महा ब्रह्म ज्ञानी।२९४।		सतनाम	
			जीवन कंचित कंचन महँ राता। बोले राम सुमित्रा माता।२९५।			
सतनाम			करि परनाम प्रीति अति भयऊ। मानस ज्ञान सम्पूरन रहेऊ।२९६।		सतनाम	
			14			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २५			
सतनाम			पुत्र हेतु हुलसी फिरे,, लखन राम पद कजज। मोह विटप धरि भंजयो, अगम ज्ञान गति पुंज॥		सतनाम	
			छन्द - ४			
सतनाम			अति मोह कोह यह, सोग सागर तरक तरनी पावहीं। तिरगुन धारा तेज परबल, वार पार न पावहीं॥ अवध बूड़े भरमि भवन में, उलटी सोर लगावहीं। महामोह यह विविध बन भैयो, अनन्त मन जल छावहीं॥		सतनाम	
			खोरठा - ४			
सतनाम			रोदन करहि पुकारी, अवध विकल भयो राम बिनु। एक-एक परचारी,, कमल सुखा मानो जल बिनु॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			राम लषन सिया चले सम्हारी। काट्यो मोह फंद सब झारी।२६७। उलटि देखाहिं तो नगर अनाथा। आगे पगु दीन्हों रघुनाथा।२६८। कुछ दूरी लोग नगर के गयऊ। करि परनाम विदा तब भयऊ।२६९। मुनि वशिष्ठ के आश्रम ठाढ़े। करि परनाम प्रीति अति बाढ़े।३००। गुरु पद पंकज हृदय लगाई। करि परनाम चले रघुराई।३०१। आशीर्वाद मुनि बहुते दीन्हा। राम लषन माथा नय लीन्हा।३०२। चले तुरन्त विलम्ब ना लाई। राम लषन सीता चलि जाई।३०३। बिता दिवस रैन चलि आई। पुहुमी सेज्या कीन्ह बनाई।३०४। कन्द मूल फल कीन्ह अहारा। रजनी चलि भयो पंथ सुधारा।३०५। छोड़ा रथ बहल सब साजा। बिनु पनही को पाँव विराजा।३०६। होत प्रात मुख मंजन भयऊ। करि स्नान तिलक सिर दियऊ।३०७। सिया राम पद पंकज लीन्हा। चले तुरंत पुहुमि पगु दीन्हा।३०८।		सतनाम	
			साखी - २६			
सतनाम			आगे राम सिया बीच में, पीछे लषन कुमार। तीनो प्रान जग विदित है, जानत सब संसार॥		सतनाम	
			चौपाई॥			
सतनाम			राम लषन सिया बनके गयऊ। पिछे कथा अवधपुर अयऊ।३०९। करि विषाद सब कथा सुनाई। शयन कीन्ह तबहीं चलि जाई।३१०।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तुरे रथ तेजि चलि गयऊ। केहु काहू कै मर्म ना पयऊ।३११।	करहिं कल्पना नर औ नारी। सिया पुहुमि कैसे पगु ढारी।३१२।	राम लषन सिया बन गयो जबहीं। दशरथ प्रान त्यागल तबहीं।३१३।	वेगि दूत भरत पहुँ गयऊ। अवध कथा तुरन्त सुनयऊ।३१४।	कहैं दूत सुनि भरत कुमारा। चलहु तुरन्त अवध पगु ढारा।३१५।	दूत कै बदन मलीन मलाना। भरत सोच हृदय बीच आना।३१६।	आये अवध निकट नियराई। देखा विकल लोग सब जाई।३१७।
सतनाम	सुनि वृत्तान्त तहाँ पहुँच तुरन्ता। जहाँ बैठीं कौशल्या माता।३१८।	देखा विपत्ति विकल सब रानी। महा विषाद कल्पना सानी।३१९।	छुइके चरन किन्ह परनामा। शून्य भवन बिना श्री रामा।३२०।	तुरन्त गये कैकई के पासा। बोले जाय वचन परगासा।३२१।	तुम्हें जियेका का जग कामा। बनहिं पठायो सो श्री रामा।३२२।	बैठि रही सब राज सधारी। तुम सब सहियो जग के गारी।३२३।	मंथरहीं बहुत त्रास दिखाई। लघु वचन सुनि रही छिपाई।३२४।
सतनाम	साखी - २७						
सतनाम	किन्हों दाह करम सब, मुनि पंडित सब लोग। बहुरि भवन में बैठिकै, बिरह विषाद वियोग॥						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	किन्ह श्राद्ध दिन्ह जब पूजा। विप्र खियाय कुटुम्ब औ दूजा।३२५।	वाशिष्ठ ऋषि मुनि मंत्र विचार। मंत्री सुमंत सकल परिवारा।३२६।	भरत के किजै तिलक कर साजू। करहिं आनन्द अवधपुर राजू।३२७।	जाते नगर दुखित नहिं होई। परजा जन सुखद सब कोई।३२८।	भरत कहहिं सुनो मुनि ज्ञाता। हमके तिलक ना लिखें विधाता।३२९।	यह अपराध परा मोहिं हाथा। ताते संग ना लीन्ह रघुनाथा।३३०।	हम नहिं चाहहीं राज सुखधामा॥ बनके पठायो सो श्रीरामा।३३१।
सतनाम	यह कुयोग राज ना भावै। विधि का लिखा सोई फल पावै।३३२।	हंसहिं लोग कैकई तन लाजा। नृप के मारि तिलक के साजा।३३३।	राम विपत्ति सुनि व्याकुल होवै। ज्यों मनि काढ़ि भुवंगम खोवै।३३४।	निकले प्रान बलु तनकहँ त्यागै। राज काज एहि सब दुःख भागै।३३५।			

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २८			
सतनाम			मैं किंकर निजु दास हौं, त्यागे सकल सुख भोग। कहें भरत मनसा वाचा, मैं ममराज ना योग॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			आगे कथा प्रयागपुर गयऊ। सर्व तीरथ पद पंकज गहेऊ।३३६।		सतनाम	
			भरद्वाज मुनि मन्दिर जहवाँ। रामलषन सीता पहुँचे ताहवाँ।३३७।			
सतनाम			करि प्रणाम मुनि आशीष दीन्हा। आदर बहुत भाँति विधि कीन्हा।३३८।		सतनाम	
			आपन कुशल कहो श्रीरामा। कहो न कुशल अवधपुर धामा।३३९।			
सतनाम			कहो नृप कुशल कोशिला रानी। गदगद बचन बोले मृदु बानी।३४०।		सतनाम	
			पिता बचन मम बन पगु दीन्हा। विधि कर लिखा सोई फल लीन्हा।३४१।			
सतनाम			दशरथ प्रान त्यागनि कीन्हा। अवध अँवटि जैसे जल बिनु मीना।३४२।		सतनाम	
			सोचत ऋषि मुनि बहुत विचारी। रामलषन सिया जनक कुमारी।३४३।			
सतनाम			सीतहिं राखा जहाँ चित्र सारी॥ सकल समाज जहां मुनि की नारी।३४४।		सतनाम	
			अति विचित्र शोभा अधिकारी। धन वो पुरुष जाकर तुम नारी।३४५।			
सतनाम			अति कोमल पुहुमी पगु ढारी। जो विधि लिखा सो कछु नहिं भारी।३४६।		सतनाम	
			रच्यो विरंचि चित्र बहु भाँती। सोई सोहागिनी पिया रंग राती।३४७।			
सतनाम			कन्द मूल सब मेवा मँगाई। छुछुम परसाद राम सिया पाई।३४८।		सतनाम	
			विगती विगति मुनि कथा विचारी। भक्ति ज्ञान दुरमति दूरि डारी।३४९।			
			साखी - २९			
सतनाम			उठि प्रात सुरसरि तीर, मंजन कीन्ह बनाए।		सतनाम	
			मुनि पद पंकज गहि के, आशीष वचन सुहाए॥			
सतनाम			राम लषन बिच सीता सोहै। माया रुप जगत सब मोहै।३५०।		सतनाम	
			जीव सीव बिच शक्ति विराजे। हीरा मध्य कनक जनु छाजे।३५१।			
सतनाम			उभय बीच एक सलिता अहई। माया रूप छवि इमि कर कहई।३५२।		सतनाम	
			संशय सागर जात ओराई। जीव सीव एक ठौर दिखाई।३५३।			
सतनाम			जग जननी जानै सब कोई। सो बसि कैसे का करि होई।३५४।		सतनाम	
			सोई जनक गृह प्रगटे आई। गैव रूप कोई अन्त ना पाई।३५५।			
सतनाम			अति कोमल सुन्दर छवि छाई। चली पुहुमि पगु रेप न लाई।३५६।		सतनाम	
			ताकर कवि किमि करहु बखाना। दृष्टि सृष्टि माया परधाना।३५७।			
			17			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	विटप जाए निकट नियरायां। जहाँ महामुनि मन्दिर छाया।३५८।	सतनाम	देखि दरस मुनि हर्षित भयऊ। कीन्ह प्रनाम मुनि आशीष दियऊ।३५९।	सतनाम	बोले मुनि सुनो राजकुमारा। किमि कारन कानन पगु ढारा।३६०।	सतनाम
सतनाम	पिता वचन बन लिख्यो विधाता। कहें राम सुनो मुनि ज्ञाता।३६१।	सतनाम	वित्ति विहित सब कथा सुनाई। जो कछु अवध बीता प्रभुताई।३६२।	सतनाम	कहो मुनि कहाँ हम आश्रम कीजै। वचन तोहार तहाँ थै दीजै।३६३।	सतनाम
सतनाम	कुम्भज ऋषि मुनि बोले विचारी। जल थल सकल है सुष्टि तुम्हारी।३६४।	सतनाम	कहाँ नहीं तुम जहाँ मैं कहहू। हृदय कमल मध्य बीच रहहू।३६५।	सतनाम	राम विचारी प्रेम रस राता। मुनि है विमल महा मुनि ज्ञाता।३६६।	सतनाम
सतनाम	कोल किरात भील सब धाये। पत्र कुटी तहाँ बहु विधि छाये।३६७।	सतनाम	कन्दमूल कोड़ि कीन्ह मेहमानी। कीन्ह प्रसाद सब तत्व बखानी।३६८।	सतनाम	मुनि सब कथा। कहहिं बहु भाँती। इमि करि वितेउ दिवस और राती।३६९।	सतनाम
सतनाम	साखी - ३०	सतनाम	करहिं तपस्या विटप में, महा कठिन कवलेश।	सतनाम	पहुमी पत्र बिछावहीं, सीता राम नरेश॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	पीछे कथा जनकपुर गयऊ। सोग मोह दुःखा दारुन भयऊ।३७०।	सतनाम	गये जनक जहाँ भवन निवासा। रानिन्ह कीन्ह वचन परगासा।३७१।	सतनाम
सतनाम	राम लषन बन विपत्ति वियोगा। बन खण्ड जाय कीन्ह तप योगा।३७२।	सतनाम	सकल समाज मिलि चलयो तुरन्ता। अब विलम्ब किमि कारन कन्ता।३७३।	सतनाम	सीता राम दरश बिनु देखौ। नयनन नींद पलक नहिं पेखौ।३७४।	सतनाम
सतनाम	कहें जनक सुनि तिरिया सुभागी। प्रातः उठि चलब पंथ लागी।३७५।	सतनाम	बीता दिवस रइन चलि अयऊ। रंथ बहल सब साजत भयऊ।३७६।	सतनाम	सैन समेत नगर के लोगा। चले हरषि तेजि विपत्ति वियोगा।३७७।	सतनाम
सतनाम	एक-एक घर राखा रखवारा। नारी पुरुष मिलि पंथ सुधारा।३७८।	सतनाम	जाइ अवध निकट नियराई। कटक जहाँ तहाँ बैठी जाई।३७९।	सतनाम	भारत शत्रुधन सैन समेता। देखा जनक प्रेम निजु हेता।३८०।	सतनाम
सतनाम	अंक भरि भरि मिले बनाई। गदगद सकल शरीर देखाई।३८१।	सतनाम	साखी - ३१	सतनाम	सैन सभै करुना अति, प्रेम ना रहा समाये।	सतनाम
सतनाम	एक-एक बदन निहारही, नयन रहा जल छाये॥	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	ऋषि तब मंत्र कहा समुझाई। चल्यो सभे मिलि जहाँ रघुराई।३८२।	सतनाम	आवहिं भवन तो फेरि लिआई। नाहीं त दरश महा फल पाई।३८३।	सतनाम	उठिके भरत भवन महुँ गयऊ। कौशल्या से अर्थ सुनयऊ।३८४।	सतनाम
सतनाम	अब रानी सब सखिन समेता। सबसे अर्थ कहा निजु हेता।३८५।	सतनाम	सुनत प्रेम निजु हृदये जागा। चक्षु विहुन देखनु जनु लागा।३८६।	सतनाम	सब रानी सुनि भई अनन्दा। मानो उग्यो शरद जनु चन्दा।३८७।	सतनाम
सतनाम	तेहि दिन नयन नींद नहिं आवै। राम चरन निजु हृदये भावै।३८८।	सतनाम	कब होए प्रात चलब पंथ लागी। इमिकर नयन नींद सब त्यागी।३८९।	सतनाम	उदित दिवाकर जबहीं भयऊ। रंथ बहल सब साजत भयऊ।३९०।	सतनाम
सतनाम	नगर लोग सुनि भया सनाथा। दरसन जाय देखब रघुनाथा।३९१।	सतनाम	चले सभनि मिलि पंथ विचारी। रानिन्ह संग सहेली झारी।३९२।	सतनाम	गये प्रयाग जहां तीरथ विराजै। गंगा, यमुना रसस्वती छाजै।३९३।	सतनाम
सतनाम	सकल समाज मुनि बैठे धामा। मुनि से भेंट कीन्ह परनामा।३९४।	सतनाम	मुनि सब कथा कहा विश्रामा। रनजी एक रहा श्री रामा।३९५।	सतनाम	करि प्रदक्षिन जो चले तुरन्ता। सुरसरि तीर जहां एक अंता।३९६।	सतनाम
सतनाम	मंजन करहिं परम गुरु ज्ञाना। पाठ पुरान भगति भगवाना।३९७।	सतनाम	पाक बनाय कीन्ह एक अंता। करि परसाद जो चले तुरन्ता।३९८।	सतनाम	निशु वासर में पहुंचे जाई। निकट विकट वन जाय नियराई।३९९।	सतनाम
सतनाम	कोल किरात भील सब भाजै। नृप आवत कोऊ दल साजै।४००।	सतनाम	मृग पक्षी भागे सब ओरा। टूटत फूटत बन भैग्यो सोरा।४०१।	सतनाम	सुना श्रवण भरत चलि आये। लषन कोपि कर धनुष चढ़ाये।४०२।	सतनाम
सतनाम	इन्ह से समर करब हम आजू। किमि कारण आवत दल साजू।४०३।	सतनाम	राम कहा लषन तुम ज्ञाता। भरत न होय मोह भ्रम राता।४०४।	सतनाम	भरत ना होहिं गरब उर गामी। गुरुपद पंकज भक्ति निजु स्वामी।४०५।	सतनाम
सतनाम	यह जग माँह कौन अस जन्मा। राज काज मद जो नहिं भरमा।४०६।	सतनाम	राम कहा अवरु जग कोऊ। भरत ना होहिं राज मद सोऊ।४०७।	सतनाम	भरत परे गहि राम के चरना। उपजा प्रेम भगति निजु बरना।४०८।	सतनाम
सतनाम	लषन क्रोध क्षेमा भय गयऊ। कर से धनुष जिमि पर धरेउ।४०९।	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
लषन	भरत	मिले	बहु	भाँती।	उपजे	प्रेम नयन चहुँ पाँती।४१०।
गुरु	पद	पंकज	गहेऊ	सुभागा।	ज्यों	जल कमल भंवर रस पागा।४११।
जनक	शत्रुधन	मंत्री	साथा।	सबसे	प्रेम कीन्ह	रघुनाथा।४१२।
				साखी - ३२		
				राम चरन पद पंकज,	गहि लीन्हों	सिर नाये।
				कटक जहाँ	तहाँ बैठि	के, भोजन भाव बनाये॥
				चौपाई		
सीता	गई	जहाँ	रनिवासा।	सासु	चरन पद पंकज	पासा।४१३।
बहुत	विलाप	करि	मिले सोई।	कीन्ह	विषाद सब	गदगद होई।४१४।
कौशल्या	कैकई	सुमित्रा	रोई।	बहुत	विषाद कल्पना	होई।४१५।
सीते	बोधि	विवध	समुझाई।	दृढ़	होय ज्ञान राम	पद पाई।४१६।
विधि	कर	लिखा	मेटि किमि जाई।	के	तेहि मेटि	करे अधिकाई।४१७।
किन्हो	विवेक	ज्ञान	अति नीका।	राम	चरन पद पंकज	टीका।४१८।
गई	तुरन्त	मातु	जहँ पीता।	मिले	हृदय रोदन	करि सीता।४१९।
हमहिं	विरंचि	बन	लिखा बनाई।	सेवन	बन खण्ड कन्द मूल	खाई।४२०।
सीता	सती	सदा	सज्ञानी।	बोली	प्रेम मधुर रस	बानी।४२१।
हमके	दुःख	सुख	कछु नहिं माता।	राम	चरन पद पंकज	राता।४२२।
प्रेम	प्रीती	फूल	सींचु बनाई।	ताके	धूप कहाँ	अधिकाई।४२३।
				साखी - ३३		
				ब्रह्मा बुद्धि बाँकी	बड़ी,	सियाफेन को फूल।
				ताहि कराल	टाँकी	दियो, लिखो विरंचि बेतूल॥
				चौपाई		
राम	दरस	सब	नित नित करई।	चरन	कमल पद पंकज	गहई।४२४।
विनय	जो	कीन्ह	दुनो कर जोरी।	चलहु	ना बहुरि वचन	सुनु मोरी।४२५।
आयहु	कानन	सभ	फल नीका।	तुम	हो राज मंदिल	मनि टीका।४२६।
मातु	पिता	गुरु	आज्ञा पाले।	सदा	सुखी दुख	कबहूँ ना साले।४२७।
पिता	बचन	मोहिं	होय न आना।	बरस	द्वादश यह	प्रन ठाना।४२८।
किछु	दिन	बीतै	बिदा तब कीन्हा।	राम	बोध सब के	कर लीन्हा।४२९।
जनक	बोले	बहुते	हितकारी।	तुमके	सौं पेउ	राजकुमारी।४३०।
राम	प्राण	मोर	सिया दुलारी।	विधि	परिपंच फंद	यह डारी।४३१।
				20		
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मोह छोह माया मद भारी। ज्ञान बिना नर सदा दुखारी।४३२।	सतनाम	बिना विवके भरम जग साजां। कहें राम सुनो ऋषि राजा।४३३।	सतनाम	करहु ना भरत अवधपुर राजू। आनंद मंगल सदा समाजू।४३४।	सतनाम
सतनाम	हम नहिं चाहहिं राज सुख धामा। निशि दिन सुमिरहिं सो श्रीरामा।४३५।	सतनाम	राम चरन पद पंकज टीका। राज काज मोहिं लागत फीका।४३६।	सतनाम	कोसिला केकई सीमित्रा रानी। बोले प्रेम वचन भिदु बानी।४३७।	सतनाम
सतनाम	कीन्ह प्रनाम मातु सिर नाई। सबसे विनय कीन्ह रघुनाई।४३८।	सतनाम	सासु के निकट कीन्ह परनामा। विरह विषाद देखा श्रीरामा।४३९।	सतनाम	सबसे बोले बिमल निजु बानी। मोह भव दूरि ज्ञान मत ठानी।४४०।	सतनाम
सतनाम	गुरु से विनय कीन्ह कर जोरी। सदा दयाल अल्प मति मोरी।४४१।	सतनाम	साखी - ३४	सतनाम	गुरु पद पंकज प्रेम रस, गहो चरन सिर नाये।	सतनाम
सतनाम	विदा कीन्ह एहि भाँति से, राम लषन समुझाये॥	सतनाम	छन्द - ५	सतनाम	चले सो सकल समाज समन्हि मिलि, उलटि उलटि के हेरहीं॥	सतनाम
सतनाम	अति भयो विरह व्याकुल तन में, सुधि बुधि सब बिसरावहीं॥	सतनाम	राम चरन पद पंकज झलकत, लोचन ललचि लगावहीं॥	सतनाम	रहि रहि प्रान कठिन तन व्याकुल, फनि मनि ज्यों बिसरावहीं॥	सतनाम
सतनाम	सोरठा - ५	सतनाम	चले सो पंथ विचारी, धृग जीवन जग राम बिनु।	सतनाम	फेरि फेरि रहै निहारी, कब मिलिहैं मोहिं प्रान पति॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	चले सो बेगि विलम्ब ना लाया। किछु दिन आय निकट निराया।४४२।	सतनाम	अपने गृह गृह पहुँचे लोगा। भरत जाई कीन्ह तप योगा।४४३।	सतनाम
सतनाम	जनक ऋषि गृह पहुँच तुरन्ता। निशि दिन भजन करहिं भगवंता।४४४।	सतनाम	इमि करि पाछे बहुत भुलाना। जिन्हि नहिं सतगुरु पद पहचाना।४४५।	सतनाम	माया ब्रह्म चीन्हे नहिं कोई। बिना ज्ञान माया बसि होई।४४६।	सतनाम
सतनाम	तिरगुन माया फंद अनन्ता। थाकै सो ब्रह्मा वेद भनन्ता।४४७।	सतनाम	सिन्धु अगम जल नजरि न आवै। बिनु तरनी कोई पार ना पावै।४४८।	सतनाम	ग्रन्थ सोचि मुनि भरम भुलाना। मिले ना सतगुरु निर्मल ज्ञाना।४४९।	सतनाम
सतनाम	21	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	तरनी तेजि जल पैठे कैसे । महा मूढ़ भवकूप परु जैसे ।४५०।	सतनाम	केहरि प्रतिमा देख्यो भारी । झपटि परा तन प्रान बिसारी ।४५१।	सतनाम	काँच महल में स्वान जो पैठा । भूँकि भवन में प्रतिमा ऐंठा ।४५२।	सतनाम	फिटिक सिलागज दशनन्हि अरई । टूटि गयो मुंह उलटि जिमि परई ।४५३।
सतनाम	ऐसे वेद भरम भव राखा । सतगुरु ज्ञान समुक्षि निजु भाषा ।४५४।	सतनाम	गुरु पद पंकज तेजु अनल अनीपा । नाम विमल निधि प्रेम सनीपा ।४५५।	सतनाम	नाम है नौका काढि नग देखो । सत्तगुरु ज्ञान प्रेम रस पेखो ।४५६।	सतनाम	साखी- ३५
सतनाम	कहें दरिया निज सार है, सत्तगुरु वचन प्रवीन ।	सतनाम	तेजै भरम विमल पद पावै, विक्ति-विक्ति करु भीन ॥	सतनाम	चौपाई ॥	सतनाम	तुम ज्ञानी हो सतगुरु दाता । अगम निगम कह्यो निजु बाता ।४५७।
सतनाम	जो कछु सुन्यो सभै निक लागा । मेटि गयो तम भरम भव भागा ।४५८।	सतनाम	सुर नर मुनि सब भरम भुलाना । तुम किमि कर यह पद पहिचाना ।४५९।	सतनाम	सत्य कहों लिखि कागज कोरे । सत्तपुरुष आये गृह मोर ।४६०।	सतनाम	जीवन मुक्ति जिन्द जग मूला । दरशन देखि मेंटा यमशूला ।४६१।
सतनाम	निजु निजु कथा कहो सत्तबानी । सुकृत चीन्हा सो निर्मल ज्ञानी ।४६२।	सतनाम	माया ज्ञान औ भक्ति विरागा । दया कीन्हा प्रेम निजु पागा ।४६३।	सतनाम	आदि भवानी कन्या अहई । सोई सीता सती यह कहई ।४६४।	सतनाम	माया चरित्र चीन्है नहिं कोई । पंडित पढ़ि कै चले बिगोई ।४६५।
सतनाम	यंत्र मंत्र मोह मद डारी । ब्रह्मा विष्णु हारै त्रिपुरारी ।४६६।	सतनाम	जाके वेद निरंजन कहई । वार-वार अंजन में रहई ।४६७।	सतनाम	सोई राम है कृष्ण कन्हई । दास अवतार धरि जग मह आई ।४६८।	सतनाम	बूझौ ज्ञानी करहु विवेखा । यह तिरगुन माया कर रेखा ।४६९।
सतनाम	साखी - ३६	सतनाम	जिन्दा जीवहिं में, अब सब खपे निदान ।	सतनाम	आदि पुरुष वोय अमर हैं, देखहु निर्मल ज्ञान ॥	सतनाम	चौपाई
सतनाम	कवि आखर करि बहुत बखाना । पढ़े जगत में विदित परधाना ।४७०।	सतनाम	पंडित पढ़ि-पढ़ि वेद पुराना । मिले न घृत मधु छाँछि बखाना ।४७१।	सतनाम		सतनाम	

22

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	हरि कीरति करि पंथ चलाई। परे भवन में भरम न जाई।४७२।	सतनाम	चीन्हो ना ज्ञान माया कर रूपा। फिरे फिरंग सकल सब भूपा।४७३।	सतनाम	माया अनल है विषम बेकारा। परे पतंग सकल तन जारा।४७४।	सतनाम	थाके कवि सब कहि कठि बरनी। मिले न भवजल सत्त के तरनी।४७५।
सतनाम	सत्त वचन प्रेम निजु राता। सुनहु मुनि जन जन पंडित ज्ञाता।४७६।	सतनाम	सुर नर माते नाम बिहूना। अवटि मूवै ज्यों जल बिनु मीना।४७७।	सतनाम	पाखण्ड कर्म ज्ञान नहिं जाना। तीरथ बरत में जाई लपटाना।४७८।	सतनाम	मन बाँधे जहाँ तहाँ ले जाई। कष्ट कल्पना बड़ दुख पाई।४७९।
सतनाम	निरगुन आदि निरंजन लावै। बहुरि बहुरि भवसागर आवै।४८०।	सतनाम	तप साधो को का फल पावै। तप के साथ रसातल जावै।४८१।	सतनाम	तप से मिले राज औ काजा। फेरि फेरि अवगुन होत अकाजा।४८२।	सतनाम	काया असाधि साधि नहिं जाई। आठो जाम चले सो धाई।४८३।
सतनाम	सो ताकर तन भय गयो छीना। उलटि काल तेहि कीन्ह मलीना।४८४।	सतनाम	पवन भक्षौ सो होई भुवंगा। करहिं योग मलया के संग।४८५।	सतनाम	फिरि फिरि योइनि संकट में परई। आतम ज्ञान होय तब तरई।४८६।	सतनाम	एक दृष्टि निजु देखो अमाना। मिले प्रेम पद सत्तगुरु ज्ञाना।४८७।
सतनाम	साखी - ३७						
सतनाम	सत्त उपदेश यह कहत हौ, बूझो विवेक विचारि।						
सतनाम	अमर लोक के जाइहो, सकल भरम सभ डारि।।						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	अति जो गर्व करे नर लोई। निश्च गरब गर्द महं होई।४८८।	सतनाम	संत द्रोह है करम बेकारा। कष्ट नष्ट होय यम के द्वारा।४८९।	सतनाम	आगे कथा दण्डक बन गयऊ। राम लषण सीता जहाँ रहेऊ।४९०।	सतनाम	तपसी एक तपस्या करई। धोखे लषन ताहि कहँ मरई।४९१।
सतनाम	सुर्पनखा के पुत्र प्यारा। प्रान छूटा पुहुमि तन डारा।४९२।	सतनाम	आये लषन जहाँ रघुराई। तपसी मारि बहुत पछताई।४९३।	सतनाम	यह निश्चर लंका महँ रहई। यह मारे कछु पाप ना लहई।४९४।	सतनाम	मारहु दैत्य पुण्य परतापू। कबहिं ना व्यापिहें याकर पापू।४९५।
सतनाम	निगम नेति सदा गुहरावै। दैत्यनि मारि महा फल पावै।४९६।	सतनाम	रावन बहिनी है सुर्पनखा। करि शृंगार वोय छल बल पेखा।४९७।	सतनाम		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	

23

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	चंचल चपल चहु दिशि हेरे। पत्र कुटी के चहुँ दिशि घेरे।४६८।	सतनाम	तुंह तपसी हो तप जो कीन्हा। तोहरो चरण पद पंकज लीन्हा।४६९।	सतनाम	आजु के रइनि रहब तुम पासा। तुम दर्शन है प्रेम सुबासा।५००।	सतनाम
सतनाम	राम चीन्हा निशाचर नारी। छल बल वचन जो बोले बिचारी।५०१।	सतनाम	पकरि नाक कान धरि काटा। लंकापुर के पकरिसि बाटा।५०२।	सतनाम	रावण आगे रोइ पुकारी। दुई तपसी हैं एक है नारी।५०३।	सतनाम
सतनाम	पूछत बचन जो बोलि निराटा। वही नाक कान मोर काटा।५०४।	सतनाम	खर दूखन सुनि लागु गोहारी। मारि कटक पुहुभी तन डारी।५०५।	सतनाम	साखी - ३८	सतनाम
सतनाम	मारा खरदूषन कहँ, महा महा भट वीर।	सतनाम	को समर जग जीति हैं, राम लषन रणधीर॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	फिर आये जहाँ भवन निवासा। राम लषन सिया बैठे पासा।५०६।	सतनाम	तब वै ऐसन कीन्ह उपाई। मारिच मृगा रूप बनाई।५०७।	सतनाम	चंचल चपल रहे नहिं थीरा। फुलवारी में चहुँ दिशि फीरा।५०८।	सतनाम
सतनाम	कनक रूप है कठिन कठोरा। देखा राम जो धनुष टंकोरा।५०९।	सतनाम	फेरि फेरि रहत अलोप लुकाई। फेरि फेरि परघट देत देखाई।५१०।	सतनाम	रामचन्द्र चलि गये निराटा। कोह काफ जहाँ बन कैठाटा।५११।	सतनाम
सतनाम	सिया के मन में संशय होई। अति चरित्र लखि सकै ना कोई।५१२।	सतनाम	यह माया सब प्रभुता करई। भरम भीति कहु कैसे टरई।५१३।	सतनाम	सिया विषाद कथि बहुत उदासा। लषन जाहु राम के पासा।५१४।	सतनाम
सतनाम	मृगा मारि नाहिं फिरे भुआरा। कोह काफ है विटप बेकारा।५१५।	सतनाम	कहैं लषन मोहिं संशय भारी। हमके छाड़ि गये रखवारी।५१६।	सतनाम	यहाँ रहों सीता दुख माना। सोचहिं बुद्धि विचारहिं ज्ञाना।५१७।	सतनाम
सतनाम	सत्त का रेखा खौंचु बनाई। सिया के सौंप चले सिर नाई।५१८।	सतनाम	सत्त का रेखा बैटु बिचारी। बाहर पाँव तनिक नहिं डारी।५१९।	सतनाम	लक्षुमन रामचन्द्र के पासा। निश्चर छल बल कीन्ह तमाशा।५२०।	सतनाम
सतनाम	साखी- ३९	सतनाम	राज काज मद रावना, भलि मति गई भुलाये।	सतनाम	सीता सती समुद्र सम, परे लहर में आये॥	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तीन लोक महिं मंडल माया। सिया सकल गुन प्रकट दिखाया।५२१।	सतनाम	मन माया कर ऐसन कामा। तामे परे लषन श्रीरामा।५२२।	सतनाम	तिर्गुन तीन ताहि है रंगा। बुद्धि विवेक और काम अनंगा।५२३।	सतनाम
सतनाम	संकल्प विकल्प भावी साथा। ज्ञान विराग जन विरला हाथा।५२४।	सतनाम	दोनों पाखंड भेष जो कीन्हा। आश्रित वचन सीता की दीन्हा।५२५।	सतनाम	भिक्षा भोजन हम कंह दीजै। कंद मूल फल आगे कीजै।५२६।	सतनाम
सतनाम	पगु बाहर और भीतर करई। रेखा टारि बाहर है चलई।५२७।	सतनाम	रावन राज सब चाहे विध्वंसा। अनंत रूप होए डारिसी फाँसा।५२८।	सतनाम	बाहर पाँव जवै उन्हि दीन्हा। तब रावन सीता हरि लीन्हा।५२९।	सतनाम
सतनाम	कर धरि रथ पर लीन्हा चढ़ाई। चला तुरन्त लंकापुर जाई।५३०।	सतनाम	सीते राम राम गोहरावा। भक्त जटायू सुनिकै धावा।५३१।	सतनाम	चोचनि मारि उन्हें कीन्ह लड़ाई। अग्निवान से पंख जरि जाई।५३२।	सतनाम
सतनाम	लंकापति लंका के गयऊ। पलटी राम गृह खोजत भयऊ।५३३।	सतनाम	पत्र कुटी देखा सून बेसूना। चहुं ओर खोजहिं कल्पना दूना।५३४।	सतनाम	छन्द - ६	सतनाम
सतनाम	खोजि खोजि तन थकित मन भयो, सिया सनेस न पावहीं।	सतनाम	ब्रह्मंड खंड सब विविध वाके, कठिन कल्पना आवहीं॥	सतनाम	मोह कोह सब संशय सागर, शीष धुनि पछतावहीं।	सतनाम
सतनाम	रैनि बीत्यो सोचत ऐसे, उलटि बासर आवहिं॥	सतनाम	खोरठा - ६	सतनाम	खोजवो बन खंड झारी, मीजि मीजि कर पछतावहीं।	सतनाम
सतनाम	हरयो निशाचर नारी, दशकन्धर सिर काटि हों।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	चले प्रात उठि दोनों भाई। खोजत वन खंड जहां तहां जाई।५३५।	सतनाम
सतनाम	सुग्रीव देखा द्वि तन आवै। की बाली के दूत अवरि कोई जावै।५३६।	सतनाम	जाहु पवन सुत करहि विचारा। निरखि नीके होय करहु सुधारा।५३७।	सतनाम	विप्र रूप मिले हनुमाना। कर जोरि वचन पूछहिं परधाना।५३८।	सतनाम
सतनाम	की तुम देव देवन में वीरा। अति कोमल पद सुन्दर शरीरा।५३९।	सतनाम	कहो वृत्तांत सब कथा सुनाई। बन खंड फिरहु कवन प्रभुताई।५४०।	सतनाम	25	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	महा विकट बन किमि कर रहहू। कहहु ना सत्त वचन जनि गोवहू।५४१।	सतनाम	मैं अधीन हों तुम गुनलायक। जो कछु पूछेऊँ कहो सब सायक।५४२।	सतनाम	नगर अयोध्या दशरथ राई। ताको सुत हम दोनों भाई।५४३।	सतनाम
सतनाम	पिता वचन हम वन तप कीन्हा। सुनो विप्र यह वचन प्रवीना।५४४।	सतनाम	हरूयो निशाचर मम प्रिय नारी। सो हम बन खंड खोजत झारी।५४५।	सतनाम	महा मोह मद सदा अज्ञाना। अब निश्चय प्रभु पद पहचाना।५४६।	सतनाम
सतनाम	रखो अनाथ मोहिं कियो सनाथा। धन्य धन्य दशरथ तुव रघुनाथा।५४७।	सतनाम	तुम कृपा सिंधु हो मैं कपिराई। चरन कमल पद पंकज पाई।५४८।	सतनाम	अति प्रेम सुखसागर भयऊ। प्रबल पाप दुरमति दूरि बहेऊ।५४९।	सतनाम
सतनाम	मैं तुम दास पास निजु राता। शीतल सुगंध शरीर सुपाता।५५०।	सतनाम	अहै सुग्रीव निज दास तुम्हारा। ताके कटक मरकट अधिकारा।५५१।	सतनाम	सीता खोज वह तुरन्त कराई। जहां तहां मरकट वेगि पठाई।५५२।	सतनाम
सतनाम	चलै तुरन्त लीन्ह पंथ चढ़ाई। जहां गिरि कन्दर रहा छिपाई।५५३।	सतनाम	कहा सम्वाद सुग्रीव से जाई। घर बैठे तुव दर्शन पाई।५५४।	सतनाम	दशरथ तनय राम रघुराई। जाके वेद लोक सब गाई।५५५।	सतनाम
सतनाम	फेरि फेरि चरन कमल पर लोटा। बाढ़ी प्रीति मन भय गयो छोटा।५५६।	सतनाम	मन की संशय दूरि सब गयऊ। राम दरश पद पंकज पयऊ।५५७।	सतनाम	साखी - ४०	सतनाम
सतनाम	पानि जोरि करि मीनती, महा दरश फल पाये।	सतनाम	गर्व भंजन अधमोचन, सो प्रभु भये सहाये॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	बालि बन्धु है निपट नकारा। हरूयो मम तिरिया कपट से वारा।५५८।	सतनाम	कीन्हों समर सैन सब साथा। वाकी मृत्यु है त्रिभुवन हाथा।५५९।	सतनाम	यह निजु बैर आज जो पावो। कोटि कटक तुंव संग चलाओ।५६०।	सतनाम
सतनाम	गिरि कंदर से बाहर भयऊ। सुनत श्रवन कोपि के धयऊ।५६१।	सतनाम	भीरे भूमि पर टरत न टारी। एक-एक योद्धा महाबल भारी।५६२।	सतनाम	फिरि वै भीरा जुदा है ठाढ़ा। कठिन निषंग बान सर काढ़ा।५६३।	सतनाम
सतनाम	मारा राम बान उर लागा। मुरछि गिरा बहुर फिर जागा।५६४।	सतनाम	धरम रूप निगम कहे कैसे। मारहु मोहिं व्याधा सर जैसे।५६५।	सतनाम	मैं बेरी सुग्रीव हितकारी। कारण कवन मोहिं तुम मारी।५६६।	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कन्या चारि पकट जग अहई। शास्त्र वेद ज्ञान मत कहई।५६७।	सतनाम	इन्ह संग कुमति करै नर कोई। ताहि हते कछु पाप ना होई।५६८।	सतनाम	एतना सुनी तन त्यागसि प्राना। सुग्रीव राम चरन लपटाना।५६९।	सतनाम
सतनाम	साखी - ४१	सतनाम	धर्यो चरन पद पंकज, मेटा सकल तन पीर।	सतनाम	हम जाये सैन बटोरब, कानन टीकु रघुवीर॥	सतनाम
सतनाम	छन्द - ७	सतनाम	बरषा विविध प्रगाश पवन, अति गरजि गरजि घहरावहीं।	सतनाम	मोर शोर अति झींगुर झनकत, गिरि चढ़ि गिरा सुनावहीं॥	सतनाम
सतनाम	विकट वन तहाँ सिपट भालु कपि, विरह अनल तनु छावहीं।	सतनाम	एहि भांति बीत्यो जानकी बिनु, नैन नींद न आवहीं॥	सतनाम	खोरठा - ७	सतनाम
सतनाम	भरत के सोच बड़ी तन पीर, विपत्ति वियोग बेकार अति।	सतनाम	दुःख दारुन रघुवीर, धृग जीवन संसार मति॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	थाके सो नीर थीर सब भयऊ। सुमन सुगंध छोड़ि घर गयऊ।५७०।	सतनाम	चले पथिक शरद दिन अयऊ। राम लषन गिरि पर चढ़ि गयऊ।५७१।	सतनाम	सुग्रीव पंथ निहारहिं नीका। सुनि पवन सुत आगे टीका।५७२।	सतनाम
सतनाम	चले तुरन्त तब दुनों भाई। जहाँ सुग्रीव कै नगर सुहाई।५७३।	सतनाम	सुग्रीव देखा आये रघुनाथा। कर जोरि निकट नाये निजु माथा।५७४।	सतनाम	आये पवन सुत पायन परेऊ। देखत राम मोद मन भरेऊ।५७५।	सतनाम
सतनाम	सकल कटक मिलि कीन्ह प्रनामा। धन्य-धन्य दरशन तुम श्री रामा।५७६।	सतनाम	मंत्री मंत्र कीन्ह अस भाऊ। सुनो सभनि मिलि वचन प्रभाऊ।५७७।	सतनाम	चल्यो तुरन्त सब सायर तीरा। सैन समाज सबै बल वीरा।५७८।	सतनाम
सतनाम	राम लषन सुग्रीव कपिराई। महा वीर भट कटक दिखाई।५७९।	सतनाम	सो निजु अर्थ सबों ठहराई। मंत्र कीन्ह जामवन्त कहं जाई।५८०।	सतनाम	लंकापुर जाहु वीर हलिवन्ता। सिया सनेस ले आउ तुरन्ता।५८१।	सतनाम
सतनाम	लेहु पानतुम करहु पयाना। दशकन्धर के मरदहु माना।५८२।	सतनाम	आज्ञा करहु सुफल सब काजू। राम चरन सिर ऊपर छाजू।५८३।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	27	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	महा पौरुष बल तुम कहं होई। दानव जीति सके नहिं कोई।५८४।	सतनाम	सिया सनेस लियावहु नीका। सकल कटक मह वंश के टीका।५८५।	सतनाम	साखी - ४२	सतनाम
सतनाम	राम चरन पद पंकज, गहि लिन्हो सिर नाय।	सतनाम	चले प्रचण्ड अति कोप करि, महा वीर बल पाय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	अति प्रचंड है कोपेवो वीरा। कूद परा सम सायर नीरा।५८६।	सतनाम	रहे निशिचर मगु रखावारी। हना तेहि एक कील पछारी।५८७।	सतनाम	खंशी पहुमि तन भयो विकरारा। रुधिर चले जैसे नीर को धारा।५८८।	सतनाम
सतनाम	कूदि परा पुनि लंक मंझारा। जहां दशकंधर के रखावारा।५८९।	सतनाम	आगे गृही विभीषण देखा। राम नाम सुनि अवन विसेखा।५९०।	सतनाम	मिले विभीषण मगु मे आई। हृदय हरखि महा फल पाई।५९१।	सतनाम
सतनाम	संत दरस हरि कृपा समेता। बड़ा भाग्य मूल मंगल हेता।५९२।	सतनाम	सुनो पवन सुत बचन हमारी। सगरे लंका दैत्य पसारी।५९३।	सतनाम	ता बीच संत रहन इमि रहई। राम नाम निजु निशिदिन लहई।५९४।	सतनाम
सतनाम	कहे विभीषण सुनु हलिवन्ता। निजु निजु अर्थ कहों विरतंता।५९५।	सतनाम	राम लषन है सागर तीरा। महा कटक सब बड़-बड़ वीरा।५९६।	सतनाम	राम सनेस सिया पहुँ लाई। सिया सनेस तुरन्त ले जाई।५९७।	सतनाम
सतनाम	अशोक वृक्ष तर सीता रहई। कष्ट कल्पना सब दुख सहई।५९८।	सतनाम	चहुं ओर चौकी दैत्य जो गाढ़े। सुनि पवन सुत रोश जो बाढ़े।५९९।	सतनाम	कूदि चढ़ा द्रुम ऊपर कैसे। मानो पंक्षी बसेरा जैसे।६००।	सतनाम
सतनाम	बहुत कष्ट तन देखा भारी। तुरंतहिं दीन्ह अगूँठी डारी।६०१।	सतनाम	सीते करगहिं लीन्ह उठाई। अधिक कष्ट तन व्यापे आई।६०२।	सतनाम	तुरन्तहिं उतरि निकट चलि अयऊ। करि परिनाम निजु माथा नयऊ।६०३।	सतनाम
सतनाम	सुनु माता मैं राम कै बीरा। सिया सुखद भई सकल सरीरा।६०४।	सतनाम	राम लषन तन विरह वियोगा। तुंव सनेस मेटिहैं तन शोगा।६०५।	सतनाम	उतरी कटक सभै परिचारी। लंकेश्वर के शीश उतारी।६०६।	सतनाम
सतनाम	धरि धरि दैत्य सभै सिर कटिहैं। सुर नर बन्द तुरन्तहिं छुटिहैं।६०७।	सतनाम	साखी - ४३	सतनाम	तुम माता धरु धीरज, होइहो युगल एक साथ।	सतनाम
सतनाम	करहिं विध्वंस रघु वंश मणि, जीत चलिहै रघुनाथ॥	सतनाम	28	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	पाँच फल लेइ आगे दीन्हा। बहुत प्रीति करि चाखन लीन्हा।६०८।	सतनाम	कपि के फल मानो अमृत रहेऊ। रोम रोम शीतल तन भयेऊ।६०९।	सतनाम	बोले कपि तब वचन विचारी। केहि दिशि बाग खाहुं फल झारी।६१०।	सतनाम
सतनाम	चहुं ओर दैत्य रहे रखवारा। किमि कर तुम करवहु पइसारा।६११।	सतनाम	तुम प्रताप सबै बल लरिहौ। दैत्यनि मारि सब फल खाइहौ।६१२।	सतनाम	दैत्यनि धरि धरि सभे पछारों। वृक्ष उपारि सिंधु महं डारों।६१३।	सतनाम
सतनाम	शुरुकि शुरुकि खइहों भरि पेटा। फेरि करिहों मैं तुमसे भेंटा।६१४।	सतनाम	उठा गरज परबत अति भारी। सिया देखा जनु लंक उजारी।६१५।	सतनाम	पैठा जाइ झपटि बगवाना। चुनि चुनि फल खायसि मनमाना।६१६।	सतनाम
सतनाम	किछु बट तोरि तारि जिमि पारी। किछु उपारि सिन्धु महं डारी।६१७।	सतनाम	धाये दैत्य रहे रखवारा। मारु मारु के कीन्ह पुकारा।६१८।	सतनाम	धारी चपेटनि मारि पछारी। चले पराई टांग धरि फारी।६१९।	सतनाम
सतनाम	करहिं शोर जहँ रावण बैठा। मरकट एक बारी महँ पैठा।६२०।	सतनाम	तोरि तोरि फल खाइसि सब झारी। वृक्ष उपारि सिन्धु महँ डारी।६२१।	सतनाम	कहे रावन किहिसि अजगूता। जियतहिं पकरि ले आवहु दूता।६२२।	सतनाम
सतनाम	साखी - ४४					सतनाम
सतनाम	देखत लघु चंचल बड़ा, पौरुष कहा न जाये।					सतनाम
सतनाम	जो जो परे लपेट में, पटके टाँग घुमाये॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	हमसे वीर कवन बड़ अहई। जो प्रभुता बल हमसे कहई।६२३।	सतनाम	सुनत कोप शरीरे जागा। तोरों तब जनु विलम्ब न लागा।६२४।	सतनाम	महा फाँस तब सब मिलि जोरा। घेरि पकरि के लियावहु चोरा।६२५।	सतनाम
सतनाम	छोट करहिं तव बड़ होय जाई। बड़ करहिं तब निकलि पराई।६२६।	सतनाम	बहु परिपंच फंद जब जोरा। कर गहि खैंच तुरंतहिं तोरा।६२७।	सतनाम	राम के क्रिया करहुं तुह चोरा। मारब तोहिं नहिं कीन्ह निहोरा।६२८।	सतनाम
सतनाम	बाझे फाँस दास जनु छोटा। धरि धरि मारहीं है बड़ मोटा।६२९।	सतनाम	घेरि पकरि ले आये रावन आगे। देखि देखि लरिका सब भागे।६३०।	सतनाम	फल खायो कौने बल भारी। किमि करि वृक्ष तुम कीन्ह उजारी।६३१।	सतनाम
सतनाम	साच कहो नातो जीवनहिं बचिहो। ग्रीव कर द्वार घरे घर नचिहो।६३२।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
महा प्रबल है आतम भारी। तोरि तोरि फल खायो सब झारी।६३३।	खायो फल लागा बड़ मीठा। तोरि तोरि लीन्ह नैन भरि दीठा।६३४।	माथे ठेकै तेहि लिन्ह उपारी। इमि करि लेइ सिन्धु मँह डारी।६३५।	दानव दौरि कीन्ह बड़ रारी। तब मैं उलटि चपेटहिं मारी।६३६।	कहे रावन चंचल है चोरा। बोटल बैन नहिं डर तोरा।६३७।	साखी - ४५	
चोर सोई चोरी करे, हरे अवरि को बाम।	तिरिया चोर पापी बड़ा, राम विमुख धृग काम॥	चौपाई	कहे रावन घइचहु धरि कोरे। मारहु जेकरा जस बल जोरे।६३८।	पवन तनय तन रोमना टूटै। खँसि खँसि देत अपनहिं मुंह टूटै।६३९।	हारि हारि बैठे सब योद्धा; तन से निकलि गये सब क्रोधा।६४०।	एकर मृत्यु है निकट हमारी। लंगूर लपेटहु कपड़ा फारी।६४१।
तेल लगाई लपेटहु लाता। तब तन कै होइहैं उत्पाता।६४२।	अधिक लंगूर बढ़ाया भारी। नर के पाग नारि के सारी।६४३।	आगि लगाई देहु हुहकारी। तरकि तरकि उन्ह लंका जारी।६४४।	सगरे लंका लागे आंचा। एक विभीषण के गृह बांचा।६४५।	विभीषण भवन बांचि के जाई। तहूं न अन्ध के मन पतियाई।६४६।	जनक सुता देखि हृदय हरषी। मानो प्रेम सुधासम बरषी।६४७।	छन्द - ८
वीर धीर अति कोपि गर्जे, लंकापुर धरि जारहिं।	लै लाय लपट लंगूर फेंकहिं, दैत्य निकट न आवहीं॥	दैत्य दलि मलि भूत भाजे, चिहूँकि चिंकार लगावहीं।	कठिन मरकट निकट ठाढ़े, वीर जोर ना पावहीं॥	खोरठा - ८	जरत सो नगर अनाथ, राम द्रोह रावन कियो।	सीता ले मिलु रघुनाथ, शरन सिंह ना मारिहें॥
चौपाई	कूदि पड़ा तब सागर माहीं। लंगूर बुताय सिया पहं जाहीं।६४८।	पहुँचे पवन सुत वेगि सो जाई। जहाँ सिया रही थै बनाई।६४९।	सुनु माता तेजहु तन सोचा। राम चरन अघ पातक मोचा।६५०।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	हुकुम ना कीन्ह मोहिं रघुराई। तुम कहं लेइ तुरन्तहिं जाई।६५१।	सतनाम	सुर नर बन्द सबे मुक्तैहें। तुम कहं लेइ अवधपुर जइहें।६५२।	सतनाम	रावण गर्व गरद मंह बितिहें। समर करी सुर खोते जीतिहें।६५३।	सतनाम
सतनाम	राजा राम रानी होए सीता। कपि के वचन मानहु परतीता।६५४।	सतनाम	राम चरन छुइ बिनती मोरी। ताकब तनिक नयन की कोरी।६५५।	सतनाम	मैं तिरिया तन बुद्धि की थोरी। कृपा सिन्धु से विनती मोरी।६५६।	सतनाम
सतनाम	मैं दासी तुम त्रिभुवन स्वामी। सर्व व्यापक अंतर यामी।६५७।	सतनाम	लषण से कहब अशीष हमारी। बोली बैन नयन नीर ढारी।६५८।	सतनाम	तेजहु विषाद कल्पना दूरी। रावन गर्व मिलहिं सभ धूरी।६५९।	सतनाम
सतनाम	हमके माता देहु अशीषा। राम चरन जाये नायो शीसा।६६०।	सतनाम	करि परनाम तब चले तुरन्ता। कूदि परे सम सायर अन्ता।६६१।	सतनाम	देखि कटक सभै कोई ठाढ़ा। हरषी पवन सुत महिमा बाढ़ा।६६२।	सतनाम
सतनाम	<p>साखी - ४६</p> <p>कटक सभै हर्षित भये, महावीर पद पाये।</p> <p>राम रचन लपटाइ के, नयन रहा मुसुकाये॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	राम कहा सुनो कपिराई। सिया सनेस निजु कथा सुनाई।६६३।	सतनाम	चरन छुइ राम पर लागी। विरह विराग सदा अनुरागी।६६४।	सतनाम	त्रिभुवन ठाकुर राम गोसाई। मोहिं दासी पर होहिं सहाई।६६५।	सतनाम
सतनाम	लषन आशीष कहब बहु भाँति। बोतल बैन लोर चहुं पाती।६६६।	सतनाम	विक्रि विक्रि सब कथा सुनाई। धिरिजा धरहु मिलिहें रघुराई।६६७।	सतनाम	रावन गर्व गरद है जाई। सिया ले चलिहें त्रिभुवन साँई।६६८।	सतनाम
सतनाम	तेजहु कल्पना धरु मन धीरा। चरन कमल सुमिरहु रघुवीरा।६६९।	सतनाम	राजा राम सिया तुँह रानी। कपि के वचन मिथ्या जनि जानी।६७०।	सतनाम	सुनि के राम शीतल तन भयऊ। खुलि गयो कमल भवर रस पयऊ।६७१।	सतनाम
सतनाम	राम लषन संग सैन समेता। सब मिलि मंत्र कीन्ह निजु हेता।६७२।	सतनाम	बांध्यो सागर बहु सब भाती। पाहन काटि ढोवहु दिन राती।६७३।	सतनाम	नल नील वीर सब झारी। पाहन देहिं कटक सब डारी।६७४।	सतनाम
सतनाम	लक्ष्मण लिखा सत्त कै रेखा। जल महँ उपल सबै केहु देखा।६७५।	सतनाम	सत्त पुरुष के जानहिं मरमा। लषण प्रेम प्रीति निजु धरमा।६७६।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	यहाँ सेत बांध सब जोवै। रावन गर्व माति सोवै।६७७।	सतनाम	कहे मंदोदरि सुनु पिया स्वामी। का तुम भूलहु गर्व अति गामी।६७८।	सतनाम	मिलहु सिया ले सायर तीरा।। कोटि गुनाह बकसे रघुवीरा।६७९।	सतनाम
सतनाम	इनसे समर जीतै नहिं कोऊ। नर नारायण है पुनि दोऊ।६८०।	सतनाम	गृह मँह लायक शक्ति स्वरूपा। राज नष्ट होइहें तोर भूपा।६८१।	सतनाम	साखी - ४७	सतनाम
सतनाम	सुनहु प्रिया पति मोर तुम, सदा कहों हितकारी।	सतनाम	सिया तुरन्त ले मिलिए, क्रोध मोह सब डारी।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	कस तिरिया बुद्धि बोलसि बेकारी। मारौं कटक सैन सभ झारी।६८२।	सतनाम	इनसे मुख में किमि करि फेरिहों। मरकट मारि खंधक सब भरिहों।६८३।	सतनाम	ये द्वै तपसी अल्प अहारी। बान कै धकेँ देऊ जिमि डारी।६८४।	सतनाम
सतनाम	वोहि मारेका का फल नीका। नट के संग वै गृहि गृहि बीका।६८५।	सतनाम	मगु में मगन नाचे बहु भाँति। चंचल चोर चतुर है जाती।६८६।	सतनाम	साखी - ४८	सतनाम
सतनाम	कहे रावन सुनु तिरिया, तैं डर मति मानस शंक।	सतनाम	शिव सदा वर दीन्हों, राज करूँ गढ़ लंक।।	सतनाम	छन्द - ६	सतनाम
सतनाम	सिया बुद्धि छलि के भला कहां है, हरि लिन्हों अपने बल तैं।	सतनाम	सायर बाँधि कटक सब निकट, विकट भया बस सब जल तैं।।	सतनाम	लंका मीजि धूरि पंकज करिहें, तोहिं मारिहें अपने करते।	सतनाम
सतनाम	दरिया जो कहे तिरिया सिखवै, तेजु वादी नहिं धरनी धरते।।	सतनाम	सूर सब बाँधि कियो बस अपने, शिव को वर कैसे ढरिहें।	सतनाम	उनकी कटकवनि मरकट की, सन्मुख हम सो के लरिहें।।	सतनाम
सतनाम	वे द्वै तपसी तन मन व्याकुल, हम सों समर को करिहें।	सतनाम	दरिया जो कहें तिरिया डपटै, कर खरग लिए सबई डरिहें।।	सतनाम	सोरठा - ६	सतनाम
सतनाम	बोलै गरजि करि कोपि, तिरिया तैं बैरी भई।	सतनाम	दिया तेज से तोपि, सुर सब डर कपित भये।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कहें शिव सुनु वचन भवानी। रावन गर्व गरुर अभिमानी।६८७।	सतनाम	धरि-धरि अहि खाइसि भरि पेटा। शेषनाग कहि गरुर लपेटा।६८८।	सतनाम	सहस्त्र फनी क्षिति जापर रहई। कोटि गरुर तेहि भीतर बहई।६८९।	सतनाम
सतनाम	यह जनि जानो छोट शरीरा। अनंत कला है राम रघुवीरा।६९०।	सतनाम	सागर आगर राम कृपाला। भयभंजन दुष्ट यम जाला।६९१।	सतनाम	कहें उमा सुनु त्रिभुवन ज्ञानी। किमि कर वर दीन्हों राजधानी।६९२।	सतनाम
सतनाम	बार-बार वै शीष चढ़ाया। तब लंका पति नृप कहाया।६९३।	सतनाम	पाइसि वर भया अभिमानी। बाँधिसि देव सुर सभ जानी।६९४।	सतनाम	सीतहिं हरि लेआनेवो लंका। गर्वगामी भयो इमि करि बंका।६९५।	सतनाम
सतनाम	वाकी मृत्यु निकट नियरानी। गरद करिहें वै त्रिभुवन रानी।६९६।	सतनाम	एक सें अनंत सकल महिं बरता। चर अचर पर त्रिभुवन कर्ता।६९७।	सतनाम	परमात्म हैं पुरुष पुराना। भवन भरमि नहिं पद पहचाना।६९८।	सतनाम
सतनाम	दशकंधर अंधमती भरम भुलाना। आदि ब्रह्म गति भेद ना जाना।६९९।	सतनाम	सती कहे सुनो शिव ज्ञाता। यह संशय भ्रम हम कहँ राता।७००।	सतनाम	वे मरे जरे नहिं त्रिगुन शरीरा। आदि ब्रह्म वे गहिर गम्भीरा।७०१।	सतनाम
सतनाम	आदि अनादि जाहि कहँ कहई। सो कैसे तिरगुन में बहई।७०२।	सतनाम	दया सिंधु सत्त कहिए बानी। क्रोध क्षमा करि आमृत सानी।७०३।	सतनाम	जब जब पुहुमी होखे भारा। तब तब लीला धरे अपारा।७०४।	सतनाम
सतनाम	मुए जिवे नाहिं ब्रह्म स्वरूपा। माया तिरगुन है अभिगीति रूपा।७०५।	सतनाम	बार-बार हम तुम्हें बुझाई। तुम कहं ज्ञान गमी नाहिं आई।७०६।	सतनाम	तुम तिरिया तन बुद्धि की थोरी। कबे बचन नहिं मानहु मोरी।७०७।	सतनाम
सतनाम	जब रावन सीता हरि लयऊ। तब संशय बड़ि तुमके भयऊ।७०८।	सतनाम	संशय सागर अगम गम्भीरा। बूड़त भव जल पाउ न थीरा।७०९।	सतनाम	सिया रूप तुँह सुरति सँवारी। बोले राम कहा दक्ष कुमारी।७१०।	सतनाम
सतनाम	कीन्ह प्रनाम दुनो कर जोरी। शिव के छोड़ि कहाँ तुम दौरी।७११।	सतनाम	तब तुम लाजन बदन गोआई। चली तुरन्त हमरे पंह आई।७१२।	सतनाम	सुनो शिव अस कहे भवानी। तुम्हरे डर हम सदा डेरानी।७१३।	सतनाम
सतनाम	जो पूछहु तो सत्त किछु कहेऊ। नाहिं तो गोप गुप्त होए रहेऊ।७१४।	सतनाम	हँसि के शिव बोले बड़ि प्रीती। जाके गुरु गमि सो जग जीती।७१५।	सतनाम		सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	छोड़हु संकोच सपथ सुनु मोरी। सत्त बचन मँह किमि करि चोरी।७१६।	सतनाम	पुरुष एक तिरगुन तेँ न्यारा। जाकर जल थल सृष्टि पसारा।७१७।	सतनाम	विरह बेकार तन कन्द्रप अहई। शक्ति शोक दुख दारुन दहई।७१८।	सतनाम
सतनाम	बन खण्ड जाइ जोग तप कीन्हा। पिता मोहि दुख दारुन दीन्हा।७१९।	सतनाम	तापर नारि निशाचर हरेऊ। अधिक कल्पना बड़ दुख भयेऊ।७२०।	सतनाम	तिरगुन माया ब्रह्म समेता। उत्पत्ति परलै सो तन केता।७२१।	सतनाम
सतनाम	यह तीन लोक कै ठाकुर टीका। इनकै पारष है अति नीका।७२२।	सतनाम	जब हम सीता रुप बनाई। विहित विहित उन्ह कीन्ह विनाई।७२३।	सतनाम	सीता हंस गवन वै चलई। हलुगे पाँव पुहुमि पर धरई।७२४।	सतनाम
सतनाम	यह मद मस्त पाँव धर चांती। इमि करि चाल लखा जिमि भाँती।७२५।	सतनाम	यह भ्रिग नयनी देखात मोहै। कमल नैन सीता सति सोहै।७२६।	सतनाम	तब उन्हि देखा ज्ञान विचारी। यह सीता नाहिं सती हमारी।७२७।	सतनाम
सतनाम	कीन्ह प्रनाम दुनो कर जोरी। दक्ष कुमारी सुनु विनती मोरी।७२८।	सतनाम	तुँहु जग जननी मातु समाना। जाहु जहां है शिव स्थाना।७२९।	सतनाम	साखी - ४६	सतनाम
सतनाम	कहे भवानी भरम नाहीं, अहै ज्ञान का मूल।	सतनाम	सत्त पुरुष वै अमर रहिं, प्राण पिण्ड समतूल।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	बोले शिव वचन तब नीका। ज्ञान विराग नाम निजु टीका।७३०।	सतनाम	जोग युक्ति भोग रस त्यागे। अनल प्रगास प्रेम रस पागे।७३१।	सतनाम	जहाँ ले गमी तहाँ लै धावै। सत्तपुरुष का मरम ना पावै।७३२।	सतनाम
सतनाम	देखि वेदांती कोई सत्तगुरु ज्ञाता। संत असंत विविध मत माता।७३३।	सतनाम	अजपा जाप शून्य धरि ध्याना। ब्रह्मण्ड खण्ड खोजि पद निर्वाणा।७३४।	सतनाम	निगम निर्गुण कहे अभिगति रूपा। अनहद धुनि सत्त शब्द स्वरूपा।७३५।	सतनाम
सतनाम	निर्गुण निराश कथे नाहिं कोई। भक्ति शक्ति जग आदर होई।७३६।	सतनाम	ज्ञान कै मगु पगु धरै न कोई। धार कृपान तिरछन अति होई।७३७।	सतनाम	अगम अथाह थाह किमि पावै। इमि कर राम चरन पद गावै।७३८।	सतनाम
सतनाम	सुनु उमा यह सगुन स्वरूपा। राम नाम पद विमल अनूपा।७३९।	सतनाम	योगी जती जग भेष अलेखा। भक्ति भाव राम पद देखा।७४०।	सतनाम	महा महा मुनि पंडित ज्ञाता। मोह भरम भव सभ कहँ राता।७४१।	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
एक पुरुष सत्त सबते भिन्ना। ज्ञान प्रकट जग केहु केहु बीना।७४२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सत्तगुरु मत कहे पुरुष निनारा। निरा लेप हो निर्गुन सारा।७४३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जीव शीव संग शक्ति विराजै। व्यापक ब्रह्म सबै घट छाजै।७४४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साखी - ५०	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कहैं शिव सुनु बचन भवानी, गहो अचल निजु ज्ञान।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
माया धोखा धंधा जग माहीं, पुरुष पुरान अमान।।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
बड़ी शरन जब जाइए, मेंटे करम को दाग।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
ताते सेत बधन लियो, लंका अटकी पाग।।५१।।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मानो धरनी सब जल सोखा। वार पार सब मिटि गयो धोखा।७४५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
उत्तरी कटक रही छितराई। मरकट बन फल खावहिं जाई।७४६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
राम लषन गिरि पर चढ़ि वीरा। गढ़ सुमेरु बहे शीतल समीरा।७४७।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अति सुगंध फल वारि बखाना। करि प्रसाद जल अचवन आना।७४८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मंत्री मंत्र जामवंत है साथा। सबसे बचन पूछा रघुनाथा।७४९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नल नील वीर हलिवन्ता। बाली सुत संगसैन समेता।७५०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
लंकापुर केउ वीर चलि जाई। राम कथा रावण समुझाई।७५१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सीतहिं संग ले पगु पर परई। लंका राज्य कल्प भर करई।७५२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुर नर बन्द देइ सब छाड़ी। राज लंकेश्वर अधिके माड़ी।७५३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
आइ कटक पीछे फिरि जइहें। रावण आगे बात जनइहें।७५४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
है कोई वीर वीरा लै आई।। विषटारे लंकापुर जाई।७५५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मंत्री मंत्र कहा समुझाई। अंगद वीरहिं आनि बोलाई।७५६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अंगद वीर धीर बड़ भारी। जर जवाब सब बात सँभारी।७५७।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
उत्तर कै उत्तर दीन्हें वीरनीका। रावण सन्मुख यह वीर टीका।७५८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
रावन बालि चिन्हारो अहई। बाली सुत अंगद वै लहई।७५९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अंगद विरहिं वेगि बुलाई। गुप्त मंत्र सब प्रगट सुनाई।७६०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जाहु कनक गढ़ लेहु कर वीरा। तुम सब लायक मति का धीरा।७६१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सहस्त्र भुजाबल जाके होई। तुँह पौरुष तन तुलै ना कोई।७६२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
पिता वैर जनि मानहु जाई। अगली जन्म वीरल प्रभुताई।७६३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
चलि भव अंगद लिन्हो पाना। लंकापुर के कीन्ह पयाना।७६४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मैं कींकर तुम दासन दासा। कृपा सिन्धु चरन तुँव पासा।७६५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जेइसन करम तेइसन सो पावै। मातु पिता कोइ काम ना आवै।७६६।	सतनाम	पवन सुत मगु पूछा जाई। बन खंड गिरि सब कहि समुझाई।७६६।	सतनाम	मैंना गिरि चढ़ि पंथ निहारा। दक्षिण दिशा है लंक विचारा।७६८।	सतनाम
सतनाम	साखी - ५२	सतनाम	राम चरन सिर नाइके, रहे दुनो कर जोरी।	सतनाम	सदा दयाल सिर ऊपरे, करनी कछु नाहिं मोरी॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	महा महा वीर पावर भट भारी। माल जुझार टरत नाहिं टारी।७६६।	सतनाम	अंगद के जिय संशय व्यापै। अगुमन पाँव दपटि चलु दापै।७७०।	सतनाम
सतनाम	जो मैं फिरों होहिं कुल हानी। नाम हमार जगत नाहीं जानी।७७१।	सतनाम	राम काज करिहें वीर केता। जिन जिन बांध्यो सायर सेता।७७२।	सतनाम	पहुंचे लंका निकट निवासा। कूदि चढ़े सब मिटि गयो त्रासा।७७३।	सतनाम
सतनाम	ऐन झरोखो रहा छिपाई। शोर करहिं मरकट एक आई।७७४।	सतनाम	दौरि दूत पहुँचे सब झारी। मुंह विरावहिं देइ देइ तारी।७७५।	सतनाम	अंगद रोष गोस चढ़ि गयऊ। धरि दाबे नीचे चलि अयऊ।७७६।	सतनाम
सतनाम	सो तन भयऊ भयंकर भारी। पाँच सात दैत चपेटन्हि मारी।७७७।	सतनाम	भागे दूत तब छोड़ चिकारी। प्रशस्त कुँवर तब लागु गोहारी।७७८।	सतनाम	कहो ना को तुम का करि दूता। आयहु लंका बड़ अजगूता।७७९।	सतनाम
सतनाम	जो किछु मांगहु देइँ मँगाई। नाहीं तो चुपही जाहु पराई।७८०।	सतनाम	प्रशस्त नाम तोर सुन्दर शरीरा। रावण सुत तुँह बड़ भट वीरा।७८१।	सतनाम	भवन भिखारी तुम हमके जाना। धरि के मरदों तोहरो माना।७८२।	सतनाम
सतनाम	प्रशस्त कुँवर तब कोपेउ वीरा। धरि के दाबेवो सकल शरीरा।७८३।	सतनाम	उलटि के अंगद तेहिं पछारि। तन मरोरि पुहुमि पर डारी।७८४।	सतनाम	प्राण छुटा तन भयो बेकरारा। रावन आगे परा पुकारा।७८५।	सतनाम
सतनाम	साखी - ५३	सतनाम	महा भुजा बल वीर अति, बोला हांक प्रचारी।	सतनाम	परा दंक गढ़ लंक में, कम्पि रहा नर नारी॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	तुरन्तहिं चलि पावरि पर गयऊ। मन्दोदरी तब देखति भयऊ।७८६।	सतनाम	राम के दूत दुवारे ठाढ़ा। रावन सुनि कोप अति बाढ़ा।७८७।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
बोली बचन मंत्री से कहई। यह कौतुक सब देखन चहई।७८८। भोजहु दूत तुरंत बुलाई। वह बानर की दो सर आई।७८९। अंगद तुरन्त निकट चलि अयऊ। चारु नजरि बरोबर भयऊ।७९०। रावन उठि सिंगासन बैठा। अति भयो गर्व भुजा बल ऐंठा।७९१। कहसि ना के तुम कहाँ से आई। आपन अर्थ कहसि समझाई।७९२। की सेना संग परसि भुलाई। कारण कवन लंकापुर आई।७९३। कहसि ना साच बनचर बानी। नाहिं तो मार करो जीव हानि।७९४। अति गर्व करि बोलसि तीता। बाली सुत मैं राम कर हीता।७९५। रामचन्द्र भेजा तुम पासा। सो निजु बचन करब परगासा।७९६। हमसे बालि सदा हितकारी। सो तुम जनमें बात बिगारी।७९७। राम चरन पद पंकज मोहीं। बिगरे सो जो राम कै द्रोही।७९८। पिता बैर सुत नाहीं माना। तेहि लबारकै कौन बखाना।७९९। तिरिया चोर पापी बड़ अहई। सोई लबार भवन भव परई।८००। सीतहिं लेइ चरन पर परई। कनक कोट राज तब करई।८०१। दश शीष धरि छिनिहें तोरा। ले चलु सीतहिं सुनु कहा मोरा।८०२। अबहीं जाइ पावन जो परहू। लंका राज कल्प भरि करहू।८०३। बाँध्यो सुर नर देव सब झारी। एहि तपसी के का गुन भारी।८०४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साखी - ५४ शिव सहाय सिर ऊपरे, महा महा संग वीर। कर गहि चरन घुमाइ कै, फेंकतों सायर तीर॥ चौपाई जौ तें चरन उपारसि मोरा। महा पौरुष बल जनतों तोरा।८०५। चरन रोपि पहुमि पर धरिहों। ऊपरे चरन तो सीता हरिहों।८०६। देखो तोर बल दैत समेता। देखिहें सुर नर रोपिहें खेता।८०७। देखिहहिं राम औ पुरुष पुराना। ऐ दोऊ पीर मंडे मैदाना।८०८। देखिहें शम्भु औ शिव भवानी। देखिहें जल थल पवन औ पानी।८०९। देखिहहिं सीता सूरज अकाशा। अंगद राम नाम निजु दासा।८१०। देखिहें गोप प्रकट संसारा। हारि जीति देखिहें संसारा।८११।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
छन्द - १० रोप्यो चरन इह चांपि चक पर, प्रगट सभ पुकारहिं। देव देव इह सुर सरब लेहीं, वीर धीर बल पावहीं॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

37

कोटि कोटि सब वीर बांके, वीर भूमि पर आवहीं ।
यह महा कठिन प्रन कनक कोट में, राम रहि पछतावहीं ॥

खोरठा - १०

बोले राम प्रचारी, सुनु मंत्री मति धीरतें ।
अंगद चरन उपारी, सीता सती तब जाइहें ॥

चौपाई

मरद मस्त माल सब झारी। लगे एकद्वि फिनि चारी। ८१२।
दस बीस लाग्यो सौ पचासा। झौंकि चरन सब भये निराशा। ८१३।
जहाँ लेहि कटक लंका महं रहई। सब कोई चरन उपारन चहई। ८१४।
हारि हारि बैठे सब झारी। रावन गरज महा बल भारी। ८१५।
चला कोपि करि विचिला बीचै। गिरा मटुक पावन कर नीचै। ८१६।
अंगद पांव मटुक पर दीन्हा। रावन गर्व गरद कै लीन्हा। ८१७।
मीस मांसि कै दीन्हों डारी। बाली सुत महिमा अधिकारी। ८१८।
चलसि ना गहसि राम कै चरना। नाहिं तो काल निकट भय मरना। ८१९।
वै द्वै तपसी बैर बढ़ाया। दूत भोजि बेसील कराया। ८२०।
अब हम समर करब प्रचारी। देखिहें देव लोक सब झारी। ८२१।
बाली के सुत तैं पूत कपूता। हमसे वैर कीन्ह अजगूता। ८२२।
तैं कपूत तिरिया तोरि रोवै। सकलो वंश जानि के खौवै। ८२३।
जड़ जेठर से का कहि लीजै। राम चरन पद सुभिरन कीजै। ८२४।

साखी - ५५

आनंद मंगल प्रेम यती, चला तुरंतहिं झारी ।
राम चरन पद पंकज, मिनती मंत्र विचारी ॥

चौपाई

उठी कटक सभो सिर नाई । बाली सुत धन पौरुष पाई । ८२५ ।
राम चरन पद अंगद पेखा । रघुकुल कमल भानु छवि देखा । ८२६ ।
शीतल भय तन आठो अंगा । रोम रोम पद प्रेम प्रसंगा । ८२७ ।
रघुपति बोले विमल रस बानी । सुधा समेत प्रेम रस सानी । ८२८ ।
छुछुम कथा सब कहा बखानी । रावन गर्व गरद महँ सानी । ८२९ ।
तुव प्रताप निशाचर जीता । रावन मारि ले आइब सीता । ८३० ।
कहेँ राम तूम सब गुन लायक । सूर्यवंश क्षत्रीय बड़ सायक । ८३१ ।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अब मोरे मन भौ प्रतीती। सुर नर बन्द छुड़ाइब जीती।८३२।	सतनाम	उठी कटक आगे चलि आई। निजु निजु मंत्र कहे समुझाई।८३३।	सतनाम	बन फल मरकट खावहिं जाई। भरि पेट खाहिं मोछि फहराई।८३४।	सतनाम
सतनाम	निशिदिन सबकेहु यही बिचारा। कब गये देखब लंक पगारा।८३५।	सतनाम	साखी - ५६	सतनाम	अस मनसूबा कटक में, महा महा बलवीर।	सतनाम
सतनाम	सुर सब भूमि बहारहीं, जा दिन डारिहें तीर॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	तुम जग जननी चीन्हा नाहीं नीके। जाके हाथ जगत सब बीके।८३६।	सतनाम
सतनाम	हरि आनहु बहुते हरषायो। अमृत तेज महा विष खायो।८३७।	सतनाम	महा माया औ जोति निरन्ता। जल थल पवन में फंद अनन्ता।८३८।	सतनाम	भानु कला छवि राहु ग्रासा। छुटिगै तम तृमिरी सब नाशा।८३९।	सतनाम
सतनाम	दीन मनी दिन प्रगट है आये। राहु केत दहुँ कहा पराये।८४०।	सतनाम	तुम के काले निकट ग्रासा। विपरीत बुद्धि तुम्हें तन भासा।८४१।	सतनाम	जिमि करि राहु सूर्य कहं छेका। इमि करि अंगद दैतन्हिं टेका।८४२।	सतनाम
सतनाम	तुहुँ बीस भुजा बल पौरुष जाना। मुँह टूटा नाहिं मन पतियाना।८४३।	सतनाम	हटिके कटक लागे मुँह कारी। सूर्य बंश महिमा अधिकारी।८४४।	सतनाम	कहे मंदोदरि सुनु पिया मोरा। शिव के वर नाहिं निमहीं बोरा।८४५।	सतनाम
सतनाम	भस्मासुर के बर जो दीन्हा। भये भस्म तन खाक मलीना।८४६।	सतनाम	हरिनाकस शिव वर जो माता। ओदर फारि पुहुमि तन चाता।८४७।	सतनाम	जहाँ उपासिक शिव के अहई। राम भगत कहँ कोई ना लहई।८४८।	सतनाम
सतनाम	जेहि सिर काले कीन्ह पयाना। विपरीत बुद्धि भरम भव ज्ञाना।८४९।	सतनाम	अनहित हित नाहिं परतीती। कहे मंदोदरि यम तेहि जीती।८५०।	सतनाम	अति है क्रोध अंध तब बोला। शिव के बर जग सदा अमोला।८५१।	सतनाम
सतनाम	हरिनाकस बर सहल स्वरूपा। हमकें तुले औरि नाहिं भूपा।८५२।	सतनाम	हम दस मस्तक आनि चढ़ाया। तब अटल बर लंका पाया।८५३।	सतनाम	हमके तुम सिखावन लागी। तपसी तरफ बात बहु पागी।८५४।	सतनाम
सतनाम	उठा कोपि खारग ले हाथा। धरिके कटितो तोहरो माथा।८५५।	सतनाम	तब मन्दोदरि बहुत डेराई। चरन पकरि कै माथा नाई।८५६।	सतनाम	तेहि अवसर विभीषण आये। राम बात कछु कथा चलाये।८५७।	सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुनिके कोपा सकल शरीरा। लाते मारि विभीषण गिरा।८५८।	उठि विभीषण गृह में आये। बहुत विषाद राम गुन गाये।८५९।	साखी - ५७	चले विभीषण राम पहुँ, तेजि सकल परिवार।	बहुरि भवन में आइके, देखब लंक दुवारि॥	चौपाई	
सत्तगुरु वचन पूछो मैं तुमसे। साता लक्षण कहो निजु हमसे।८६०।	मायारूप सुख किमि नाहीं लहई। इनके संग सदा सभ करई।८६१।	सुनो वचन मैं कहौं विचारी। समुझि लेहु निजु ज्ञान सम्भारी।८६२।	प्रथम जाइ जनक गृह रहई। कीन्ह परिपंच बहुत किछु लहई।८६३।	जनक ऋषि सोच बहुत बिचारी। योग छुटा दुःख भय गयो भारी।८६४।	झलके चित्र सबै कोइ धावा। महा महा भूपति लाज गँवावा।८६५।	नृप लागे जैसे सेमर सूवा। टुटि गयो धनुष उड़ा भ्रम भूवा।८६६।
झमि करि माया लेत जब छोरी। शीश पटकि बैठे मुख मोरी।८६७।	यह सुलक्षनी जेहि गृह पैठी। दीपक बारि भवन में बैठी।८६८।	जहाँ दीपक तहाँ किरमी आवे। परी पतंग तहाँ प्रान गवावे।८६९।	महा माया यह सब जग गावे। अगम अथाह थाह किमि पावे।८७०।	बिनु गुन ज्ञान सत्य नहिं नौका। बिनु तरनी भवसागर डबका।८७१।	सपत पताल तहाँ बहि जाई। खोजत खोजत कोई अन्त ना पाई।८७२।	ज्यों सत्तगुरु मिलें कनहरिया। धरि पतवार खेवहिं तब दरिया।८७३।
जीवन मुक्ति जीन्द गुरु ज्ञाता। सब विधि पूरन प्रेम सुपाता।८७४।	ठीका मूल नाम निजु देखौ। रहिन गहनि में और ना पेखौ।८७५।	यम राजा के काह बसाई। निश्चय अचल अमरपुर जाई।८७६।	है सत्तपुरुष मान पर तीती। रहनि गहनि चलिहो यम जीती।८७७।	तिरगुन शरीर मोह तनु व्यापै। पाप पुन्य अपने मन तापै।८७८।	द्रोपदी तन है माया स्वरूपा। पांचों भाई युधिष्ठिर भूपा।८७९।	उन्हि संग थीर कतहिं नाहिं पाई। पैठि पताले तनहिं गलाई।८८०।
सो माया रावन ग्रिह आई। महाफास जम जाल बनाई।८८१।	निकट निपट नियर भइ बाता। अब लंका होइहें उत्पाता।८८२।	नौ मन सूत कबहीं नाहिं सझुरा। अब तो रावन रामहिं अंझुरा।८८३।				

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ५८			
सतनाम			कहे दरिया सुनु दासहीं, विवरन किया बनाए। रहनि गहनि निजु नाम है, दोविधा दूरि बोहाये॥		सतनाम	
			छन्द - ११			
सतनाम			गहिर ज्ञान निजु नाम, यह भव भरम सब विसरावहीं। अकह अंक इह बंक नाल में, पदुम झलाझलि आवहीं॥ झरत झरी तहाँ अगम निर्मल, मोती मनि छवि छावहीं। मिलहिं सत्तगुरु शब्द के धुनि, दरस दरिया पावहीं॥		सतनाम	
			सोरठा - ११			
सतनाम			ब्रह्म भेद निरलेप, जो मिलैं सत्तगुरु दया। सब दुख होय संक्षेप, पाप पुन्य नाहिं व्यापि है॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			गये विभीषण जहाँ हनुमाना। मिले प्रेम अति सुधर सुजाना।८८४। रावन हम कहँ दीन्ह निकारी। इमि कारन इहवाँ पगु ढारी।८८५। कृपा सिन्धु से भेंट करावहु। तृषा प्रेम सब प्यास मिटावहु।८८६। कर गहि हलिवंत लीन्ह लियाई। सन्मुख राम विभीषण आई।८८७। राम कहा लंकेश्वर राई। तुरतहि राज विभीषण पाई।८८८। अहै विभीषण दासन दासा। लंका निश्चर कोटि निवासा।८८९। निशिदिन भजन करहिं भगवंता। सुनु श्रीराम कहे हलिवंता।८९०। सुमिरन करत रहे रघुराई। रावन इन्ह कहँ दीन्ह दुराई।८९१। भगत अध कै कवत साथा। अस कहि बचन बोले रघुनाथ।८९२। भाव भजन जेहि भक्ति विरागा। सो जन जग मेंसदा सुभागा।८९३। सो कुल लायक कुल महँ टीका। सदा चरन पद पंकज नीका।८९४। सरगुन निरगुन निगम जो सोचै। कोटि करम अधपातक मोचै।८९५। जेहि कुल भगति सोई कुल लायक। नग है नाम सदा मोक्ष दायक।८९६। संत मत मोहिं अन्तर कैसे। हृदय कमल मम भ्रमर जैसे।८९७। मधुकर मालती घानिरस पाई॥ ज्यों रसना गुन गाय सुनाई।८९८। भक्ति बसी भगवंत विराजै। संत के निकट सदा शिर छाजै।८९९। साधु दरस जग महिमा कैसा। कोटि तीरथ दान पुन्य जैसा।९००।		सतनाम	
			41			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
वरन विवेक ना ब्राह्मण क्षत्री। रघुकुल कमल नाम निजु जंत्री।६०१।	साधु सरस गुन सब नर नीचा।। जैसे दीन मनि है ऊंचा।६०२।	साखी - ५६	कथब कठिन करनी कठिन, कठिन विवेक विचार।	गुरु पद पंकज मंजन करो, येहि विधि होय उबार।।	चौपाई	सुनो विभीषण कहें रघुराई। के बीर केइसन कीन्ह प्रभुताई।६०३।
पवन सुत महा बल भारी। लंका जारि वृक्ष उपारी।६०४।	धरि धरि दैत्य चपेटन्हि मारा। तब रावन पहुँ परा पुकारा।६०५।	राम प्रताप संक कछु नाहीं। बोले बैन सभो डर खाहीं।६०६।	ऐसन वीर निःशंक अमाना। रावन गर्व किया पिसि माना।६०७।	पैठत अंगद भय गयो रारी। परसस्त कुँवर के अगते मारी।६०८।	फिरि आये जहाँ रावन बैठा। देखत गर्वीं गर्वहिं ऐंठा।६०९।	उत्तर कै उत्तर बहुत उन्हि दीन्हा। कहत बात कछु संक ना लीन्हा।६१०।
रोपा चरन सभै परचारी। हारे दैत्य कोटि सब झारी।६११।	रावण गरजि कोपि कै धावा।। गिरि परा तब मटुक उठावा।६१२।	साखी - ६०	तब मोरे परतीति भयो, सही राम कर वीर।	मनसा वाचा करमना, भै भंजन मति धीर।।	चौपाई	आई कटक विकट गिरिकेता। शूर वीर सब सैन समेता।६१३।
राम लषन सुग्रीव कपिराई। बैठे वीर सबै शिर नाई।६१४।	दिवस बिते रजनी चलि आई। रघुवर दृष्टि दक्षिण के जाई।६१५।	गरजत धन अति होत अँदोरा। परत वृष्टि मानो प्रबल कठोरा।६१६।	छटा चमकि चहुं ओर चलि जाई। चपला चमके बहुत देखाई।६१७।	अचरज कौतुक अजब अनूपा। रघुवर बोले विभीषण भूपा।६१८।	होत गरद यह अगम अघाता। विभीषण भक्त कहो सत्त वाता।६१९।	मृदंग ताल सब बाजु अधोरा। मनि मानिक है छत्र चभोरा।६२०।
चपला चमके होत अंजोरा। तरिवन छटा चमकु चहुं ओरा।६२१।	चौक चांदिनी श्रृंग उतंगा। सिंहासन बैठे मस्त मतंगा।६२२।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
बीस भुजा दस मस्तक भारी। राम कटक लघु करत विचारी।६२३।	रहे असोच शिव वर टीका। राम कटक सब जानत फीका।६२४।	कोपे राम भयंकर भारी। काढह्यो सर कर धनुष विचारी।६२५।	मारेयो घौंचि बान कर तानी। गिरा छत्र मटुक भै हानी।६२६।	तरिवन तरकि रहा छितराई। बहुरि बान राम पहुँ आई।६२७।	साखी - ६१	
					मारा रघुवर बान ते, लंका परि गयो दंक।	
					लंक बंक गढ़ टूटिया, कोई ना रहा निःशंक॥	
					चौपाई	
सभ मिलि मंत्र जो कीन्ह बिचारी। मटुक गिरा असगुन भयो भारी।६२८।	कोपि बचन अस बोले अनीता। मटुक गिरे का का भ्रम बीता।६२९।	रही नाच सब गृह गृह जाई। रावन रहा मंदोदरि ठाँई।६३०।	कनक पलंग पर छिरकि सुगंधा। सेज बन्द झबू झल बंधा।६३१।	हीरा लाल मोती मनि लागा। करत विलास भोग रस पागा।६३२।	अति निसंक नींद तनु ग्रासा। मंदोदरी मन में बहुत उदासा।६३३।	संग सती बोली आमृत आमी। रावन गर्व सदा उर गामी।६३४।
अजहूँ ना मानत मन परतीती। राम के धनुष बान सर जीती।६३५।	अमल खाय सबके वर देहू। क्रोध भये पीछे घींच लेहू।६३६।	अइसन वर का दीन्हों वाके। राम से बैर करहु तुम जाके।६३७।	सुर नर बांधि सबे बस कीन्ह। भरमि भुलाना मति का हीना।६३८।	अब नाहिं रक्षा होय दशकंधर। मृत्यु माँगि लीन्ह मति अंधर।६३९।	राम द्राहे किमि भगत हमारा। कटिहें माथ खरग के धारा।६४०।	
					साखी - ६२	
					कहें शिव सुनु बचन भवानी, माया गर्व उत्पात।	
					ना मम भगत ना दास राम को, भरमि रसातल जात॥	
					चौपाई	
रैनि बिते बासर चलि आई। रवि के उगे त्रिमिरी छुटि जाई।६४१।	उठी मंदोदरी रावन साथी। करे गुनान माथ दे हाथा।६४२।	कहे रावन सुनु तिरिया सुभागी। किमि करि माथ हाथ तोर लागी।६४३।	नारी कुलक्षनी इनकर भाऊ। पिया पति निकट है कौन स्वभाऊ।६४४।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कहे मंदोदरि सुनु पिया मोरा। कहों बचन निजु मानु निहोरा।६४५।	राम बान है कठिन कठोरा। तड़पि तेज अति करत अंदोरा।६४६।	जापर परै रसातल जाई। धर धरनी पर जात नसाई।६४७।	मारयो ताड़कहिं एकै बाना। प्राण छुटा तन भव पिसि माना।६४८।	तुहऊँ चाप चढ़ावन गयऊ। ता दिन बल पौरुष नाहिं भयऊ।६४९।	करि गहि तानि तोरा उन्ह कैसे। खेलहिं शिशु संग धनुहीं जैसे।६५०।	छोड़हु बैर मिलहु ले सीता। नित नै बचन कहूँ मैं हीता।६५१।
अस कहि बचन बोला अभिमाना। तिरिया मंत्र तहाँ राज विलाना।६५२।	तिरिया मंत्र राज कहिं टीका। तोर बचन मोहिं लागत फीका।६५३।	तिरिया मंत्र दशरथ अति प्रीती। तन के त्यागो तिलक अनीती।६५४।	तिरिया मंत्र तपसी तन जाना। मृगा के पीछे ज्ञान भुलाना।६५५।	साखी - ६३	मंदोदरि मन में सकुचि के, भवन रही लजाये।	कहत सुनत नाहिं बनि परै, आमृत तेजि विषि खाये॥
चौपाई	आई कटक निकट नियराना। झलकत कंचन विदित अमाना।६५६।	देखि सैन महँ संशय भयऊ। कलप कठिन गढ़ इनकर रहऊ।६५७।	राम प्रताप तबे गढ़ टुटिहें। राम सर रावण सिर छुटिहें।६५८।	धन्य वै बीर अंगद हलिवंता। जिन्हि कल काट्यो फंद अनंता।६५९।	किमि गढ़ चढ़ि गयो दूनो वीरा। जिमि भूमि देखत काँपु शरीरा।६६०।	डारेउ वान सुदिन दिन राधेउ। राम नाम लिखि सर पर साधेउ।६६१।
बोलै लषण निजु वचन बिचारी। सुनु मंत्री तैं मंत्र हमारी।६६२।	सत्तपुरुष निजु धरि के ध्याना। तबहीं सर डारहु मैदाना।६६३।	जाते काम सुफल सब होई। पुर्खा नाम निजु सदा समोई।६६४।	जाकर हम हैं राम गोसाँई। युगल जग प्रभुता बल पाई।६६५।	लक्षुमण बचन राम कँह नीका। मानो सर्व ज्ञान का टीका।६६६।	लिखा लषन पाहन दिन्ह डारी। सबके मन घट भव उजियारी।६६७।	डारा बान दहिने बोलु कागा। कीन्ह विचार सगुन निक लागा।६६८।
रावन शिश पर काग कराना। वाकी मृत्यु निकट नियराना।६६९।	सुनि के कटक सबों हरषाना। करब समर टारब मैदाना।६७०।					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	बानर भालु कूदि सब ठाढ़ै । सबके तन रोष अति बाढ़ै । ६७१ ।	सतनाम	सैन समाज देखाहिं रघुनाथा । लषन धनुष कसि लिन्हों हाथा । ६७२ ।	सतनाम	रावन मंत्री जो पूछा बुलाई । अब तो सैन निकट चलि आई । ६७३ ।	सतनाम
सतनाम	असंख्य कटक लिए संग आपे । मानो मृत्यु काल जनु काँपे । ६७४ ।	सतनाम	मेघनाद गहि लिन्हो पाना । करि सलाम तब कीन्ह पयाना । ६७५ ।	सतनाम	साखी - ६४	सतनाम
सतनाम	इन्द्रजीत तब निकले, महा महावीर साथ ।	सतनाम	सैन सभे खड़बड़ी भई, देखहिं लषन रघुनाथ ।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	कोटि बान एक बेरि तड़पे । होत अँदोर जिमि बादल तड़पे । ६७६ ।	सतनाम	मरकट पाहन लेहिं उपारी । मारहिं एक बार देहिं सब डारी । ६७७ ।	सतनाम	फिरि मारहिं फिरि जाहिं पराई । मानो कौतुक खेलहिं बनाई । ६७८ ।	सतनाम
सतनाम	पवन सुत सैन सब ठाढ़ै । देखि भुजा बल अधिके बाढ़ै । ६७९ ।	सतनाम	अंगद सैन संग सब पासा । चढ़ि गिरि देखाहिं अजब तमाशा । ६८० ।	सतनाम	जामवंत जानि भालु सब गरजै । ठावहिं ठावहिं सभै कोई बरजै । ६८१ ।	सतनाम
सतनाम	इन्द्रजीत बान जब मारा । मानो बिजली छटा पसारा । ६८२ ।	सतनाम	यहाँ राम वहाँ रावन देखौ । महा महावीर समर लेखौ । ६८३ ।	सतनाम	कोइ धायल कोइ जिमि पर परई । सैन समूह खोज को करई । ६८४ ।	सतनाम
सतनाम	तीन पहर मंडे मैदाना । एक-एक बीर करहिं धमसाना । ६८५ ।	सतनाम	लषन धनुष बान जब परई । कोटि कटक नीचे होए डरई । ६८६ ।	सतनाम	मेघनाद गढ़ भीतर गयऊ । टिकी कटक डेरा तब भयऊ । ६८७ ।	सतनाम
सतनाम	बासर बितै रैनि चलि आई । पवन सुत चौंकी के जाई । ६८८ ।	सतनाम	कहे मंदोदरि तेजु भव भरमा । राम चरन पद जानु न मरमा । ६८९ ।	सतनाम	जाहि सुमिरे सब कुमति बिहाई । चारु फल बैठे गृह पाई । ६९० ।	सतनाम
सतनाम	उन्ह से समर करे जनि कोई । यमपुर जाइ महातम खोई । ६९१ ।	सतनाम	को है वीर करहिं प्रभुताई । रघुबर सैन समेटि चलाई । ६९२ ।	सतनाम	इन्द्रजीत कै देखिसी मारी । सैन समेटि वीर भूमि टारी । ६९३ ।	सतनाम
सतनाम	कुम्भकरन जगबे नाहिं किया । सैन समेटि चाभि ज्यों बीया । ६९४ ।	सतनाम	जब मैं धनुष लेब कर हाथा । काटि कटक बांध्यो रघुनाथा । ६९५ ।	सतनाम	अबहीं करहु बहुत पंउताइ । रहबहु लाज न बदन गोआई । ६९६ ।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ६५			
सतनाम			बार-बार तैं बोलसि, तोर मती भय गयो भर्म। सैन सभै धरि काटिहों, जानति हो मोर मर्म॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			इन्द्रजीत निकला बल भारी। कोटिन्ह वीर कटक सब झारी।६६७। एक-एक वीर महाबल योद्धा। बानन्हिं मारि सैन सब सोधा।६६८। एक-एक पाहन लीन्ह उपारी। फेकहिं कोटि कटक सब झारी।६६९। फेरि डारहिं फेरि जाहिं पराई। उलटि उखारि फिर पहुँचहिं जाई।१०००। इन्द्रजीत गहि मारा बाना। शक्ति लगा लक्षुमन तब जाना।१००१। इन्द्रजीत गहि सैन सकेला। जिमि पर जामवंत रहा अकेला।१००२। रण महँ मंत्र सिखावन लागे। राम चरन गहि लागु अभागे।१००३। छोड़ा तुहु तन देखहु ढीला। लागहु बकन बात अनमीला।१००४। बहुरि बोलसि जनि मूढ़ अज्ञाना। बानन्हि मारि करो पिसिमाना।१००५। रन महँ वीर बोले परचारी। वाम काम श्रृंगार सँवारी।१००६। गरजि उठा कहा नाहिं माना। दूवो वीर मंडे मैदाना।१००७। मारा जामवंत पूछा आई। उलटि जागार बहुरि फिर धाई।१००८।		सतनाम	
			साखी - ६६			
सतनाम			शूर सर्व संग्राम में, क्षत्रीय सन्मुख आये। राम कृपा सिर ऊपरे, सो पगु पीछे ना जाये॥		सतनाम	
			छन्द - १२			
सतनाम			दवरि दपटि सब वीर भूमि पर, लड़हिं सब परचारि कै। गरजि बान अति परत जिमि पर, तड़पि तेज तहँ आइकै। भागहिं मरकट निकट नाहीं, उलटि देखहिं सब जाइकै। वीर धीर सब ऐन बांके, समर करहिं बनाइकै॥		सतनाम	
			सोरठा- १२			
सतनाम			खेत जीत्यो परचारी, महा वीर बांके बड़े। सुर नर देखहिं झारी, कठिन त्रास तनु व्यापिया॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			लषन नगीच पवन सुत आये। निरखत अंग घाव नाहि पाये।१००९। लषन के तब लीन्ह उठाई। राम चरन पर पहुँचे जाई।१०१०।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	राम देखा जब लषन कुमारा। बड़ा विषाद तन भया बिकारा।१०११। है कोई जन जो युक्ति बतावे। बहुरि प्रान घट भीतर आवे।१०१२। कहे विभीषण सुनु रघुराई। सुख सैना यह युक्ति बताई।१०१३। वैद्य एक लंका मह टीका। यह सब पारष जानत नीका।१०१४। कहे विभीषण मोह तन भयऊ। शक्तवान तन प्रान ना गयऊ।१०१५। धर ग्रिह सब कहि समुझाई। गये पवन सुत वेगि लेआई।१०१६। आइ कटक मँह दीन्ह जगाई। भया त्रास तन बात न आई।१०१७। राम कहा विप्र सुनु बाता। डर जानि खाहु महामुनि ज्ञाता।१०१८। शक्ति बान लषन तन लहेऊ। है तन प्रान विकल अति भयऊ।१०१९। वैद्य कहे सुनो श्रीरामा। तनिक संजीवन है सब कामा।१०२०। धवला गिरि संजीवन अहई। जो कोइ जाइ प्रकट यह कहई।१०२१। पौधा तहाँ सजीवन मूरी। तब तन कै दुख होइहे दूरी।१०२२। राम कहा सुनो हनुमाना। तू अस वीर कवन परधाना।१०२३। राम काम के सदा हजूरी। गिरि संग लेहु संजीवनी मूरी।१०२४। करि प्रनाम विदा तब भयऊ। पवन गवन ते आगे गयऊ।१०२५। गये पवन सुत विलम्ब ना लाई। दैत एक मगु छेंकसि आई।१०२६। करे समाधि महामुनि जैसे। पाखांड भेष धरे कलि ऐसे।१०२७। सुन्दर भेष विविध कथे ज्ञाना। कर में माला जपे भगवाना।१०२८। गुरु ह सीख सिखावन लागा। पाखांड मंत्र प्रेम अति पागा।१०२९। पवन सुत तब बूझा विचारी। है कोई दैत मोह मद डारी।१०३०। काल नेमि बीचहिं धरि ठाटा। धरि पट क्यों तब छुटि गयो बाटा।१०३१। साखी - ६७ मारेउ तेहि पछारिके, गिरि से दिया गिराये। चले पवन सुत रोष अति, पल में पहुँचे जाये॥ चौपाई तनिक संजीवन होत सहाई। कर गहि गिरि एक लीन्ह उठाई।१०३२। विविध बन तामे सुठि भारी। अति बल भुजा तनिक नहिं हारी।१०३३। समित राम जुल रंग मिलि जाई। जीव सीव माया लपटाई।१०३४। ब्रह्म अखांडित तिरगुन शरीरा। माया मोह करुना तन पीरा।१०३५। माया परबल जानहिं गुन ज्ञाता। राम विकल देखे दुःख भ्राता।१०३६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

47

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
बिना मोह करुना नाहिं होई। आनन्द मंगल दुःख ना समोई।१०३७।	मोह सती मृथा जनि जानै। सामरथ के नर दोष ना आनै।१०३८।	राम सोच तन दुःख अति आवै। लषन बिना सीता नाहिं भावै।१०३९।	रह्यो एक संग भयो बिछोहा। हृदय विरह तन लागत मोहा।१०४०।	अर्ध रात्रि है पंथ निहारी। कपि नाहिं आये दुखित तन भारी।१०४१।	लीन्ह उठाय लषन नाहिं जागे। करि विवेक करुना तन लागे।१०४२।	पिता मोह मोर लषन मिटावा। सदा संग सब दुःख बिसरावा।१०४३।
दुसरे हरयो निशाचर सीता। जो कछु भीर लषन कर बीता।१०४४।	अब मोपे कछु कहत ना जाई। महा मोह तनु व्याकुल दहई।१०४५।	अवध जाइ कहब किमि बाता। महा विकल होइहैं निजु माता।१०४६।	लीन्ह उठाय सुनो हो ताता। मुख से बोलहु तनिक नाहि बाता।१०४७।	साखी - ६८	करुना करत विलाप अति, आये पवन सुत वीर।	संजीवनी रगरि पियाइया, मेटि गया तन पीर॥
चौपाई	लंका के वैद्य लंका के गयऊ। बहुरि पवन सुत कटक मह अयऊ।१०४८।	उठै लषन तब भै गयो नीका। सकल कटक विच मनि ज्यों टीका।१०४९।	सब मिलि मंत्र जो कीन्ह विचारी। होत प्रात फेरि युद्ध पसारी।१०५०।	दशकन्धर तहँवा चलि गयऊ। कुम्भकरन जहाँ सयन बनयऊ।१०५१।	विविध भाँति करि तेहि जगाई॥ उठा क्रोध कर अति अकुलाई।१०५२।	पूछे बचन सुनो हो ताता। कस मलीन तोर आठो गाता।१०५३।
किमि कारण तुम मोहिं जगाई। सो निजु अर्थ कहो समुझाई।१०५४।	तपसी समर कीन्ह बहु भाँति। मार्यो कटक कीन्ह उत्पाती।१०५५।	जग जननी हरि ल्यायहु जबहीं। लंका विपत्ति पराहै तबही।१०५६।	शिव के बर तुम रहहु असोचा। इह संकट कहु कैसे मोचा।१०५७।	अब तुम बैर राम से कीन्हा। दीनबन्धु कर्ता नाहिं चीन्हा।१०५८।	क्षुधावंत मोहिं आउ ना बाता। महिषा मद मंगावहुं ताता।१०५९।	खाइसि मांस गर्व तन फूला। हमसे वीर कवन यह तूला।१०६०।
एक मद तन काया कलवारी। लागा बकन नाहीं बात सँभारी।१०६१।	सुनो तात मैं कहों विचारी। मारों कटक सैन सब झारी।१०६२।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	उठा गरज करि तबहीं कैसे । मानो काला घटा है जैसे । १०६३ ।	सतनाम	सुर सब कंपति भये दुखारी । त्राहि त्राहि भगवान पुकारी । १०६४ ।	सतनाम	वीर भूमि चढ़ा परचारी । मरकट पाहन लीन्ह उपारी । १०६५ ।	सतनाम
सतनाम	मारहिं एक बार सब जाई । धरि धरि फेकहिं कहीं छितराई । १०६६ ।	सतनाम	लेइ लपेटि मुखा महँ नाई ॥ कान नाक पै जाइ पराई । १०६७ ।	सतनाम	परे पाहन तन दुख ना व्यापे । गरजे कोपि कटक सब काँपे । १०६८ ।	सतनाम
सतनाम	नल नील वीर हनुमाना । मारहि पाहन वज्र समाना । १०६९ ।	सतनाम	अंगद भालु जामवन्त बीरा । करहिं युद्ध देखाहिं रघुवीरा । १०७० ।	सतनाम	साखी - ६६	सतनाम
सतनाम	वानन्हि मारि सहिल कियो, खँसा धरनी पर आये ।	सतनाम	धन्य धन्य कटक पुकारहिं, प्रभुता कहा न जाये ॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	कुम्भकर्ण जब रन में जूझा । दशकंधर तपसी बल बूझा । १०७१ ।	सतनाम	हृदय सोच मुख बात ना आवै । अति है गर्व आंख नाहिं लावै । १०७२ ।	सतनाम	इन्द्रजीत कहँ लीन्ह बुलाई ॥ करो समर मारो दूनो भाइ । १०७३ ।	सतनाम
सतनाम	वेदुओं मरे कटक आरोई । शिव के वर तब होत सहाई । १०७४ ।	सतनाम	निकला कोपि कीन्ह बड़युद्धि । टारयो सैन माया बल बुद्धी । १०७५ ।	सतनाम	गरजि बान अति होत अधाता । जिमि पर युद्ध होत उत्पाता । १०७६ ।	सतनाम
सतनाम	रावन सैन संहारेयो केता । इन्द्रजीत तब छोड़ेयो खोता । १०७७ ।	सतनाम	यज्ञ आरंभ तब कीन्हो जाई । आहुति होम बहुत चितलाई । १०७८ ।	सतनाम	बहु विधि कीन्हो यज्ञ को साजा । इहि मँह बोले विभीषण राजा । १०७९ ।	सतनाम
सतनाम	करहिं यज्ञ तब जीते ना कोई । मारहिं कोटि कटक सभ दोई । १०८० ।	सतनाम	बोले लषन कोपि कै बानी । राम सपथ करिहों तेहि हानी । १०८१ ।	सतनाम	गये लषन सब सैन समेता । जहाँ यज्ञ जिमि रोप्यो खोता । १०८२ ।	सतनाम
सतनाम	वानर भालु सब मारहिं बनाई । खैंचि केश तब लीन्ह उठाई । १०८३ ।	सतनाम	किहिसी युद्ध कोपि कर जागा । वाके तेज कटक सब भागा । १०८४ ।	सतनाम	फिनि वै समर कीन्ह सौवारा । मारा लषन तन भै गयो वारा । १०८५ ।	सतनाम
सतनाम	साखी - ७०	सतनाम	भुजा फेंका उखारि के सिलोचना के पास ।	सतनाम	देखत अति विषमय भई, तन में उपजी त्रास ॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तीन त्याग कवन परि हरई। जाके मारे पिया मोर मरई।१०८६।	सतनाम	चीन्हो भुजा तब करों उपाई। तन मन वारि पिया संग जाई।१०८७।	सतनाम	तुँहु पति मोर पत्नी पति जानी। कर गहि खरिया दीन्ह तब आनी।१०८८।	सतनाम
सतनाम	तुँह पति मोर हो मैं तुअ नारी। लिखो खरी सभ अर्थ विचारी।१०८९।	सतनाम	खौँचि जिमि पर अंक कै रेखा। इन्द्रजीत तब भुजा विशेषा।१०९०।	सतनाम	कन्द्रप कामिनि कबहिं ना रीता। भोजन नींद जानि उन्ह जीता।१०९१।	सतनाम
सतनाम	द्वादश वर्ष योग जो जाना। तीन बसतु दिल कबही ना आना।१०९२।	सतनाम	दशरथ तनय लषण है नाऊँ। मारा मोहिं भुजा बल ठाऊँ।१०९३।	सतनाम	सन्मुख सुर होए रन में जूझा। निश्चय बचन सिलोचना बूझा।१०९४।	सतनाम
सतनाम	रावन आगे बात जनाई। इन्द्रजीत रण जूझा जाई।१०९५।	सतनाम	मैं जाइब जहवाँ पति मोरा। बहुत विनय कै किन्ह निहोरा।१०९६।	सतनाम	रावन सुनत शोक अति भयऊ। हृदय दुखित मुख बात न अयऊ।१०९७।	सतनाम
सतनाम	जहाँ सुत नारी तहाँ चलि गयऊ। बहु विधि भाँतिन्हि वोहि बुझयऊ।१०९८।	सतनाम	तब दृढ़ कै ऐस बोला बानी। इन्द्रजीत बल भुजा बखानी।१०९९।	सतनाम	ऐसन सुत मोरे गृह जनमा। किहिसि युद्ध जाने सभ मरमा।११००।	सतनाम
सतनाम	तपसी बांधले आवहु दोऊ। हृदय प्रेम नयन अति छोहू।११०१।	सतनाम	जो कुछ करब सभै अति नीका। बिना दीपक मंदिर है फीका।११०२।	सतनाम	बाम काम कवन जग अहई। बिनु पियाजिए कवन फल लहई।११०३।	सतनाम
सतनाम	दीजै हुकुम जनि बात बढ़ाये। अति परिपंच काह गुन गाये।११०४।	सतनाम	तब लंकेश्वर बोले बानी। धन्य कहे जग सोई मत ठानी।११०५।	सतनाम	चैपहला पर डारि ओहारा। पाँच सात तेहि लागु कँहारा।११०६।	सतनाम
सतनाम	त्यागा हित अनहित घर बारा। त्यागा कुल सकल परिवारा।११०७।	सतनाम	साहस करि तब चली विचारी। त्याग्यो लाल रतन सब झारी।११०८।	सतनाम	सबै त्यागि पान मुख दीन्हा। ऐसा भोग जगत मँह कीन्हा।११०९।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - ७१	सतनाम		सतनाम
			राम लषन संग सैन, चातुक रहे निहारी।			
			सीतहिं पठाएवो रावना, रहा भुजा बल हारी॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	50	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	बोले राम सुनु मंत्री ऐसे। इन्द्रजीत की तिरिया जैसे।१९१०।	सतनाम	सन्मुख आय किन्ह परनामा। वदन छिपाय बोलै श्रीरामा।१९११।	सतनाम	आज्ञा कवन कहो सती भाऊ। किमि कारन तुम हम पँह आऊ।१९१२।	सतनाम
सतनाम	त्रिभुवन नाथ मैं सदा अनाथा। कृपा करहु मैं होहुँ सनाथा।१९१३।	सतनाम	विनय किन्ह सुनो रघुनाथा। इन्द्रजीत कै दीजिए माथा।१९१४।	सतनाम	बोले राम तब बचन विचारी। चीन्हि के माथा लेहु निकारी।१९१५।	सतनाम
सतनाम	मैं पतिनी पतिव्रत जो ठानी। मन बच क्रम और नाहिं जानी।१९१६।	सतनाम	वृगसा नयन मुँह मुसुकाना। तब पतिनी पति लीन्ह अपाना।१९१७।	सतनाम	धड़ औ माथ दीन्ह रघुनाथा। जरी तुरन्त खसम के साथ।१९१८।	सतनाम
सतनाम	धन्य धन्य कहो प्रेम अति लयेऊ। प्रीति सदा गुन परगट भएऊ।१९१९।	सतनाम	साहस प्रेम अग्नि नाहिं जाना। अति प्रेम जनु चढ़ी वेवाना।१९२०।	सतनाम	साखी - ७२	सतनाम
सतनाम	तब रावन विषयम भई, अब कछु कहा न जाये।	सतनाम	महि रावण कँह सुमिरहिं, उभय पहर में आये॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	तेहि सों मन्त्र जो कीन्ह विचारी। अब कछु प्रभुता करो सम्भारी।१९२१।	सतनाम	हीत प्रीति करि इह बड़ कामा। ऐ दूवौ बाँधि ले आवहु धामा।१९२२।	सतनाम	देवी पर शिर आनि चढ़ावहु। तृप्ति होय महा फल पावहु।१९२३।	सतनाम
सतनाम	रावन बहुत जो कहा बुझाई। तब उनके दिल निश्चय आई।१९२४।	सतनाम	बाँधि लेउँ सिर काटो जाई। अस प्रभुता बल कीन्ह बड़ाई।१९२५।	सतनाम	सुत बैर तुम्हें देउँ दिखाई। काटों सात खण्ड तेहि जाई।१९२६।	सतनाम
सतनाम	भये विदा तब चले तुरन्ता। खोजत खोजत भेटिन्ह अन्ता।१९२७।	सतनाम	फेरि चले फिरि भटका ठाढ़ा। चहुँ ओर चौकी है बड़ गाढ़ा।१९२८।	सतनाम	करे विचार अति गर्व गुमाना। बाँधि लेऊँ दूनो अनुज अमाना।१९२९।	सतनाम
सतनाम	राक्षस माया दीन्ह अति डारी। ग्रासेउ नीद कटक सब झारी।१९३०।	सतनाम	सुख मनि साँपिन्हि बसे बेकारा। जिनह यह डसे सकल संसारा।१९३१।	सतनाम	ज्ञान चेतनि युक्ति जो जानै। उदित ब्रह्म भौ कबहिं ना आनै।१९३२।	सतनाम
सतनाम	जागत सोवत शब्द समाई। मनसा कामिनि पास ना आई।१९३३।	सतनाम	नैन रूप मह रहे समाई। करै चेतनि बिलग होय जाई।१९३४।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ७३			
सतनाम			महि रावन तब पहुँचा, जहाँ सोवल लषन रघुवीर।		सतनाम	
			हलिवंत चौकी चहुं ओर, महा कटक भव भीर॥			
			चौपाई			
सतनाम			इमि करि यम जीव कँह ठगई। पर बस परे दगा बड़ करई।१९३५।		सतनाम	
			नाम प्रतीति भक्ति जो जानै। आमृत नाम सुधा सम सानै।१९३६।			
सतनाम			जहाँ सुधा तहाँ विष नाहीं जाई। विमल प्रेम सदा सुखदाई।१९३७।		सतनाम	
			जागत रैन मुसे नाहिं चोरा। सत्तगुरु बचन करहु जनि भोरा।१९३८।			
सतनाम			महा मोह फंद बड़ भारी। बान्ध्यो तुरन्त फांस गृह डारी।१९३९।		सतनाम	
			गोरखा जागे साधि शरीरा। हलिवंत जागे सोवें रघुवीरा।१९४०।			
सतनाम			नाम देव कलि जागे ऐसे। दास कबीर ज्ञान मत जैसे।१९४१।		सतनाम	
			मछिन्द्रा जागो सब केहु जाना। सत्तगुरु भेद विरले पहिचाना।१९४२।			
सतनाम			दूओ जने ले चलि भयो कैसे। मानो मोल दास लिए जैसे।१९४३।		सतनाम	
			पहुँचा गृह में पैठा जाई। सोई तिरिया तहाँ बात जनाई।१९४४।			
सतनाम			देखे तिरिया सुन्दर वर दोऊ। राजकुमार कोमल है सोऊ।१९४५।		सतनाम	
			परम सुन्दर हहिं अति छवि नीका। इनके राज लक्षन का टीका।१९४६।			
सतनाम			जतन करहु जनि मारहु भोरे। करौं विनय सुनु मानु निहोरे।१९४७।		सतनाम	
			नयन नारी नीचे ढरि पानी। पर पिया देखि सदा ललचानी।१९४८।			
सतनाम			वै मातु पिता हम सुत कै जानी। उत्तम पुरुष किमि करौं बखानी।१९४९।		सतनाम	
			इनसे बैर करे जनि कोई। यमपुर जाइ रसातल सोई।१९५०।			
सतनाम			मन्दोदरी बचन रावन नाहिं माना। इमि करि पिया तुम भरम भुलाना।१९५१।		सतनाम	
			देवी भूखी बहुत दिन भयऊ। ए दूओ माथ चढ़ावन चहऊँ।१९५२।			
सतनाम			बाजन बाज देवी हरषानी। नेवज बनाय थार भरि आनी।१९५३।		सतनाम	
			मुसुक बाँधि बोले अभिमाना। घैँचि खरग अस करे तिवाना।१९५४।			
सतनाम			काकर तुम हो को तुम्हें जाना। सुमिरहु ताहि जो इष्ट बखाना।१९५५।		सतनाम	
			इनके मारे का फल पैहो। महा कठिन दुख दारुन सहिहो।१९५६।			
सतनाम			कस तिरिया तैं बोलसि अनीती। इनसे तुमसे कब के प्रीती।१९५७।		सतनाम	
			जन्म जन्म को जाने मरमा। कहीं भक्ति कहीं भव में भरमा।१९५८।			
सतनाम					सतनाम	

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ७४			
सतनाम			दुनो समुझि करि राखिए, ना तो कर मीजि फिरि पछताये। जहाँ से बाँधि लेआयहू तहाँ देहु पहुँचाये॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			उठी कटक तब परा खँभारा। राम रुप नाही लषन कुमारा।११५६।		सतनाम	
			उठी पवन सुत शून्य जो देखा। चहुँ ओर राम लषन कहं पेखा।११६०।			
सतनाम			चहुँ और दौरि लंगूर जो पटकैं। बोलैं गरजि जिमि बादर कड़कैं।११६१।		सतनाम	
			दौरि दपटि खोजें चहुं जाई। महि रावन की बात जनाई।११६२।			
सतनाम			यमकातरी तोरि पहुँचा जाई। देबी दाबि तहाँ रहा छिपाई।११६३।		सतनाम	
			तब ओयल देव घर में गयऊ। नगर लोग सब देखन धयऊ।११६४।			
सतनाम			लंका रावन भया अचिन्ता। अति बल गर्वमहारन जीता।११६५।		सतनाम	
			नारी पुरुष मिलि बाजी लाई। पासा ढारहिं बहुत बनाई।११६६।			
सतनाम			मैं जीतो तपसी तन धाता। तू जीतसि लंका उत्पाता।११६७।		सतनाम	
			सुमिरहु जो तोहरे है कोई हीता। मारों माथ विलम्ब बहु बीता।११६८।			
सतनाम			अब तो परहु संकट मँह नीके। चीक हाथ अजया ज्यों बीके।११६९।		सतनाम	
			मरकट भालु कटक तुम साजा। मारनि चाहो लंकेश्वर राजा।११७०।			
सतनाम			अब तो फंद परहु तुम आई। करिहो इहँवा कवनि प्रभुताई।११७१।		सतनाम	
			नयन सुखा मुख बात ना आवै। कहो कछु तोहरे दिल भावै।११७२।			
			साखी - ७५			
सतनाम			लषन कहा सत्तपुरुष हैं, जाकर मैं निजु दास। मोर सेवक हनुमान हैं, रावन माने त्रास॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			पायहु शून्य बजावहु गाला। करि देखलाइत तोहरो हाला।११७३।		सतनाम	
			प्रसाद पाय जो भरि पेट घटका। उठा कोपि जिमि पर पटका।११७४।			
सतनाम			तचा घुमाय तहाँ दे मारी। जहाँ नारी पुरुष खेले पासा सारी।११७५।		सतनाम	
			नगर अनाथ लोग अकुलाना। धन्य पवन सुत करें बखाना।११७६।			
सतनाम			राम दोहराई तेही छोड़ दीन्हा। मारि चपेटन्हि बहुत खून कीन्हा।११७७।		सतनाम	
			छोड़ि बाँध बाहर चलि गयऊ। देखत कटक सबै मिलि धयऊ।११७८।			
सतनाम			छुइ छुइ चरन कीन्ह प्रनामा। आनन्द मंगल पूरन कामा।११७९।		सतनाम	
			महिरावण के बल तुम राखा। सोरि उपारि मरोरसि साखा।११८०।			
सतनाम			53		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अब ना कहो कवन प्रभुताई। सिया ले मिलहु तुरन्तहिं जाई।११८१।	सतनाम	होइहें सब किछु जो तुम बचिहो। लंका राज बहूरि फिर मचिहो।११८२।	सतनाम	कहे दशानन मुख का मोरिहों। तपसी तन त्रेन जनि तोरिहों।११८३।	सतनाम
सतनाम	बीस भुजा दस धनुष जो राखा। छुटिहें बान अनेकन शाखा।११८४।	सतनाम	काल ब्याल फन्द सब डारों। काटि कटक दूनन्हि के मारो।११८५।	सतनाम	काटि कटक सब सैन ओराना। तबहुँ ना गर्व तेजहु अभिमाना।११८६।	सतनाम
सतनाम	नाती पूत भ्राता सब गयऊ। हमरे जिये कवन फल लहेऊ।११८७।	सतनाम	अब हम समर करब अति नीका। मोरे मारे कटक नहिं टीका।११८८।	सतनाम	साखी - ७६	सतनाम
सतनाम	पेन्हि स्नाह संजोर सब, उठा गरजि करि कोपि।	सतनाम	भया भ्रम सब कटक में, चहुं ओर डारसि तोपि॥	सतनाम	छन्द - १३	सतनाम
सतनाम	महावीर यह वीर बाँके, बान सरासर छूटिया॥	सतनाम	होत गरद जब परत जिमिपर, एक एक सिर टूटिया॥	सतनाम	कटक भागे पटकि सीस सब, झपटि सबै मिलि जूटिया॥	सतनाम
सतनाम	काल ब्याल सब फंद डारयो, लषन रामहिं लूटिया॥	सतनाम	खोरठा - १३	सतनाम	पाहन लिन्ह उपारी, धरि पर्वत सिर डारिया।	सतनाम
सतनाम	पवन तनय कीन्ह मारी, रावन रोम ना टूटिया॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	कहे नारद सुनो खगराया। वाध्यो नाग फाँस धरिकाया।११८९।	सतनाम
सतनाम	दौरहु वेगि छुड़ावहु जाई। राम लषन के लेहु मुकताई।११९०।	सतनाम	चले गरुर तब किन्ह पखाऊ। देखत नाग फाँस छुटि जाऊ।११९१।	सतनाम	छूटे राम लषन दूनो भाई। रावन बात अचम्भो खाई।११९२।	सतनाम
सतनाम	बहुरि कटक सब इठि उठि ठाढ़ै। पवन सुत रोष अति बाढ़ै।११९३।	सतनाम	द्रुम उपारि घुमावहिं कै से। परे बज्र सिर ऊपर जै से।११९४।	सतनाम	रावन गरज उठा फिनि झारी। राम कटक कहँ लागी कारी।११९५।	सतनाम
सतनाम	राम धनुष बानकर धींचा। मारा माथ परा जिमि नीचा।११९६।	सतनाम	फेरि जागा निशाचर राया। बहुरि किन्हिसि फेरि परगट माया।११९७।	सतनाम	अन्धकार कछु नजरि न आवै। सूरज कला के जाय छपावै।११९८।	सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मारा राम तम सब छूटा। दशकंधर के सिर तब लूटा।११६६।	दसशीश छीन रावन पत नैउ। सूर नर वन्द सबै छुटि गयऊ।१२००।	आरति मंगल सब मिलि गाया। राम प्रताप चहुँ दिशि छाया।१२०१।	युद्ध बड़ी संक्षेप बखाना। कवि आखार से भेद अमाना।१२०२।	बात बढ़ाय कह्यो कवि केता। भक्ति ज्ञान प्रेम निजु हेता।१२०३।	साखी - ७७	
आनन्द मंगल सुर नर, रहें सभे हरषाये।	सीता कली कमल की बृगसी, भानु दुति छबि छाये॥	चौपाई	कटक टिकाय अनुज लिए साथ। सिया के पास चले रघुनाथा।१२०४।	हेम के तेज कमल ज्यों सूखा। सीता बदन इमि कर दूःखा।१२०५।	परी चरन रज तिलक सँवारी, सदा शीतल तन मन सब वारी।१२०६।	सिया सुफल धरी मिलु श्रीरामा। आनन्द मंगल पूरम कामा।१२०७।
लषन प्रनाम किन्ह सिर नाई। दीन्ह अशीष भगति पद पाई।१२०८।	सिया पति प्रेम प्रिया रघुनाथा। जुगल रहे जीव शिव एक साथ।१२०९।	शशि शीतल सर्व अमी अनूपा। जल में कमल कली बृगसी सरूपा।१२१०।	राम नाम मानो आमृत बरीसा। प्रेम प्रवाह सदै सुख जैसा।१२११।	सीप तृया तन सदै सनेहा। परे बूँद तब उपजै देहा।१२१२।	सेवाती संग संयोग बनाया। सीप सिन्धु मुक्ता मनि पाया।१२१३।	दशरथ तनय तप किन्ह क्षेमा। जनक सुता बृगसी अति प्रेमा।१२१४।
सब विधि आनन्द पूरन काजा। तिलक दीन्ह भभीषण राजा।१२१५।	भभीषण भूप मदोदरि रानी। कहा विरंचि वेद यह बानी।१२१६।	संसे सागर सब घट अहई। राज काज मद सब कोई चहई।१२१७।	सागरे कुल के कीन्हों नाशा। तब वै राज भभीषण पासा।१२१८।	माया प्रबल है फंद अनंता। ज्ञान घोरि माया बिच तंता।१२१९।	कुल के घात पाप बड़ अहई। मुक्ति छोड़ि भव सागर परई।१२२०।	ना पतिआहु तो साखी साँचा। भक्ति विवेक ज्ञान ते बाँचा।१२२१।
कृष्ण कहा पांडव से बानी। कुल के घात पाप बड़ आनी।१२२२।	मोर मुक्ति कहु कैसे पाई। जब लगि प्रेम भक्ति नहिं आई।१२२३।					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ७८			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	संत दरस दिल चाहिए, बेदरदी बेपीर।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			धन्य सोई धन्य ज्ञान है, मन माया है बीर॥			
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	अंगद कपि जामवंत साथा। लषन सैन संग रघुनाथा।१२२४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			कनक कोट से बाहर भयऊ। अती हरष गुन किमि कर गयऊ।१२२५।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जोजन चारि तहाँ सब टीका। कटक बीच राम मनि नीका।१२२६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			उठी प्रात सभै सिर नाई। धीर वीर सब सैन सोहाई।१२२७।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	लषन राम सिया बिच शोभा। अति है हरष राम पद लोभा।१२२८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			मगु में मगन आनन्द विराजै। राम प्रताप सिया सिर छाजै।१२२९।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	गुढ़ सुमेर तब पहुँचे आई। सब मिलि बन फल खावहिं जाई।१२३०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			बैठि कटक सभै कोइ साथा। सुग्रीव प्रेम प्रिया रघुनाथा।१२३१।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	उठि प्रातः तब चले तुरन्ता। जहाँ सागर बाँध कीन्ह एकअन्ता।१२३२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सेत बाँध तहाँ कटक विराजै। सिन्धु उतंग लहर तहाँ छाजै।१२३३।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जहाँ रमेश्वर थाप बनाई। पर दक्षिण करि चले गुसाई।१२३४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			कानन भेंटा महा मुनि ज्ञाता। कीन्ह प्रनाम प्रेम अति राता।१२३५।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	चित्रकुट कटक तब आई। प्रथम बन जहाँ राम सोहाई।१२३६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			उठी महा मुनि आशिष दीन्हा। करि प्रनाम प्रीति अति कीन्हा।१२३७।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	कोल किरात भील सब धाये। राम चरन रज शीश नवाये।१२३८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ७९			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	राम चरन रज प्रीति करि, अति आनन्द गुन गाये।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			धन्य दर्शन तुम राम पद, संतन सदा सहाये॥			
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	रैन रहे निजु मुनि के साथा। सब विरतंत कहै रघुनाथा।१२३९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			करि प्रनाम आगे पगु दीन्हा। सब मुनि उठि प्रदक्षिन कीन्हा।१२४०।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	आय प्रयाग निकट नियराई। अति आनन्द भयो अंग ना समाई।१२४१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सुर-सरि सर्व कटक स्नाना। सिया राम पद पंकज ध्याना।१२४२।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	घर मुख प्रीति प्रयाग पुर आई। जहाँ भारद्वाज मुनि मंदिल सोहाई।१२४३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			आशीर्वाद मुनि धन्य श्रीरामा। दैत्य निकन्दन पूरन कामा।१२४४।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	रैन रहे बिरतंत सुनाया॥ भारद्वाज मुनि गुन सब गाया।१२४५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			56			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सिया के मिली महामुनि नारी। अतिहै मगन प्रेम रस डारी।१२४६।	जनक सुता तुँव सदा सजानी। जहाँ मनी बरे दीया नाहिं आनी।१२४७।	राज गुरु मुनि सब दीन भयऊ। भक्ति प्रेम निजु कथा सुनयऊ।१२४८।	सर्व जोति जगत मनि जैसे। अवरि भारजा जगबहु वैसे।१२४९।	तिरिया सोई प्रेम प्रिया नीका। भूषण बसन भक्ति बिनु फीका।१२५०।	पतिवर्ता के गले नाहिं मोती। सब खिसयन में झलके जोती।१२५१।	लघु नाहिं वचन मोद मन भरई। सो पत्नि पति पायन परई।१२५२।
ललित भक्ति सोई नयनीता। तिरिया प्रेम पद पंकज हीता।१२५३।	युगुल रहे जग आखर दोऊ। मुक्ति माँगि आमृत फल सोऊ।१२५४।	सोई शिव सोई शक्ति बखाना। धन्य धन्य जग में सो परधाना।१२५५।	साखी - ८०	राम मूरति तुममें बसे, तुम मन बसहु जो राम।	सदा युगल एक साथ है, सब विधि पूरन काम॥	चौपाई
तुम सब लायक किमि मैं कहेऊ। महामुनि तिरिया ज्ञान पद लहेऊ।१२५६।	तुम सब सुघरि सकल गुन हीता। मुनि पद पंकज सदा पुनीता।१२५७।	करि प्रनाम अवधपुर गायऊ। नर नारी सब हर्षित भयऊ।१२५८।	कौशिल्या, कैकई, सुमित्रा माता। कीन्ह प्रनाम प्रेम निजु हीता।१२५९।	आरती मंगल सब मिलि साजा। बहुत आनन्दित बाजन बाजा।१२६०।	करहिं निष्ठावरि देहिं सब दाना॥ पाठ पुराण भक्ति भगवाना।१२६१।	गुरु के चरन धरा बहुत भाँती। उपजा प्रेम नयन चहुँ पाती।१२६२।
मुनि के लेइ मंदिल में गयऊ। यज्ञ पवित्र कै पूजा करेऊ।१२६३।	भोजन करहिं विप्र सब आई। दक्षिना दान दीन्ह रघुराई।१२६४।	भरत लषन शत्रुघन साथ। सब मिलि तिलक दीन्ह रघुनाथा।१२६५।	राजा राम सीता भव रानी। सब घट बृगसित आमृत बानी।१२६६।	अवध के लोग सब सुखद अनंदा। जल में कुमुदनी पूरन चंदा।१२६७।	सभै बुलाय बोले मृदु बानी। भवन सुगन्ध सुधा सम सानी।१२६८।	साखी - ८१
तिलक दीन्हों निजु राम कहँ, बैठि सिंगासन जाये।	नाद वेद सब विमल बोलत, मुनि अमृत कथा सुहाये॥					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम		
सतनाम	मोह कोह सब दूरि विलगयो, आनन्द मंगल गावहीं। सखी सुगन्ध सब रंग शोभा, चंदन चर्चित लावहीं॥ भूषण बसन जराव झलकत, कली सुन्दर सोहावहीं। रूप राशि शिया सर्व सुन्दरी, भवन बीच मनि आवहीं।	सतनाम	खोरठा - १४	सतनाम	भव पूरन काज, संसय सकल विहाईके॥ अवधपुरी में राज, कुल कँवल रघुवंश मनि॥	सतनाम		
सतनाम	चौपाइ	सतनाम	कटक विदा कीन्ह श्रीरामा। पहुँचे निजु सब अपने धामा।१२६६। बालमीकि मुनि तुलसी भाषा। राम चरित्र जगत रचि राखा।१२७०। कह्यो ज्ञान निजु कथा प्रसंगा। भक्ति विवेक मोह होए भंगा।१२७१। आदि अंत पूछा सिख आई। सुक्षम कथा नीजु ज्ञान सुनाई।१२७२। भक्ति विवेक औ ज्ञान विरागा। आतम दरश ज्ञान तब जागा।१२७३। संत बचन निजु करहिं विवेषा। निगम निषेद ज्ञान बिच देखा।१२७४। ज्ञान रसिक बिनु मन नाहि थीरा। चंचल इमिकर सकल शरीरा।१२७५। अष्ट योग कष्ट करि बाँधै। उलटि पवन ब्रह्मण्डहिं साधै।१२७६। नेउरी नट नाचे बहुतेरा। काल कठिन तन छोड़े ना डेरा।१२७७। सर्व व्यापिक सुर नर माता। संसृत मोह सुखद तन राता।१२७८। मोह विटप उर पट लिए हाथा। मदन मनोहर गनि गुन गाथा।१२७९। युक्ति ना योग कुजोगहि राता। जिमि जरि कसि के टूटे ना पाता।१२८०। रतन भारजा भव भ्रम साँचा। मोर मगन बन इमिकर नाचा।१२८१। नयन रूप दृष्टि मँह पेखै। शक्ति छबि सब ब्यापिक देखै।१२८२। सुख मनि या तन ग्रास्यो जबहीं। कामिनी रूप मनि छबि धरू तबहीं।१२८३। कन्द्रप धरिके लेत निचोरी। सुख अति प्रापित आमृत बोरी।१२८४। सत्तगुरु दया दृष्टि जब देखै। तब गति ज्ञान सुधी तन होवै।१२८५।	सतनाम	साखी - ८२	सतनाम	सत्तगुरु चरन सुधा सम, विनय कीन्ह सिर नाये। ज्ञान गमी निजु भाखिये, सुनो श्रवन चित लाये॥	सतनाम
सतनाम	58	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम		

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तुम सत्तगुरु हो ज्ञान कै टीका। भेष भरम मोहिं लागत फीका।१२८६।	सतनाम	सतगुरु चरन सुधा सम लइहो। विमल चरन पद पंकज पइहो।१२८७।	सतनाम	महा महा मुनि बिमल पुनीता। वेद विदित पढ़ि गुरुगमि गीता।१२८८।	सतनाम
सतनाम	इन्ह पुरुष नाहिं किमि कर जाना। माया ब्रह्मा नाहीं पहचाना।१२८९।	सतनाम	तब तुम जग में रहेऊ कि नाहीं। पूछे बिना भरम नाहिं जाहीं।१२९०।	सतनाम	करहु विवेक कहो समुझाई। विमल प्रेम निजु कथा सुनाई।१२९१।	सतनाम
सतनाम	जो यह देखो सोई सभ जानै। सोई ताकर मूल बखानै।१२९२।	सतनाम	तब हम रहौं पुरुष के पासा। पुहुप दीप जहाँ प्रेम सुबासा।१२९३।	सतनाम	तखत पास पुहुप की खानी। तहाँ बैठे रहें सुकृत ज्ञानी।१२९४।	सतनाम
सतनाम	हंसन्हि पास विनोद बेलासा। अमृत झरि वर्षो चँहु पासा।१२९५।	सतनाम	वेद पुरान कथा सब कीन्हा। इमिकरि पुरुष नाम नाहिं चीन्हा।१२९६।	सतनाम	ब्रह्मा वेद विदित जग जानी। तीन लोक इमि कथा बखानी।१२९७।	सतनाम
सतनाम	तीरथ ब्रत योग तप करई। मुनि मत आपन सुख सभ लहई।१२९८।	सतनाम		साखी - ८३		सतनाम
सतनाम		सतनाम	तब हम अमरापूर मैंह, पुहुप पलंग सुख बास।		आमृत झरि चहुँ चाखहीं, सुनहु बचन निजु दास॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई			सतनाम
सतनाम	तब रहे धरती धर्म और दाया। तब रहे द्रुम पत्र औ छाया।१२९९।	सतनाम	तब रहे वेद विदित जग जानी। तब रहे संग औ शिव भवानी।१३००।	सतनाम	तब रहे गंगा, यमुना नीरा। तब प्रगट जग बड़ बड़ी वीरा।१३०१।	सतनाम
सतनाम	नव नाथ रहे गोरखा योगी। भगत भेष भूप रस भोगी।१३०२।	सतनाम	जहाँ तहाँ मुनि सभ जप तप करई। यज्ञ योग निसु वासर लहई।१३०३।	सतनाम	विविध फूल रहे पत्र अनंता। लता लपटि अरुझै मुनि संता।१३०४।	सतनाम
सतनाम	सत्तगुरु मत्त तब जग नाहिं रहई। आपन आपन गुन सब कहई।१३०५।	सतनाम	चौथा लोक है मुक्ति कै मूला। आवा गमन मेंटै सब शूला।१३०६।	सतनाम	यम कागज करि कियो निशंका। भव में भरम भया निःलंका।१३०७।	सतनाम
सतनाम	साम्रथ सत्त जेहि होहिं सहाई। औगुन गुन करहिं भलाई।१३०८।	सतनाम	कहाँ तक करनी करे नर लोई। बाँह गहे आमृत फल सोई।१३०९।	सतनाम	त्रिविधि ताप तन मेटनिहारा। दया करहिं भव सिन्धु उबारा।१३१०।	सतनाम
सतनाम		सतनाम		59		सतनाम
सतनाम		सतनाम				सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ८४			
सतनाम			जग में आये प्रगट भयो, तिरगुन लीला सँवारी। कथ्यो ज्ञान निजु निर्मल, सत्त शब्द निरुआरी॥		सतनाम	
सतनाम			छन्द - १५		सतनाम	
सतनाम			बिक्ति विमल गुरु कंज पद, आनन्द मंगल गावहीं। मुक्ति महिमा ज्ञान की गति, त्रिमिर सकल मेटावहीं। भवरहित भ्रम विषाद यह सभ, तरक तरनी पावहीं। संसे सर्व विहाय इमि करि, करम कलि कटि जावहीं।		सतनाम	
सतनाम			खोरठा - १५		सतनाम	
सतनाम			चले सो भव जल नाव, तगुरु कर कनहरि गहो। ज्ञान भक्ति निज भाव, गुरु पद पंकज मंजन करो॥		सतनाम	
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			पहले भक्ति भाव तब कीन्हा। संत होय ज्ञान तब चीन्हा।१३११। होखौ ज्ञान करम के नासा। अभिमण्डल सुख सागर बासा।१३१२। सत्तपुरुष निजु ज्ञान दृढ़ावैं। प्रकट कथा गमि केहु केहु पावै।१३१३। संत मत कथि मुनिवर लोई। मिले न ज्ञान माया बसि होई।१३१४। तीन लोक महि मंडल माया। इन्द्र जाल रचि भ्रम बनाया।१३१५। जग में कह्यो मुक्ति का मूला। ज्ञान ना सूझै भ्रम भव भूला।१३१६। पहिले भूले विरंचि विधाता। जिन्ह यह वेद कथे बड़ ज्ञाता।१३१७। भूले तब ब्रह्मा कर जाया। करम कांडी जिन्हि जग फैलाया।१३१८। तीरथ ब्रत कर्म रचि राखा। करि षट कर्म ज्ञान नाहीं भाषा।१३१९। योगी यती भूले सब आई। षट दर्शन मिलि पंथ चलाई।१३२०। काल हिडोला सब मिलि झूला। भेषधरी पढ़ि पंडित फूला।१३२१। सत्तगुरु बिना करम नाहिं छूटे। धरि धरि काल भवन में लूटे।१३२२। विमल नाम मल कबहिं ना लागे। भव प्रगट परिमल रंग जागे।१३२३। सीख ने पूछा गुरु गमि कहेऊ। आदि अंत परमारथ लहेऊ।१३२४।		सतनाम	
सतनाम			साखी - ८५		सतनाम	
सतनाम			बुझहु सुत शब्द यह, सत्तगुरु बचन प्रवीन। करो विवेक विचारि के, पुरुष माया ते भिन्न॥		सतनाम	
सतनाम					सतनाम	
सतनाम					सतनाम	

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	पैठि पैठि कवि देखाहिं कैसे । मकुर बीच रहे प्रतिमा जैसे । १३२५ ।	सतनाम	इमिकरि देखौं बदन के रेखा । अहे विदेह दृष्टि में पेखा । १३२६ ।	सतनाम	जो कवि कह्यो सोई सब साँचा । ज्यों छवि भानु किरन रचि राचा । १३२७ ।	सतनाम
सतनाम	निर्गुन सर्गुन निगम रचि राखा । द्रुम छोड़ि बरने सब शाखा । १३२८ ।	सतनाम	ऐसो माया जगत रचि राखा । ब्रह्मा विष्णु हैं ताकर शाखा । १३२९ ।	सतनाम	कवि कलि करम संत जग बीना । गृह गृह वक्ता कहीं परमीना । १३३० ।	सतनाम
सतनाम	दधी मथौ घृत बाहर आवै । इमि करि सत्तनाम नीजु पावै । १३३१ ।	सतनाम	जब लगि ठीका मूल ना पावै । बहुरि बहुरि भव सागर आवै । १३३२ ।	सतनाम	तिरगुन घाट पैठु सम्भारी । लखो नाम निजु ततु बिचारी । १३३३ ।	सतनाम
सतनाम	पारख बिना हीरा विसरावै । बिनु गुरु ज्ञान गमी कहां पावै । १३३४ ।	सतनाम	करगहि लेहि देहिं जिमि डारी । संग्रह करे विषै विभिचारी । १३३५ ।	सतनाम	जल कुकुही तलही में बासा । किमिकरि जाहिं सिन्धु के पासा । १३३६ ।	सतनाम
सतनाम	ज्यों बग खाहिं कुसुवक हीता । मच्छभक्षि भक्षि गावाहिं गीता । १३३७ ।	सतनाम	अहै मराल मति सेत सुभागा । मोती मनि चित चुगँन लागा । १३३८ ।	सतनाम		सतनाम
			साखी - ८६			
सतनाम	ज्यों हंस वंश मति संत गति, अरु सदा सुखी मन सेत ।	सतनाम	कहे दरिया दल कँवल कला पर, भँवर भाव निजुहेत ॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	गरुर ज्ञान किमि मोह प्रसंगा । सत्तगुरु बचन कहो सत्त संग्ता । १३३९ ।	सतनाम	सुनत बचन मोहिं अति प्रिय लागा । कट जाये तम तृमिरी सब भागा । १३४० ।	सतनाम	हम कहँ शंसय कछु नहिं अहई । कोटि करम कलि पातक दहई । १३४१ ।	सतनाम
सतनाम	गरुर ज्ञान मोह किमिकर कहई । परम पुरुष परमात्म अहई । १३४२ ।	सतनाम	जहाँ जहाँ गये भ्रम भंव राता । एक-एक बचन कह्यो सब ज्ञाता । १३४३ ।	सतनाम	चेला बहिर गुरु है अन्धा । प्रबल माया है सब जग बंधा । १३४४ ।	सतनाम
सतनाम	गये खग पति जहाँ नारद अहई । पूछहिं बचन कहो भ्रम दहई । १३४५ ।	सतनाम	अहै राम ब्रह्म की माया । सो कृपालु मोहिं करिए दाया । १३४६ ।	सतनाम	बार-बार उन्हि हमहिं नचाया । सुनो विहंग पति वचन सुनाया । १३४७ ।	सतनाम
सतनाम	अब मोपे कछु कहि नाहिं जाई । सो तुम्हारे तन ब्यापो आई । १३४८ ।	सतनाम	अहै ब्रह्म माया बिच अहई । अगम अथाह थाह किमि लहई । १३४९ ।	सतनाम		सतनाम
			61			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
विमल ज्ञान ब्रह्मा के पासा। सुनत बचन मेंटा मोह त्रासा।१३५०।	तुरंत गये ब्रह्मा के पासा। कीन्ह प्रनाम बचन परगासा।१३५१।	इमि कारन हम तुम पँह आई। महा मोह तन अति दुख पाई।१३५२।	राम के बचन हमहिं जनि पूछहु। शिव से जाय ज्ञान तुम मचहु।१३५३।	साखी - ८७	महा मोह तन व्यापेवो, विकल भये खगराए।	अंधकार भ्रम सभ छावो, अब किछु कहा ना जाए॥
चौपाई	चले गरूर तब तिरछन तुरन्ता। मारग माँह भेंटा शिवअंता।१३५४।	करि प्रदक्षिन बोले तब वानी। हृदय प्रेम प्रीति अति जानी।१३५५।	पूछो बचन सोई कहो स्वामी। करहु कृपा मोहिं अंतर यामी।१३५६।	नाग फाँस रघुनाथहिं बाँधा। तब हम जाय ब्याल कँह साधा।१३५७।	अति अथाह थाह नहि लहई। महा मोह तन दारुन दहई।१३५८।	अस कहि शिव बोले प्रिय बानी। मोह मृथा नाहिं सत्त हम जानी।१३५९।
मोहें विकल हमहु तन भयऊ। ढूँढ़त ज्ञाता कहाँ कहाँ गयऊ।१३६०।	सात दीप नवखंडहि फीरा। तबहुँ ना मेंटा तन की पीरा।१३६१।	महा योगेश्वर जग में भारी। ब्रह्म निरुपनि ज्ञान विचारी।१३६२।	मोह तपत तनिको नाहि जाई। तब मैं दरस काग कर पाई।१३६३।	सुनत बचन प्रिय अतिनिक लागा। छुटि गयो मोह भरम भव भागा।१३६४।	काग भुसुन्डि महा बड़ ज्ञाता। उनके भरम कबहिं नाहिं राता।१३६५।	उन सब ज्ञान कहहिं प्रसंगा। उपजहिं प्रेम शीतल होय अंगा।१३६६।
चले विहंग पजि पंथ जो लागा। अति अफसोच महा भ्रम जागा।१३६७।	उमा बोली तुमतें बड़ ज्ञाता। पूछन भेजहु जहाँ निजु बाता।१३६८।	हम नर देह वै खगपतिराई। इमिकरि ज्ञान प्रगट नाहिं गाई।१३६९।	तीनि लोक तुम त्रिभुन ज्ञानी। जोग विराग भगति तुम जानी।१३७०।	इमि कारन हम गुप्त जो राखा। सुनहु उमा सत्त बचन जो भाखा।१३७१।	साखी - ८८	कहे उमा सुनु वामी, तुम्हें उन्हें कब भैसंग।
सदा से हम साथहहिं, कब भयो ज्ञान प्रसंग॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	प्रथमहिं दक्ष गृही तुम जन्मा। सो सब जानती हो तुम मरमा।१३७२।	सतनाम	दक्ष गृही कन्या रही कुँवारी। कीन्हो यज्ञ विवाह विचारी।१३७३।	सतनाम	अति सादर करि सबे बुलयऊ। गन्ह गंधर्व मुनि सब मिलि गयऊ।१३७४।	सतनाम
सतनाम	हमके बचन पूछा तुम आई। किमि कर गवन कहां सभ जाई।१३७५।	सतनाम	आनन्द मंगल दक्ष गृह अहई। सुर समाज तहाँ चलि कहई।१३७६।	सतनाम	हम कहें नाहिं बोलाइन्हि जानी। वस्त्र हीन शिव कहा बखानी।१३७७।	सतनाम
सतनाम	अति अपमान हमें उनहें भयऊ। इमि कारण नाहिं तुम्हें बुलयऊ।१३७८।	सतनाम	आसन कसी समाधि लगाई। तब तुम्ह रोदन कियो बिलखाई।१३७९।	सतनाम	छुटा ध्यान ग्यान नहिं रहेऊ। किमि कारन उमा विलखौउ।१३८०।	सतनाम
सतनाम	तात मातु मोहिं मृतक जाना। हित अनहित इमि सब परधाना।१३८१।	सतनाम	कीन्हों यज्ञ विविधि मुनि गयऊ। बिना बुलावल तुम चलि गयऊ।१३८२।	सतनाम	बहु भाँतिन मैं तुमहिं बुझाया। मम बचन तुम मृथा गँवाया।१३८३।	सतनाम
सतनाम	तुमसंग दुइ गन दिन्हों साथा। चली तुरन्त नाय निजु माथा।१३८४।	सतनाम	दक्ष गृही जाय तहाँ यज्ञ देखा। सादर भाँति नाहिं कछु पेखा।१३८५।	सतनाम	किछु किछु प्रेम कीन्हो तुम माता। पिता देखि अनल उत्पाता।१३८६।	सतनाम
सतनाम	भ्राता प्रेम कछु नाहिं कीन्हा। तन मलीन वस्त्र अति हीना।१३८७।	सतनाम		साखी - ८६		सतनाम
सतनाम		राज काज जग शोभा, आनन्द मंगल चार।				सतनाम
सतनाम		सती भवन नाहीं भावई, अति मन भयो बेकरार।।				सतनाम
सतनाम	तब तुम गई जहां नर नारी। यज्ञ आरम्भ जहां वेद उचारी।१३८८।	सतनाम	दुई पिंड के होखे पूजा। दिल में बचन बूझा तुम दूजा।१३८९।	सतनाम	आदी अन्त सदा शिव जोगी। पाप पुन्य करम नाहिं भोगी।१३९०।	सतनाम
सतनाम	इन्हकर पूजा किमि नाहिं साजा। अति क्रोध करि बोले राजा।१३९१।	सतनाम	भूत प्रेत संग किमि गुरु ज्ञाना। खाहिं धतूर महा अभिमाना।१३९२।	सतनाम	नगन रहे तन वस्त्र हीना। अहि लपेटि तन विधिरहु भीना।१३९३।	सतनाम
सतनाम	अन मिलि सब है उनकर साजा। बरद बाघ जिमि डमरु बाजा।१३९४।	सतनाम	सो हमरे गृहि किमि कर अयऊ। अति सादर करि मान जनयऊ।१३९५।	सतनाम	परी अनल में तन तुम त्यागा। यज्ञ विध्वंस मुनि सब कोई भागा।१३९६।	सतनाम
सतनाम			63			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दुइगन जाइ उपद्रव करहीं। मन्दिल माँह अनल जो बरहीं।१३६७।	सतनाम	जारि मारि हुनी कोइ ना बांचा। गन सभ करम कीन्ह यह साँचा।१३६८।	सतनाम	करुना करत निकट चलि आई। गन सब अर्थ कहा समुझाई।१३६९।	सतनाम
सतनाम	माते अनल तन दह्यो बनाई। अति अपमान कहा नहिं जाई।१४००।	सतनाम	तब हम भवन सबे धरि जारा। यज्ञ विध्वंस करि सबके मारा।१४०१।	सतनाम	साखी - ६०	सतनाम
सतनाम	तब मोरे तन मोह भयो, महा कल्पना जागी।	सतनाम	मुनि गृह गृह इमि फिरेऊँ, बिरह अनल तन लागी॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	जहां जहां गयऊ तहां मोह प्रसंगा। किनु ना शीतल कीन्ह मोर अंगा।१४०२।	सतनाम	गयो मैं बन खंड शृंग सुमेरा। अति हेवाल गिरि दृष्टि में फेरा।१४०३।	सतनाम	नील शैल एक अधिक उतंगा। कहे काग किछु ज्ञान प्रसंगा।१४०४।	सतनाम
सतनाम	बहु प्रकार तहाँ चढ़ि गयऊ। भया मराल तब वचन बुझैऊ।१४०५।	सतनाम	चार द्रुम सुन्दर बहु शाखा। खग बैठक कथा निजु भाखा।१४०६।	सतनाम	जब उन्हि ज्ञान कीन्ह प्रसंगा। तब मैं जाय बैठयो एक संग।१४०७।	सतनाम
सतनाम	निजु नृजु कथा सुनेउ सत्त बानी। कहें शिव सुनु आदि भवानी।१४०८।	सतनाम	छन्द - १६	सतनाम	काग स्वरूप शोभा अति सुन्दर, हंस वंश गति जानही।	सतनाम
सतनाम	नीर छीर सब विलगि विवरण, ज्ञान का गुन गावहीं।	सतनाम	रोम रोम तन अमीय वर्षत, सुमन घटा घन छावहीं।	सतनाम	सुख सागर भगति आगर, गर्व इमि किमि आवहीं।	सतनाम
सतनाम	सोरठा - १६	सतनाम	ज्ञान भगति निजु हेत, गुन गम्भीर इमि जानहीं।	सतनाम	शीतल परिमल सेत, लपट घानि घन छावहीं॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	उमा वचन कहे सुनु स्वामी। तीन लोक तुम अन्तरयामी।१४०९।	सतनाम	कौ है ब्रह्म कवन है भाया। को है ज्ञान कहो अरथाया।१४१०।	सतनाम
सतनाम	आदि ब्रह्म है त्रिगुण माया। भया अनंत तब जग फैलाया।१४११।	सतनाम	ज्ञान सोई जो एक रस रहई। विमल प्रेम दुर्मति सब बहई।१४१२।	सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
है सत्त पुरुष गुप्त करि राखा। जहां तहां बचन विविधि नाहिं भाखा।१९४९३।	जब जब सुनहिं महा मुनि ज्ञाता। सबके मोह होय उत्पाता।१९४९४।	ताते मै प्रगटि नहिं कहऊँ। निर्मल नाम निजु हृदये गहऊँ।१९४९५।	कोकहि होय जगत में बादी। सुनहु उमा सत्तपुरुष की आदी।१९४९६।	जब वै पुरुष अकेला रहई। तब नाहिं शक्ति संग यह कहई।१९४९७।	माया निरंजन कीन्ह प्रसंगा। तिरगुन तीन विविधि भव रंगा।१९४९८।	बहु विधि वेद बोला सब बानी। आदि पुरुष गति केहु केहु जानी।१९४९९।
इमिकरि जानि गुप्त मैं रहेऊ। निशि दिन योग युक्ति सत गहेऊँ।१९४२०।	साखी - ६१	उमा परि चरनन पर, कह्यो धन्य शिव ज्ञान।	अब स्थिर घर पायेओ, किमि करि करौं बखान।।	चौपाई	शृंग ऊपर एक शृंग बिराजै। तहाँ तड़ाग सुन्दर एक छाजै।१९४२१।	चारि घाट चार रस पानी। मधुर औ मीठ, खट्टा, तीता जानी।१९४२२।
चारो दिशा चार द्रुम छाया। सघन पल्लव तहाँ शीतल बनाया।१९४२३।	करि परि दक्षिन काग तब आये। स्थिर होय के हरिगुन गाये।१९४२४।	दक्षिन दिशा आमृत अमराऊ। नाना खग बैठे तेहि ठाऊँ।१९४२५।	गये गरूर तब खग पति पासा। विनय कीन्ह बचन परगासा।१९४२६।	शैल शोभे पंछिन सुख पाया। कहें गरूर सुनो खग पति राया।१९४२७।	हमके मोह भरम अति भयऊ। इमि कारण तुम्हरे पँह अयऊ।१९४२८।	रावन राम विविध भयो मारी। तादिन नाग फाँस ग्रिव डारी।१९४२९।
तब हम बन्धन जाय छोड़ाया। किछु ज्ञान किछु मोह बुझाया।१९४३०।	सहस्र वर्ष मोह मन दहऊ। अतिहै विकल भ्रम सब छयऊ।१९४३१।	तब चलि गयऊ नारद के पासा। कै परनाम बचन परगासा।१९४३२।	अहै विरंचि वेद का मूला। निजु निजु बचन कहहिं सम तूला।१९४३३।	बैठे जहाँ विरंचि विधाता। तहवाँ जाय कहे निजु बाता।१९४३४।	कहे विरंचि हम किमि करि कहई। सुनत मोह दुख दारून दहई।१९४३५।	तब चलि गअउ शिव कै पासा। काग भुसुन्डि राम कर दासा।१९४३६।
आदि अंत सब कथा सुनैहों। छूटि जाय मोह ज्ञान निजु होइहें।१९४३७।	कहो भुसुन्डि सुनो खगराई। जन्म प्रसंग निजु कथा सुनाई।१९४३८।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
ज्यों स्थिर चित शैल पर रहिहो। राम चरित्र निजु कथा सुनइहों।१९४३६।						
गहें गरुर सुनो हरि संता। तुँव दर्शन फल महा अनंता।१९४४०।	सतनाम					सतनाम
संत दरस गुन सुखाद समाजू। आनन्द मंगल तीरथ राजू।१९४४१।						
जग लागि मोह भरम नहिं जाई। तब लागि कथा सुनो चित लाई।१९४४२।	सतनाम					सतनाम
साखी - ६२						
लोचन श्रवण हृदय पद, सदा रहों कर जोरी।						
विमल प्रेम पद भाखिये, विनय बचन सुनु मोरी॥						
चौपाई						
कहं भुसुन्डि सुनो सत बानी। मोहे विकल फिरहु जनि ज्ञानी।१९४४३।	सतनाम					सतनाम
माया मोह बीच ज्ञान रहीसा। भक्ति विवेक पान पद ईसा।१९४४४।						
मोह पदारथ सग जग हीता। महा महा मुनि मोह ना जीता।१९४४५।	सतनाम					सतनाम
मोह तड़ाग कूप जल जैसे। भरि भरि पीवहिं आमृत ऐसे।१९४४६।						
जल बिनु जीवै ना मोह विराता। मातु पिता सुख सागर राता।१९४४७।	सतनाम					सतनाम
मोहे आतम औ गृह नारी। मोह बिना किमि ज्ञान विचारी।१९४४८।						
मोहे वाटिका फल फुल झारी। मन है भँवर सुगंध सुधारी।१९४४९।	सतनाम					सतनाम
मोहे अनल सकल गृह जारी। फेरि फेरि भवन करै उजियारी।१९४५०।						
इमि करि मोह सकल जग लागा। जरि गयो शहर बहुरि फेरि माँगा।१९४५१।	सतनाम					सतनाम
पावक बिना पाक किमि करई। इमि करि मोह निरतंर रहई।१९४५२।						
मोह द्रुम फल जहाँ खग के बासा। मोह सलिता जल मीन निवासा।१९४५३।	सतनाम					सतनाम
मोह अमर कोष मृग मद लागा। ऐसो मोह जगत सब जागा।१९४५४।						
मोह जोराफा एक संग जोरी। बंधन जगत मोह की डोरी।१९४५५।	सतनाम					सतनाम
मोहे गुरु सीखा का मेला। मोह बिना किमि काकर चेला।१९४५६।						
मोहे धरती पुरुष बनाया। मोहे करता अन्न उपजाया।१९४५७।	सतनाम					सतनाम
मोहे कृषि खेत किसाना। सर्व रूप मोह भगवाना।१९४५८।						
मोहे मातु पिता सुत नारी। मोह की बेरी सकल जग डारी।१९४५९।	सतनाम					सतनाम
साखी - ६३						
घर मंह घर करि देखिए, ज्ञान दिपक कहँ बारी।						
पाँच पचीस सब साथ हैं, शिव कहँ शक्ति पियारी॥						
66						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	बिनु हरि भगति हरे नाहिं शोका। तप तर्क थाके करि योगा।१४८५।	सतनाम	पद प्रयाग सो हरि पदनीका। तीरथ ब्रत भगत बिनु फीका।१४८६।	सतनाम	जो पगु संत दरस कहँ परई। कोटि पुण्य अघ पातक हरई।१४८७।	सतनाम
सतनाम	जेहि मंदिल मनि संत विराजै। कोटि तीरथ पद पंकज छाजै।१४८८।	सतनाम	साखी - ६५	सतनाम	संत दरस गुन सुखद अति, हृदय कमल परगास।	सतनाम
सतनाम	जो पगु परे प्रयाग सम, सुर सरि जल पद पास।।	सतनाम	छन्द - १७	सतनाम	संत दरस गुन ज्ञान की गति, मंजन मैल छुड़ावहीं।	सतनाम
सतनाम	दरस परस भै भरम भाजेबो, जब हरि कथा पसारही।	सतनाम	आनन्द मंगल रंग रहित सब, सुघर संत गुन गावहीं।	सतनाम	सुनत श्रवन हिया लोचन बृगस्यो, भँवर भाव रस चाखहीं।	सतनाम
सतनाम	सोरठा - १७	सतनाम	सुनहु ना खग पति प्रीति, बिना भक्ति भव ना तरै।	सतनाम	कहाँ सलिता कहाँ शीत, जिमि कुरंग भरमत फिरै।	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	निज मुख शिव कीन्ह विख्याता। सो श्रवन सुन्यो लोचन भरि राता।१४८९।	सतनाम	जाकर कीरत करम जग जाना। सनकादिक शिव शम्भु बखाना।१४९०।	सतनाम
सतनाम	अरुन भानु उदय गिरि जबहीं। त्रिमिरी नासि रजनी गयो तबहीं।१४९१।	सतनाम	लोचन कंज तम सब छूटा। भृंगा भाव प्रेम रस जूटा।१४९२।	सतनाम	कवि कंठ रसना गुन ज्ञाता। श्रवन सीखा मंत्र मनि राता।१४९३।	सतनाम
सतनाम	जहाँ मनि मंदिल दीपक ना बरई। जब रबि ऊगै तारा का करई।१४९४।	सतनाम	तुम हरि जन मैं दासन दासा। तन कै तृषा मेटा जल पासा।१४९५।	सतनाम	विमल ज्ञान घन घटा समीरा। बरसत बूँद अखांडित नीरा।१४९६।	सतनाम
सतनाम	सुमन सुगंध अमी झरि परई। ओसें प्यासि सिन्धु नाहिं भरई।१४९७।	सतनाम	कथा प्रीति मानो निर्मल अंगा। जहाँ तहाँ जल थल बचन प्रसंगा।१४९८।	सतनाम	सुनो विहंग पति तुम गुन ज्ञाता। मथ्यौ मोह मद माया विराता।१४९९।	सतनाम
सतनाम	घानि घृत भय अनल प्रगासा। काँजी काँचु भंग जम त्रासा।१५००।	सतनाम	मैंन मजीठ रंग सब गयऊ। उज्जवल दशा हंस गुन भयऊ।१५०१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नीर छीर विवरन तुम जाना। बारि घंइचि कसि बुद्धि अमाना।१५०२।	सतनाम	रोम रोम भव पद परगासा। त्रिविध ताप मेंटा तन त्रासा।१५०३।	सतनाम	पारस परिमल पारस गुन पासा। भै चन्दन तन बासु सुबासा।१५०४।	सतनाम
सतनाम	साखी - ६६	सतनाम	तुम्हें सदा गुरु ज्ञान है, मैं कीकर निजु दास।	सतनाम	ज्यों धरनी जल सोखिया, मोह ना आवत पास।।	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	पिछली कथा सुनन सब चहेऊ। होहु दयालु किरत सब कहेऊ।१५०५।	सतनाम	प्रथम देह जब नर के पाई। संतन संग सदा गुन गाई।१५०६।	सतनाम
सतनाम	सुत वित नारि औ सम्पति नाना। दान पुन्य तीरथ स्नाना।१५०७।	सतनाम	भरमत फिरयो बहुरि गृह आई। उदासीन सुख कुछ ना सुहाई।१५०८।	सतनाम	राम चरित्र जहा किछु सुनेऊ। पाप पुन्य तहाँ एको ना गुनेऊ।१५०९।	सतनाम
सतनाम	बिना संत सुख मिलै ना ज्ञाना। जप तप मख पढ़ि वेद पुराना।१५१०।	सतनाम	ग्रिहि छोड़ि दुरंतर गैऊ। गुरु उपदेश तहां मोहि भएऊ।१५११।	सतनाम	गुरु दयाल मोर शिव उपासी। मंत्र दीन्ह सुमिरौ अभिनीसी।१५१२।	सतनाम
सतनाम	निश दिन प्रेम यही चित राता। गुरु के बचन भयो निजु ज्ञाता।१५१३।	सतनाम	महादेव कर देव घर रहऊ। अति पवित्र तहाँ नितगुन गयऊ।१५१४।	सतनाम	जप तप ध्यान मंदिल में करेऊँ। चन्दन पुहुप रगरि तहाँ धरेऊँ।१५१५।	सतनाम
सतनाम	मनसा ध्यान रहों लवलीना। आये गुरु आदर नाहिं कीन्हा।१५१६।	सतनाम	कोपि के शिव श्राप तब दीन्हा। मारग सठ भ्रष्टतें कीन्हा।१५१७।	सतनाम	अति असाधि जढ़ तन तुम पैहो। भरमि भरमि चौरासी जैहो।१५१८।	सतनाम
सतनाम	साखी - ६७	सतनाम	श्राप भयो तन विकल अति, ज्ञान ध्यान विसराए।	सतनाम	भयो विकल तन भरम उपज्यो, करुना अति तन आये।।	सतनाम
सतनाम	छन्द - १८	सतनाम	शम्भु सर्व सहाय सिर पर, दया निधि सुन लीजिये।	सतनाम	अज्ञान बालक जान कछु नाहीं, क्रोध क्षेमा कीजिये।	सतनाम
सतनाम	कीन्ह अस्तुति निशु वासर, दास तू वर दीजिये।	सतनाम	भई बानी आकाश ध्वनि सुनि, श्राप अनुग्रह कीजिये।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - १८			
सतनाम			श्राप मृथा नाहिं मोर, किछु दिन गये उबारिहौं।		सतनाम	
			चौरासी के ओर, सुन्दर नर तन पाइहौ॥			
			चौपाई			
सतनाम			किछु दिन बीते काल तब भयऊ। तन छूटे चौरासी गयऊ।१५१६।		सतनाम	
			जहाँ जहाँ जन्म चेतन चित ज्ञाना। गुरुके चरन पद पंकज ध्याना।१५२०।			
			चौरासी में दुख अति ब्याप्यो। महा पाप ताप तन ताप्यो।१५२१।			
सतनाम			जैसे बसन तन पेन्हे बनाई। होत पुरान तब देत अड़ाई।१५२२।		सतनाम	
			इमि कर जन्म बीता चौरासी। काल करम ग्रीव कटि जाय फाँसी।१५२३।			
			उत्तम जन्म फिरि भयो प्रसंगा। भौ सुन्दर तन आठो अंगा।१५२४।			
सतनाम			किछु दिन बालक सो तन रहऊ। महा अबोध मति भ्रम जो भयऊ।१५२५।		सतनाम	
			द्वादश वरस बीता लरिकाई। फिर निजु ज्ञान चेतन होए आई।१५२६।			
			जंह जंह ग्रन्थ पढ़े कोई माता। सुनत स्रवन बहुत चित राता।१५२७।			
सतनाम			जहाँ जहाँ सुनऊ भगतशिव अहई। तहाँ तहाँ जाइ चरन चित गहई।१५२८।		सतनाम	
			फिरि गुरु मिल्यो दीन्ह उपदेशा। जपहीं शिवशिव बचनदिनेशा।१५२९।			
			मैं कमल गुरु दिन मनि ऐसा। बृगस्यो लोचन मम भ्रमर वैसा।१५३०।			
सतनाम			अमी घानि शीतल तन लागा। कुमति काल दुर्मति सब भागा।१५३१।		सतनाम	
			साखी - ६८			
			भव जल लहरि उत्तंग अति, गुरु तरनी करि पार।			
सतनाम			कन हरि करगहि खेवहीं, कर करता करुवारि॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			संत मंत सुनौ जहाँ बानी। बृगसै कमल आमृत रस सानी।१५३२।		सतनाम	
			अति प्रिय लागे भेष भगवाना। सादर करौं सदा गुरु ज्ञाना।१५३३।			
			नीति नीति प्रेम भया अनुरागा। जागा ज्ञान दुर्मति दुर भागा।१५३४।			
सतनाम			निकले गृहते अति अनुरागी। भेंटहिं मुनि पद पंकज लागी।१५३५।		सतनाम	
			करहिं गुष्टि निजु ज्ञान बिचारी। बादि विवादि भगति निजुसारी।१५३६।			
			लोमछ सुनहु महा मुनि ज्ञाता। हृदये प्रेम प्रीति अति राता।१५३७।			
सतनाम			भयो दरश तब कीन्ह प्रनामा। परदक्षिन कर कीन्हु विस्रामा।१५३८।		सतनाम	
			निर्गुन बैन बोले सत्त बानी। कहहिं ग्रन्थ कछु कथा बखानी।१५३९।			
			70			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जब मैं दरस देखा मुनि ज्ञाता। कीन्ह अनुसार बोले कुछ बाता।१५४०।	सतनाम	शिव अभिनासी दूजा ना कोई। प्रगट कीन्ह सब कथा समोई।१५४१।	सतनाम	इनकर भेद सदा हम जाना। दीन्ह उपदेश परम गुरु ज्ञाना।१५४२।	सतनाम
सतनाम	शिव हरि राम चरित्र निकलागा। सो मम हृदये चरन पद पागा।१५४३।	सतनाम	नवधा भगति राम गुन ज्ञाना। सोई स्वरूप सदा सुख जाना।१५४४।	सतनाम	संत दरस औ तीरथ धरमा। दान पुन्य सोई सत्तकर्म।१५४५।	सतनाम
सतनाम	सदा जपों निसु वासर सोई। शिव सम हित दूजा नाहिं कोई।१५४६।	सतनाम	साखी - ६६	सतनाम	लोमछ बचन बिचारि के, कहा विमल निजु ज्ञान।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	माया ब्रह्म विवेक करि, पावे पद निर्वाण॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	आदि अनादि पुरुष जो अहई। सो सुमिरे भव कबहीं ना परई।१५४७।	सतनाम	निर्गुण नाम निःअक्षर नीका। सदा विमल रस वेद का टीका।१५४८।	सतनाम	होखै मुक्ति अमर पद पावें। सत्तगुरु मिलें सत्त शब्द बतावें।१५४९।	सतनाम
सतनाम	तब मैं बोलवो बचन मृदु बानी। सदा दयाल तुम अन्तरयामी।१५५०।	सतनाम	यह सुनि बचन भ्रम मोहिं जागा। बिना स्वरूप किमि मन अनुरागा।१५५१।	सतनाम	जाके श्रवन नयन नाहिं बानी। सब गुन रहित सो काह बखानी।१५५२।	सतनाम
सतनाम	सरगुन स्वरूप मैं खोजो आई। करहु दया मोहि देहु दिखाई।१५५३।	सतनाम	जाकर पद निसदिन अनुरागा। रहो असोच प्रेम मिन जागा।१५५४।	सतनाम	आवे जाय माया कर रूपा। होय पतन फिर धरे स्वरूपा।१५५५।	सतनाम
सतनाम	बहुत कल्प युग बैठे देखा। आदि अन्त दृष्टि में पेखा।१५५६।	सतनाम	जीवन मुक्ति हहिं सभतें न्यारा। आदि ब्रह्म हहिं बिमल सुधारा।१५५७।	सतनाम	शिव सनकादि आदि नाहिं जाना। सो मैं तुमसे करों बखाना।१५५८।	सतनाम
सतनाम	सुनहु आदि अंत परसंगा। जाहि सुनी मोह सकल होए भंगा।१५५९।	सतनाम	जाहि सुमिरे अघपातक मोचे। शिव सनकादि जाहि कँह लोचे।१५६०।	सतनाम	साखी - १००	सतनाम
सतनाम		सतनाम	जोग जाप तप ध्यान करि, नाना भेष बनाये।	सतनाम	भरमति फिरे भवन में, फेरि फेरि जाय नसाये॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम	तब मैं बचन जो बोला बिचारी। सर्गुन स्वरूप है मनि उजियारी।१५६१।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	हम निर्गुन कर जानु ना मरमा। भगति भाव जानो निजु धर्मा।१५६२।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १०२			
सतनाम			जाहु अवधपुर वेगि तुम, तेजु संशय भव भीर। सत्तबचन यह मानि हो, दरसन होय रघुवीर॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			चल्यो तुरंत सुनो खगराया। देख्यो दरस राम पद पाया।१५८८।		सतनाम	
			नित वहां रहो निकट चलि जाई। जूठन परे सो बिन बिन खाई।१५८९।			
सतनाम			रह्यो लोभाय दरस प्रिय लागा। निस दिन करों विवेक विरागा।१५९०।		सतनाम	
			अब अति मोंह सकल तन भयऊ। ऋषि के बचन मृथा मोहिं अयऊ।१५९१।			
सतनाम			फेरि फेरि ऐन अंजीर में जाई! धरि परसाद तब खेलहिं बनाई।१५९२।		सतनाम	
			लीन्ह चोंच भरि तुरंतहि भागा। राम के हाथ पीछे तब लागा।१५९३।			
सतनाम			फिरेऊँ इन्द्र खंड ब्रम्हंडा। सप्त पताल पुहुमि नव खंडा।१५९४।		सतनाम	
			जब मैं देखो निकट दिखाई। मूढ्यों पलक अवध चलि जाई।१५९५।			
सतनाम			बोल्यो मुख बचन जब खूला। तब मैं पैठि गयो सम तूला।१५९६।		सतनाम	
			देख्यो खंड ब्रम्हंड सब झारी। कोटिन्ह ब्रम्हा बेद विचारी।१५९७।			
सतनाम			कोटिन्ह इन्द्र औ शिव भवानी। भेष अलेख शंख धुनि बानी।१५९८।		सतनाम	
			एक एक कल्प रह्यो ब्रम्हंडा। राम चरित्र सब देख्यो अखंडा।१५९९।			
सतनाम			तब मैं तुरन्त बाहर चलि अयऊ। उभै घरी में चरत्रि बुझैऊ।१६००।		सतनाम	
			बालक रूप देखा तेहि जाई। यह वृत्तान्त कथा रघुराई।१६०१।			
			साखी - १०३			
सतनाम			ब्रह्मंड शकल गुन सत है, जगपति है जगदीश।		सतनाम	
			जल थल सकल व्यापिया, वीसम्भर मन ईस॥			
			छंद - १६			
सतनाम			ब्रह्मंड खंड सो ब्रह्म व्यापिक, विमल अदकुद धुनि सुनी।		सतनाम	
			कोटि कोटि कवि कंठ बोलत, कठिन कर्ता किमि मनी।			
सतनाम			सर्व सरग औ सात सागर, शशी दिनमनि शेष फनी।		सतनाम	
			निगम अगम अथाह अदबुद, शिव विरंचि नारद मुनी॥			
			सोरठा - १६			
सतनाम			चरित्र कह्यो सब जानी, सुनौ श्रवण लोचन देख्यो।		सतनाम	
			लेहु ना खगपति मानी, राम रूप मनि विमल है॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सुनो विहंग पति बचन हमारी। देख्यो ब्रह्म भ्रम दुरि डारी।१६०२।	सतनाम	अहै राम ब्रह्म अरु माया। जो कछु देखा सो तुम्हें सुनाया।१६०३।	सतनाम	देखो हिये दृढ़ ज्ञान बिचारी। चौमुख चारि दीपक तहाँ बारी।१६०४।	सतनाम
सतनाम	लोचन कंज में अंजन दीजै। गुरु पद विमल सो मंजन कीजै।१६०५।	सतनाम	करम काल अघजात ओराई। कुन्दन कनक दाग नाहि आई।१६०६।	सतनाम	जब लगि अर्थ अंत नाहिं पावे। किमि करि बोधि जगत समुझावै।१६०७।	सतनाम
सतनाम	तब लगि अर्थ अंत नाहिं पावे। किमि करि बोधि जगत समुझावै।१६०८।	सतनाम	तब खग पति अस बोले बानी। भव शीतल तन आमृत सानी।१६०९।	सतनाम	कीन्हों विवेक बिचार सो ज्ञानी। माया अथाह गति किमि पहचानी।१६१०।	सतनाम
सतनाम	शिव बचन सुनि तुम पँह आयो। राम चरित्र सब कथा सुनायो।१६११।	सतनाम	ब्रह्मा शिव औ नारद पासा।। तुँह गुन गैहो होइहों दासा।१६१२।	सतनाम	सकल भवन मुनि संत हैं जेता। निज मुख बैन कह्यो कवि केता।१६१३।	सतनाम
सतनाम	सुखद संत गुन पर दुख हीता। ज्यों द्रुम सलिता जल फल हीता।१६१४।	सतनाम	परमारथ करि स्वास्थ नाही। ज्यों जल बूड़त उबारिं बाहीं।१६१५।	सतनाम	जाकर यश जगत सब कहिहै। निजु निजु अर्थ सदा गुन गहिहै।१६१६।	सतनाम
सतनाम		साखी- १०४		सतनाम		
सतनाम		कहें गरुर मोहिं गर्व नहीं, संत दरस लवलीन।		सतनाम		
सतनाम		हृदयो बोध बिनु ज्ञान किमि, सुनहु बचन प्रवीन।।		सतनाम		
सतनाम		चौपाई		सतनाम		
सतनाम	सतगुरु बचन कहो सत्त बानी। कहो कथा सब ज्ञान बखानी।१६१७।	सतनाम	गरुर थीर मन किमि कर भयऊ। सो सब कथा सुनन सब चहऊ।१६१८।	सतनाम	करहु दया जनि राखहु गोई। जाते आनन्द मंगल होई।१६१९।	सतनाम
सतनाम	कहो विमल प्रेम अति नीका। सुनहु संत ज्ञान के टीका।१६२०।	सतनाम	काग गरुर किमि को कहे बाता। पाप पुण्य जाने निजु माता।१६२१।	सतनाम	नर के बचन नर ही नर बूझै। खग कर भाषा खग ही कँह सूझै।१६२२।	सतनाम
सतनाम	गरुर गर्व कन्द्रप मद माता। काग कपूत नीच मन राता।१६२३।	सतनाम	विष गये गरुर संत मत भयऊ। कौवा करम तेजि हंस मत भयऊ।१६२४।	सतनाम	मति मराल है नर की देही। विवरन ज्ञान सुमति घींच लेहीं।१६२५।	सतनाम
सतनाम	उभै बीच ज्ञान सत्त कहेऊ। संत विवेकी परम पद पयेऊ।१६२६।	सतनाम	इन्द्रजाल कोइ मरम न पावे। याते वेद विदित जग गावे।१६२७।	सतनाम		
सतनाम			74			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ऐसन मोह काग तन भयऊ। उभै घरी में सब फिरि अयऊ॥१६२८॥	गया कहीं नाहिं ठावहिं भर्मा। यह किछु इन्द्रजाल का कर्मा॥१६२९॥	सब ब्रह्मंड देखा फिरि आइ। अनंत कला मन भेद ना पाई॥१६३०॥	महा महा मुनि औ बड़ ज्ञाता। भरम काल इन्ह सब पर राता॥१६३१॥	एक द्वै होय तब कहि समुझाई। जगत मता कहु कहि नाहि जाई॥१६३२॥	चढ़ी चरख पर धूमन लागा। उलटी बुद्धि भूला भ्रम कागा॥१६३३॥
सतनाम	आपु भुले फिरि और भुलाया। परे लपेटि संगति जो आया॥१६३४॥	जादू योग में इमि मति फिरई। बुद्धि सब छलै फहम नाहिं रहई॥१६३५॥	अखंड खंड करि नट नर टारा। विनु सत्तगुरु को निरति निहारा॥१६३६॥	साखी - १०५	अनंत मन फेरि एक है, एक अनंत संसार। उलटि के आपु विचारिए, एक रहा तत्व सार॥	चौपाई
सतनाम	मानुष मन जब फिरै फिरंगा। नयन दृष्टि दिल औरै रंगा॥१६३७॥	पूरब कै भानु पश्चिम जनु अहई। उत्तर कहँ दक्षिनायन कहई॥१६३८॥	इह अधरस वह अगम अगूहा। इन्द्रजाल के जीते ना जूहा॥१६३९॥	देखु दृष्टान्त दृष्टि में आवै। बलिराजा के नाच नचावे॥१६४०॥	कीन्ह अश्वमेध यज्ञ बहु साजा। इमिकर गर्व भूले तब राजा॥१६४१॥	करो सम्पूरन यज्ञ बनाई। इन्द्र लोक मैं लेहूँ छोड़ाई॥१६४२॥
सतनाम	आये बावन जानु ना मर्मा। इमिकर भूले भवन में भर्मा॥१६४३॥	बावन रूप बावन वह रहई। तीन लोक पगु इमिकर करई॥१६४४॥	महा मोह की मरम ना जाना। यह सब निरति कीन्ह भगवाना॥१६४५॥	ऐसन कीन्ह भरम को साजा। तब फिरि पीठ नपाइन्ह राजा॥१६४६॥	घटा बढ़ा नारहिं पाँव पसारा। तीन लोक चरित्र अचम्भौ डारा॥१६४७॥	यह निरुआर करै नर जबहीं। सत्तगुरु ज्ञान होखे निजु तबहीं॥१६४८॥
सतनाम	तीन लोक निरंजन राई। राम रूप है कृष्ण कन्हाई॥१६४९॥	सत्त पुरुष छल कबहीं ना करई। माया निरंजन सब बुद्धि छलई॥१६५०॥	साखी - १०६	भव जल पानी मीन जीव, महा भरम भवजाल। तीन लोक फिरि आवहीं, शीश पटक धरि काल॥		
सतनाम						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द - २०			
सतनाम	कहो विविध परगासा ज्ञान गमी, बिरला जन कोई जानहीं। १९६५१।	सतनाम	करहिं ब्रह्मा औ माया, इमि गुरु ज्ञानहिं मानहीं। १९६५२।	सतनाम	भयो सो हंस बंश गमि सत्तगुरु, अनन्त बुद्धि बिसरावहीं। १९६५३।	सतनाम
सतनाम	छूट्यो करम कलि भरम नाहीं, पिक मराल है आवहीं। १९६५४।	सतनाम	सोरठा - २०	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	द्रुम लता बहु भाँति, एसत्तगुरु मत नाहिं जानहिं।	सतनाम	रहे विविध मतमाती, मुनि सब कथ्यो ग्रंथ अती॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	बरे अनंत मन घटा समीरा। पाप पुन्य बुन्द दुइ गीरा। १९६५५।	सतनाम	तामे मंजन या जग करई। द्वि सलिता जल इमिकर बहई। १९६५६।	सतनाम	निगम नदी द्वि रचि राखा। तामें बढ्यो अनेकन्हि शाखा। १९६५७।	सतनाम
सतनाम	कहि कहि कवि बहुत बनाई। नारा नदी से फूटि फूटि जाई। १९६५८।	सतनाम	संत मत कोई बिरला जानै। सदा सनीप सोई पद मानै। १९६५९।	सतनाम	तपके तेज फूली फुलवारी। एक दुम फल लागा चारी। १९६६०।	सतनाम
सतनाम	द्वि संग्रह द्वि मृथा करई। इमि कारण भव सागर परई। १९६६१।	सतनाम	अर्थ काम चित निस दिन रहेऊ। मोक्ष धर्म भरम गति लहेऊ। १९६६२।	सतनाम	साधु दरस इमि ते अधिकारी। अटल ज्ञान निजु मुक्ति विचारी। १९६६३।	सतनाम
सतनाम	नाम निर्मल जो कथै विरागा। भयो मराल तेजि मति कागा। १९६६४।	सतनाम	संसृत जल पै भीतर रहई। विवरण विलगि संत मत कहई। १९६६५।	सतनाम	नीर छीर सब घीत मेता। बग जानहि तिनहू कंह मत कहई। १९६६६।	सतनाम
सतनाम	नीर छीर सब घानी समेता। बग जानहि तिनहू कंह सेता। १९६६७।	सतनाम	माया ज्ञान औ बुद्धि परगासा। बिना ज्ञान गुन सब किछु नाशा। १९६६८।	सतनाम	सर्गुण निर्गुण इमि करो। बखाना। ज्यों जल उपर विलगि किमि जाना। १९६६९।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - १०७	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सिन्धु लहरि अस गुन है, किमि तरनी होए पार।	सतनाम	निर्गुण नाम जहाज है, गुन गहि घैचन्हि हार॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	एक जल किरखी रक्षा करई। परे हेम जिमी पर गलई। १९६७०।	सतनाम	सर्गुण निर्गुण कर यह फल देखा। सतगुरु मत बिरला जन पेखा। १९६७१।	सतनाम	निर्गुण नाम है पुरुष निनारा। सर्गुण सकल जीव करहु बिचारा। १९६७२।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	76	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जाते तम तृमिरी सब नाशा। भानु कला छवि इमिकर भासा।१६७३।	सतनाम	ऐसे ज्ञान करम कलि नाशा। भये सम्पूर्ण प्रेम परगा।१६७४।	सतनाम	प्राण पिण्ड जेहि होय ना भिन्ना। ऐसो सत्त पुरुष कंह चीन्हा।१६७५।	सतनाम
सतनाम	निर्गुन सर्गुण यह जाकर अहई। करे विवेक ज्ञान गुन लहई।१६७६।	सतनाम	सीप संत सतगुरु जल वर्षा मोती मनि जानि जीव परखा।१६७७।	सतनाम	जहाँ उपजै तहाँ मोल ना लहई। जाय दुरंतर गुन सब कहई।१६७८।	सतनाम
सतनाम	मान सरोवर धन गुन कहई। जेहि जिमि संत सदा सुख लहई।१६७९।	सतनाम	दूरि आपुर व निकट करि निन्दा। ममिता वेइल सदा तन बिन्दा।१६८०।	सतनाम	जैसे भँवर कमल में रहई। संत सदा गुन इमिकर कहई।१६८१।	सतनाम
सतनाम	साखी - १०८					सतनाम
सतनाम	सतगुरु भान मिल सम, कमल भया संसार।					सतनाम
सतनाम	वृगसे भँवर भावर चाख्यो, इमिकर करो विचार॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	तुम्ह के समगुरु इमी करि जाना। जेरो दिनेश छवि कला बसाना।१६८२।	सतनाम	जल में थल में सब जग रहई। मनि है विमल ब्रम्ह पर लहई।१६८३।	सतनाम	मुक्ति चारि है सबते नीका। सत्तगुरु ज्ञान समन्धि ते टीका।१६८४।	सतनाम
सतनाम	ज्ञान चतुर है चारु भाँति। तुरी तेल बरी निर्मल बाती।१६८५।	सतनाम	त्वचा ब्रम्ह कहै अनुभव ज्ञाना। उग्र ज्ञान मक्ति स्थाना।१६८६।	सतनाम	शक्ति शंसय नहीं तामें भाषै। सदा प्रगट अघ पातक नासै।१६८७।	सतनाम
सतनाम	सदा प्रसन्न मन संत विरागा। पदपंकज मन जानु प्रयागा।१६८८।	सतनाम	नित मल मंजन दरस मँह करहू। तेजि बारुन आमृत रस भरहू।१६८९।	सतनाम	नाम विमल जल बहै सुधारा॥ कूप कुमति मन तेजु बिकारा।१६९०।	सतनाम
सतनाम	वै दरिया बारिज किमि कहई। को है भँवर बास किमि लहई।१६९१।	सतनाम	दरिया दिल कमल बिच फूला। मन है भँवर बास सम तूला।१६९२।	सतनाम	सिन्धु में सलित सब मिलि जाई। किमि उलंघ होय पार न पाई।१६९३।	सतनाम
सतनाम	साखी - १०९					सतनाम
सतनाम	पार कहे सो पार हे, वार कहे सो वार।					सतनाम
सतनाम	वार-पार सब देखए, दरिया दिल बचार॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	चन्द जो मन्द परद मँह भयऊ। इमि करि मोह घटाघन छयऊ।१६९४।	सतनाम	प्रबल माया अति ज्ञान छपाना। मुकुर बीच मुर्चा लपटाना।१६९५।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	77	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	उलटि समीर जो कीन्ह पेयाना। मिट गयो मोह घटा छितराना।१६६६।	सतनाम	माजै मुकुर साफ भयो ऐयना। बिमल बिमल पद बोलत बैना।१६६७।	सतनाम	अंजन गुरु पद लोचन बृगसा। आखर मधुर मनोहर दृगसा।१६६८।	सतनाम
सतनाम	चारि चतुर दल उर्ध अकाशा। अलि सावक धन पत्र प्रगासा।१६६९।	सतनाम	कूप तड़ाग बाटिका बट है। सींचि सुधा सम सो घट तट है।१७००।	सतनाम	तामें एक फल अजब अनूपा। बिना बीज है शब्द स्वरूपा।१७०१।	सतनाम
सतनाम	इमि करि वाफल चाखै सोई। जब सत्तगुरु पद प्रापित होई।१७०२।	सतनाम	साधु असाधु कलि कुमति विहाई। भयो निकलंक धातु फिरि जाई।१७०३।	सतनाम	ज्यों परिमल पारस द्रुम में लागा। भयो सुगंध इमि संत सुभागा।१७०४।	सतनाम
सतनाम	जहाँ रहे तहाँ जग में दीशे। भव गुन ज्ञान नाम मनि ईशे।१७०५।	सतनाम	साखी - ११०			
सतनाम	दरिया दर्शन मुकुर है, ता महं कला प्रकास।					
सतनाम	भवते गुन उन्ह रहित है, मिलि गयो प्रेम सुबाश॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	तुम सत्त गुरु मम दास तुम्हारा। सब विधि कीन्ह मोर उपकारा।१७०६।	सतनाम	सुन्यौ बैन मम आमृत सानी॥ महा तृषा तन मिलि गये पानी।१७०७।	सतनाम	महा सुगंध शीतल तन पएऊ। मम तृषा बिनु जल मेटि गयऊ।१७०८।	सतनाम
सतनाम	बिनय करों दूनो कर जोरी॥ सुनहु श्रवन अल्प मति मोरी।१७०९।	सतनाम	जब तुम दरस पुरुष कर पाई। कवन स्वरूप मम कथा सुनाई।१७१०।	सतनाम	गुन जो पूछहु तो कहों अनंता। सो स्वरूप किमि भाखो संता।१७११।	सतनाम
सतनाम	निरालोप माया नाहिं लेपा। जीवन मुक्ति गुन अतीत अलेपा।१७१२।	सतनाम	जो जन जग में देखिए अनंता। सकल रूप महिमा सुख संता।१७१३।	सतनाम	शेष सहस मुख विनय विचारी। कहि गुन महिमा इमिकरि हारी।१७१४।	सतनाम
सतनाम	ब्रह्मा विष्णु कहे त्रिपुरारी। आदि गनेश गुरु ज्ञान विचारी।१७१५।	सतनाम	बृहस्पति शुक महिमा जो कहेऊ। आदि व्यास वेद मत रहेऊ।१७१६।	सतनाम	कह्यो संत मत गुन महिमा केता। प्रीति सदा गुन प्रेम समेता।१७१७।	सतनाम
सतनाम	साखी - १११					
सतनाम	जल थल सप्त पताल लहीं, किमि करि करो बखान।					
सतनाम	ज्यों प्रति बिम्ब घट देखिए, आपु अकेल अमान॥					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

78

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तब सिख कह्यो धन्य गुरु ज्ञाता। धरेव चरन पद पंकज राता।१७१८।	सतनाम	संत दरश गुन सबते नीका। ज्यों मस्तक बीच मनि का टीका।१७१९।	सतनाम	तहाँ दीपक के वन है कामा। कोटि तीरथ भरमें का धामा।१७२०।	सतनाम
सतनाम	संत निकट पट देखु उधारी। तामें चित्र अनेक सँवारी।१७२१।	सतनाम	चक्षु बिहून देखे नाहिं ऐना। बहिरा से कोटि कहा जो बैना।१७२२।	सतनाम	ना उन्हि सुना मुकुर नहिं देखा। इमिकरि बैन झूठ करि लेखा।१७२३।	सतनाम
सतनाम	संत बचन जनि जानहु मृथा। आपु साँच नाहिं सकल अमृथा।१७२४।	सतनाम	परमारथ है गंध सुबासा। स्वारथ आपु तन निकट निवासा।१७२५।	सतनाम	परमारथ जो पर के दीजै। भव से काढ़ी मुक्ति नहि छीजै।१७२६।	सतनाम
सतनाम	बूड़त भवजल लीन्ह निकारी। सतगुरु को गुन इमि अधिकारी।१७२७।	सतनाम	पारस परसे कंचन होई। सो कुधात कहि सकै ना कोई।१७२८।	सतनाम	रहा असंत सन्त भव कैसे। ज्यों सीप मनि मुक्ता जैसे।१७२९।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - ११२	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सेवाती गुरु सीख सीप है, सदा रहे लवलीन।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	एको पल नाहिं विलगै, गुन गति होय ना भिन्न॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	लहा जगत में सब कोइ चहई। देखि दरस यह मनि जनु अहई।१७३०।	सतनाम	ऐसन सन्त सुबुद्धि सुजाना। वौ न गंध ना हीरा इन्हि जाना।१७३१।	सतनाम	नर नराऐन एक गुन बिलगाई। औ वट कष्ट चन्दन किमि पाई।१७३२।	सतनाम
सतनाम	ज्यों द्रुम चन्दन परिमल रंगा। रगरित चरचित शीतल अंगा।१७३३।	सतनाम	संत संगुध शतल सम बानी। बृगसित कली भँवर रससानी।१७३४।	सतनाम	रतनागर जग इमिकर ऐसे। कहीं लाल संखारी जैसे।१७३५।	सतनाम
सतनाम	भाजन एक विविध बहु बानी। कहीं घृत कहीं मदिरा आनी।१७३६।	सतनाम	रहे कुसंग संगति नाहिं जाना। ज्यों जिमि चन्द चोर पछताना।१७३७।	सतनाम	ज्यों गनिका सुत नीदें बनाई। शक्ति स्वारथ बड़ सुख पाई।१७३८।	सतनाम
सतनाम	इमि करि नीदहिं संत कर साथा। चलवहू झारि मरोरति हाथा।१७३९।	सतनाम	चढ़ी चरख चौरासी जैहो। पछिला गुन तब किमिकरि लैहो।१७४०।	सतनाम	कल्प कोटि भरमें भव जाई। बिनु गुरु ज्ञान नाम नाहिं पाई।१७४१।	सतनाम
सतनाम	गुरु बिनु तरै ना तीनों देवा। राम करहिं निजु मुनि के सेवा।१७४२।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	79	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ११३			
सतनाम			गुरुपद पदुम मन भवर करू, आनन्द मंगल मूल। लै लपटि रहा विमल रस, काटि करम कलि शूल॥		सतनाम	
			छन्द - २१			
सतनाम			भव भरम भंजन पाप रंजन, संजन जन सुख पावहीं। चरन कंज में मंजन करू, त्रिविधि ताप नसावहीं। विमल झलकत पलक पेखो, अलख नाम लखावहीं। जीवन मुक्ति जो जिन्द जगमें, दरस दरिया पावहीं।		सतनाम	
			सोरठा - २१			
सतनाम			धन तुँह सत्तगुरु ज्ञान, सेवक धन्य पुकारहीं। दीन्ह मुक्ति का दान, सुखसागर भव रहित है॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			सत्तगुरु दरस संत सुख हीता। ढारयो अम्रित पत्र नै नीता।१७४३। पियत प्रेम दुरि मोह दूरन्ता। विमल ज्ञान मन एक अनन्ता।१७४४। साधु संगति सब कुमति विहाई। सुनि गुन ज्ञान आमृत फल पाई।१७४५। संत समाज सदा सुख राजू। भक्ति महातम् शिर पर छाजू।१७४६। इमिकरि जग में संत सुजाना। ज्यों जल पुरइन लेप ना आना।१७४७। गुन लेहिं घैचिं अवगुन देहिं डारी। ज्यों मराल नीर छीर सुधारी।१७४८। साधु असाधु एकै तन देखा। गुन है विलग नाम सत रेखा।१७४९। धन्य वै ग्राम संत जहाँ ज्ञाता। रहे निकट सुने सत बाता।१७५०। जलद जोंक उपजै जल साथा। मुख हैं श्रवन, नयन है माथा।१७५१। पशुवत ज्ञान ताहि कँह जानी। जे नहिं संत दरस कँह मानी।१७५२। सुरसरि जल कुभाजन करई। कासा काटि मदिरा तहाँ भरई।१७५३। अति पुनीत भव विषि का मूला। यह प्रसंग कुमति सम तूला।१७५४।		सतनाम	
			साखी - ११४			
सतनाम			सुन्दर तन नर पाइके, भक्ति न कीन्ह विचारी। भयो कृम बिनु नयन को, वास विगिन्धि संवारी॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			अर्जुन कृष्ण कथा कहिये। इमिकरि ज्ञान भगति निजु लहिये।१७५५। बिनय कीन्ह बचन बहु भाँति। को है संत असंत सुजाती।१७५६।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	का पद पाय संत भये ऊँचा। देखाहिं दृष्टि सकल जग नीचा।१७५७।	सतनाम	पलक तौलि जिभ्या धरि राखा। नीति नै भगति बोलहिं सत भाषा।१७५८।	सतनाम	गुन संग्रह ऐगुन देहिं डारी॥ भये मराल मति छीर सुधारी।१७५९।	सतनाम	विविधि फूल जै अलि त्यागे। कंज पुंज वास रस पागै।१७६०।
सतनाम	विमल नाम नीजु प्रेम समेता। सदा सुबास परिमल निजु हेता।१७६१।	सतनाम	तेजि भरम भव ज्ञान विचारी। इमिकरि संत सदा अधिकारी।१७६२।	सतनाम	ज्यों दिनेश गुन सदा है ऊँचा। इमिकरि जानु जगत सब नीचा।१७६३।	सतनाम	कृष्ण नाम की पुरुष है कोई। कौन नाम निजु संत समोई।१७६४।
सतनाम	जाते अटल मुक्ति गुरु ज्ञाता। भव में भरमि कबहिं नाहिं राता।१७६५।	सतनाम	संशय सागर दूरि सब डारी। कहो ज्ञान निजु अर्थ बिचारी।१७६६।	सतनाम	विमल ज्ञान निजु संत है सोता। गोप प्रगट निजु कथै निरोता।१७६७।	सतनाम	,हम तिरगुन मन हमहीं अनंता। हम निजु ब्रह्म सुमिरहिं सब संता।१७६८।
सतनाम	जब जब जन्म जगत मँह होई। तिरगुन लीला धरि लखै ना कोई।१७६९।	सतनाम	साखी - ११५				
सतनाम	निरालेप निर्भय पद, संत सदा सुख हीत।						
सतनाम	भय भंजन भगवान हो, दनुज दैत्य कँह जीत।						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	निगम नेति गावहिं सुर ज्ञाता। जप तप भजन नाम मम राता।१७७०।	सतनाम	सो मम देखि जगत सभ भूला। महा मोह जाल सम तूला।१७७१।	सतनाम	संत दुखित सुनि धर्यो शरीरा। भंज्यो दैत्य मेंटे भवभीरा।१७७२।	सतनाम	हमहीं विसम्भर हमहीं जगदीशा। हमहीं छिना भुजा दशीशा।१७७३।
सतनाम	हम निकलंकी बावन रूपा। हम धरनी धर धरा स्वरूपा।१७७४।	सतनाम	हमहीं गोबर्धन कर गहि लीन्हा। हम गोपिन्हि संग क्रीडा कीन्हा।१७७५।	सतनाम	हम जग पालक सब जग पाला। नांव गोपाल हम नंद के लाला।१७७६।	सतनाम	हमहीं रमापति संत सनाथा। पैठि पताल नाग कँह नाथा।१७७७।
सतनाम	हम केसो धरि कंसही मारा। बासुदेव, देवकीहिं बंद उबारा।१७७८।	सतनाम	राधो रूकुमिनि रमन कहाई। गोप सखा संग गाय चराई।१७७९।	सतनाम	मातु यशोदा मरम न पाइ। वृक्ष टूटा ओखाड़ि ढमनाई।१७८०।	सतनाम	हम रमिता रमि रहों निरंता। निगम निहारि मिले नाहिं अंता।१७८१।
सतनाम	आनन्द मंगल जग में होई। तब हम गुप्त लखे नाहिं कोई।१७८२।	सतनाम					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	

81

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	करहु ध्यान तुम काकर नाऊँ। सुमिरन भजन प्रेम निजु ठाऊ।१७८३।					
सतनाम	अन्तर ध्यान दीपक धरि पेखा। हौ तुम करता दुजा ना देखा।१७८४।					सतनाम
	साखी - ११६					
सतनाम	विनय कीन्ह कर जोरि के, सुनो श्रवन चित लाये।					सतनाम
	संत से अंत परदा किमि, मोहिं जनि देहु दुराये॥					
	चौपाई					
सतनाम	तब हरि विहसि बोले किछु नीका। तुमसे कहों ज्ञान कर टीका।१७८५।					सतनाम
	जाकर भोजल हम चलि आई। सोई सदा सत पुरुष सहाई।१७८६।					
सतनाम	सोई अंश धरि तिरगुन शरीरा। अनंत कला मन बहे सरीरा।१७८७।					सतनाम
	सरगुन स्वरूप वोए निर्गुन निरंता। मम सुमिरों तेहि प्रेम समेता।१७८८।					
सतनाम	कोई कोई है गुरु ज्ञानी ज्ञाता। वा पद प्रापित भरम न राता।१७८९।					सतनाम
	जाके रूप न जाके रेखा। सो गुन रहित सो कैसे देखा।१७९०।					
सतनाम	जहाँ ले दृष्टि तहाँ लै धावै। बिनु देखे कहु कहाँ समावै।१७९१।					सतनाम
	अविनासी गुन बिनसे नाहीं। सदा चेतन्हि ब्रह्म सब माही।१७९२।					
सतनाम	इमिकरि पुरुष नाम ते भीना। ज्यों प्रतिबिम्बु घट परगट दीन्हा।१७९३।					सतनाम
	निर्गुन निःअक्षर इमिकर कहई। कमल सत पद प्रापित अहई।१७९४।					
सतनाम	देखाहिं झरी तहाँ अतीत अनंता। सोई धुनि ध्यान ज्ञान सुनु संता।१७९५।					सतनाम
	साखी - ११७					
सतनाम	निर्गुण झरी निर्वान है, दिव्य दृष्टि करु प्रीति।					सतनाम
	मैं तै तहाँ नादेखिये, खँसी भरम की भीति॥					
	चौपाई					
सतनाम	अक्षय अशोक पुरुष सत्त अहई। अजर अमर गुन इमिकरि लहई।१७९६।					सतनाम
	तुम्ह मम भगत सदा गुन ज्ञाता। तुमसे प्रेम कहों सत बाता।१७९७।					
सतनाम	सदा सुखद जन हमके नीका। भगति बसी मम ताघर बीका।१७९८।					सतनाम
	तासों निपट निकट मोर बासा। जोजन सुमिरहिं नाम सुबासा।१७९९।					
सतनाम	जो जन दुखित महा दुख पाओ। संत द्रोह सुनि ताहि नसाओं।१८००।					सतनाम
	जो नृप करिहैं संत के हाँसी। तेहि ग्रीव लैहों यम के फाँसी।१८०१।					
सतनाम	यह मृथा जनि जाने कोई। दुर्जोधन सम राज बिगोई।१८०२।					सतनाम
	अंकुर बीज का का गुन अहई। खाधि अखाधि यह किमिकर कहई।१८०३।					
सतनाम						सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मीन मान्स भक्षौ काग कपूता। स्वादिक स्वारथ आतम भूता।१८०४।						
भरमित भवन में होहिं अनीता। करिहें पाठ पुरान औ गीता।१८०५।	सतनाम					सतनाम
ऐगुन संग्रह गुन देहिं डारी। जग में सीख करहिं नर नारी।१८०६।	सतनाम					सतनाम
अति पुनीत आपन कुल जाना। डिम्भ अचार विषय रस साना।१८०७।	सतनाम					सतनाम
भेष सुभेष देखात निक लागा। ऊपर हंस भीतर है कागा।१८०८।	सतनाम					सतनाम
साखी - ११८						
कागा करम कुबुद्धि अती, नाहीं हंस की जाती।						
खाये कुसुम्भक प्रीतिकरी, बैठु पिकन्ह की पाँती॥						
चौपाई						
अन्कुर भक्ष संत सुर ज्ञानी। बोलहिं विमल रस आमृत सानी।१८०९।	सतनाम					सतनाम
भयो मराल मति सब गुन नीका। गुरु पद पंकज मस्तक टीका।१८१०।	सतनाम					सतनाम
पर दुख देखि कबै नाहिं हरर्षहिं। दया समेत अमी धन बरर्षहिं।१८११।	सतनाम					सतनाम
अति प्रसन्न पद सो जन जुगता। पाप पुन्य कबहि नाहिं भुगुता।१८१२।	सतनाम					सतनाम
अस महिमा गुन साधु बखाना। निरालेप है पद निर्वाना।१८१३।	सतनाम					सतनाम
अर्जुन धरा चरन चित लाई। धन्य धन्य निजु बचन सुनाई।१८१४।	सतनाम					सतनाम
गुरु परमेश्वर गुरु गुन ज्ञाता। मम तुम दास चरन चित राता।१८१५।	सतनाम					सतनाम
भव तरनी गुरु ज्ञान सनीपा। दया दीपक मन तेजु अनीपा।१८१६।	सतनाम					सतनाम
अती अधीन लीन पद पावे। दर्पण दया सुखद गुन गावे।१८१७।	सतनाम					सतनाम
घौंछि केस करे नख धाता। तदति प्रेम छोड़ै नाहिं माता।१८१८।	सतनाम					सतनाम
एसे प्रभु संतन सुखा दीजै। मम बालक कँह रक्षा कीजै।१८१९।	सतनाम					सतनाम
गुन ऐगुन का खोज ना कीजै। दया अंक लिखि कर गहि लीजै।१८२०।	सतनाम					सतनाम
साखी - ११९						
अर्जुन अरज बिचरि ऐ, श्री कृष्ण से कीन्ह।						
अब भय एको ना व्यापिहें, नाम अटल गुरु दीन्ह॥						
छन्द - २२						
कृष्ण भाख्यो ज्ञान गीता, धर्म राख्यो घृत दही।						
गुरुज्ञान ध्यान ज्यों विमल झलकै, पलक पेख्यो सो सही॥						
अर्थ सून्यो उर्द्ध सुन्यो, शब्द धुनि सुनि गुरु कही।						
देखु दरशन परसु अजपा, झलकत मोती मनि अही।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - २२			
सतनाम			गुरु बिनु होहिं न ज्ञान, ग्यान न होखै भक्ति बिनु। करि देखो अनुमान, दया जबै दिल में बसै॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			तब सिख कहो धन्य गुरु ज्ञाता। कहेवो ज्ञान प्रेम निजु वाता।१८२१।		सतनाम	
			कौन नाम गुन किमिकर लहिए। जाते भव जल कबहिं ना बहिए।१८२२।			
सतनाम			की होए मुक्ति संतकर संग। कुमति काल नाहिं ब्यापै अंगा।१८२३।		सतनाम	
			दुःख दारुन यमजाल बिकारा। नष्ट जाहिं नाहिं यम के द्वारा।१८२४।			
सतनाम			कहो गुरु ज्ञान प्रेम सत बानी। जाहि ते लधिहों भव जल पानी।१८२५।		सतनाम	
			जाते हंस विगोय ना जाई। सत्त गुरु चरन सुधा सम पाई।१८२६।			
सतनाम			शिव शक्ति रहै एक साथ। किमिकरि जग में होहि सनाथा।१८२७।		सतनाम	
			कहो सत परदा जनि राख्यो। होखै मुक्ति सोई सत भाखो।१८२८।			
सतनाम			जाते कष्ट मेंटे चौरासी। काल फंद गृव कटि जाये फाँसी।१८२९।		सतनाम	
			मानुष जन्म दुर्लभ जग अहई। बड़े भाग्य मुक्ति फल लहई।१८३०।			
सतनाम			भरमि भवन चौरासी राता। जग में ज्ञान मिलै गुरु ज्ञाता।१८३१।		सतनाम	
			सभ तेजि करो भक्ति निजु धर्मा। पाप पुन्य नाहिं ब्यापै कर्मा।१८३२।			
सतनाम			बड़ा पुण्य सतगुरु पद पावै। जाके सुर, नर मुनि सभ गावै।१८३३।		सतनाम	
			अब मेरे मन उपजा प्रेमा। तीरथ ब्रत त्यागों सब नेमा।१८३४।			
सतनाम			जो तुम कहो सोई चित धरिहों। सत बचन मृथ्या नाहिं करिहों।१८३५।		सतनाम	
			साखी - १२०			
सतनाम			सतगुरु चरन दिनेश सम, बृगस्यो लोचन प्रेम।		सतनाम	
			भृंगा भाव रस चाखही, तेजि सकल भ्रम नेम॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			कहों बचन सुनो निजु दासा। बृगस्यो कमल भँवर सुख बासा।१८३६।			
सतनाम			पदुम पत्र में सुरति लगावहु। निर्मल नाम आमृत फप पावहु।१८३७।		सतनाम	
			रहनी गहनी गहो निरन्ता। होय मुक्ति सुनो सत संता।१८३८।			
सतनाम			चारु मुन्द्रा चारु भाँती। उन मुनि मुन्द्रा मनि चहुँपाँती।१८३९।		सतनाम	
			निःअक्षर अक्षर धुनि पावै। गुप्त प्रगट तहाँ दृष्टि लगावै।१८४०।			
सतनाम			काया अग्र झरि देखो अनंता। एक से एक विमल गुन संता।१८४१।		सतनाम	
			इमिकरि सदा रहे जग माही। ज्यों पुरइन पर जल न रहाहीं।१८४२।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जल में रहे पै जलते भिन्ना। इमिकरि संत जगत में बीना।१८४३।	सतनाम	जाके सत्तगुरु मिले जो ज्ञाता। कबे न काल करे उतपाता।१८४४।	सतनाम	खेजहु मुक्ति तेजहु कुल लाजा। सब विधि आनन्द मंगल काजा।१८४५।	सतनाम
सतनाम	मातु पिता सुत बन्धो भ्राता। जहँ जहँ जन्मे तहँ कुल नाता।१८४६।	सतनाम	पशु में जनमे पशु कुल होई। नर के जन्म पदारथ खोई।१८४७।	सतनाम	साखी - १२१	सतनाम
सतनाम	जन्म पदारथ पाइ के, तगुरु पद ते भिन्न।	सतनाम	अघउर शूल सम ब्यापि है, ऊँच नीच कँह लीन॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	नर है दास नारी है भिन्ना। संग्रह करे विषै रस लीन्हा।१८४८।	सतनाम	साकठ सूकठ की मति ऐसा। खर भौ जन्म स्वान मति जैसा।१८४९।	सतनाम	स्त्री पुरुष जो दुइ मति करई। चार चरन कुतिया अवतरई।१८५०।	सतनाम
सतनाम	नर के जन्म हेल अवतारा। सदा संग लिए खोले शिकारा।१८५१।	सतनाम	सत्तगुरु बचन मृथ्या जनि जानहु। महा कठिन दुख दारुन सानहु।१८५२।	सतनाम	नारि पुरुष जो एक मत होई। युग युग राज्य केरगा सोई।१८५३।	सतनाम
सतनाम	एकै पान परवाना जानै। दास दासी निजु ज्ञान बखानै।१८५४।	सतनाम	गुरु पद पंकज गहे पुनीता। सदा सुगन्ध संत मत हीता।१८५५।	सतनाम	चरन कमल निजु प्रेम समेता। विधिनी भरम गति छुअै ना प्रेता।१८५६।	सतनाम
सतनाम	ब्रह्म सम्पूर्ण भयो निर लेपा। आड़ अटक नाहिं मीन जल खेपा।१८५७।	सतनाम	पगु मगु मगन सदा संग सोहे। विवेक विचारि चित चारु जोहै।१८५८।	सतनाम	चित्त चौतारा चौमुख बाती। हृदये प्रेम प्रिया लिखु पाँती।१८५९।	सतनाम
सतनाम	अनवन चीज तहाँ सब देखा। सोवत जागत दृष्टि में पेखा।१८६०।	सतनाम	तीन अवस्था सबके होई। जागृत सपन, सुषोपति सोई।१८६१।	सतनाम	तुरी तेल बरि निर्मल नीका। सर्व सम्पूर्ण वेद कर टीका।१८६२।	सतनाम
सतनाम	साखी - १२२	सतनाम	एकै मन एकै दसा,, हृदय होय अनुरागा।	सतनाम	कहे दरिया नर निजु पुर, मेंटु करम को दाग॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	तब सिख कह्यो धन्य गुरु ज्ञानी। मिला विमल रस आमृत सानी।१८६३।	सतनाम	जन्म जन्म के मेंटु कल्पना। भव सागर के दुख सब सपना।१८६४।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	भला भया सत्तगुरु गुरु पाया। आदि अंत सब कथा सुनाया।१८६५।	सतनाम	भक्ति ज्ञान और योग विराग। हृदये विवेक प्रेम निजु जागा।१८६६।	सतनाम	संसय सागर गयो विहाई। निजु गहि नाम प्रेम लव लाई।१८६७।	सतनाम	परमारथ सुनि लागत नीका। मम निजु दास तुम्हें कर बीका।१८६८।
सतनाम	पानि जोरि करी विनय विचारी। सुनो श्रवन दे बचन हमारी।१८६९।	सतनाम	नारि पुरुष एक मत भाषा। सो मैं सुनि हृदय मैंह राखा।१८७०।	सतनाम	नारि पुरुष नहीं एक मत चलई। सो तुम्हरे गृह किमिकरि रहई।१८७१।	सतनाम	सो तुम ज्ञान कहो समुझाई। सो नर तैसन करे ऊपाई।१८७२।
सतनाम	भक्ति भाव जब नाहीं करई। करै त्याग ज्ञान मत रहई।१८७३।	सतनाम	कनहरि एक दुई तरनी कैसे। बूड़ि मुये भव सागर ऐसे।१८७४।	सतनाम	छोड़ि घाट अवघट के चलई। परे भंवर कनहरि का करई।१८७५।	सतनाम	छोड़ि संग्रह होए रहे एका। सो दर काल कबहि नाहि टेका।१८७६।
सतनाम	लंगोट बन्द चन्द तहाँ दरसै। विमल प्रेम अमृत घन बरसै।१८७७।	सतनाम	तृन समान जग नजरि जो आवै। जहाँ रहो तहाँ सब कँह भावै।१८७८।	सतनाम	सरग नरक के संशय जाई। पूरन ब्रह्म सदा सुखादाई।१८७९।	सतनाम	
सतनाम	साखी - १२३						
सतनाम	भक्ति भाव का यह मंत्र सुनो श्रवन चित लाये।						
सतनाम	भाव भक्ति ज्ञान रस, विवरण किया बिनाये॥						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	चरन कमल पद पंकज लैहो। महा मोह दुख कबहीं ना पैहो।१८८०।	सतनाम	आनन्द मंगल पूरन कामा। अक्षय वृक्ष मिला सुख धामा।१८८१।	सतनाम	धन्य भाग तुम जग में आये। पंथ चलाय जीव मुक्ताये।१८८२।	सतनाम	खोजि थकित भयो तीनों देवा। हठ निग्रह करि लावहिं सेवा।१८८३।
सतनाम	तिनहू सत पुरुष नाहिं जाना। धन्य भाग सतनाम बखाना।१८८४।	सतनाम	गुरु बिनु भव जल मेटे ना चिन्ता। गहे प्रेम नाम नवनीता।१८८५।	सतनाम	जैसे तृषा मेंटा जल जूड़ा। पीवे अमी भव कबहीं ना बुड़ा।१८८६।	सतनाम	शशौ सागर कवहि न व्योप। पाप पुन्य तन करही न व्यापे।१८८७।
सतनाम	भयो मनि मुक्ता अति छवि नीका। आये जगत् मैंहगे मोल बीका।१८८८।	सतनाम	संत सिद्ध सृष्टि निजु बानी। श्रवण सुनै नर बहुत बखानी।१८८९।	सतनाम	सुमन घटा जनु बरसु सुगंधा। सर्व ब्यापु तन दुख सब रंधा।१८९०।	सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	

86

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ऐसन विमल बिरोग बिरागा। कोटि करम कटि जात सुभागा।१८६१।	सतनाम	जैसे केदली बने कपूरा। बिमल ब्रह्म भया भरि पूरा।१८६२।	सतनाम	निरा दाग निरलेप निरंता। संत मंत निजु गहनि गहंता।१८६३।	सतनाम
सतनाम	साखी- १२४	सतनाम	सत्तगुरु चरन विमल पद, गहि लीजै निजु नाम।	सतनाम	भक्ति भाव दृढ़ ज्ञान करी, जाय अमरपुर धाम॥	सतनाम
सतनाम	छन्द - २३	सतनाम	हो सुख सागर सम गुन आगर, निगम नेति सभो बरनी।	सतनाम	जल में थल मे सप्त पताल में, ज्यों दिनेश दिन हो धरनी।	सतनाम
सतनाम	काल विभंजन मैलीहि मंजन, संजन जनकी तु तरणी।	सतनाम	दरिया दिल देखि बिचारि कहा, जिमि सालि सुखे जलहो भरनी॥	सतनाम	खोरठा - २३	सतनाम
सतनाम	ज्यो तरनी जल माह, नाम विमल गुन विदित है।	सतनाम	समुझि पकड़िये बांह, भवनहिं बुड़े जहाज यह॥	सतनाम	साखी - १२५	सतनाम
सतनाम	सुकृत निजु मुख आपु से, किया वचन परगास।	सतनाम	राय मती कुल आगरी, सुत भव टेका दास॥	सतनाम	अरज बेगि निजु रायमती, अरज करहिं दिनराती॥	सतनाम
सतनाम	साहब इन्ह कहँ पालिये, गही शब्द सांगी दिनराती।१३६॥	सतनाम	मातु सुत एक मत, ज्ञान गमी परगास।	सतनाम	सत्त सुकृत गुन गहि के, अमर लोक में बास॥१२८॥	सतनाम
सतनाम	अमर लोक में जाइके, बहु बिधि करहिं बिलास।	सतनाम	आवागमन निवारि के, सत्त सुकृत के पास॥१२८॥	सतनाम	भादो वदी चौथ दिन, गवन कियो छप लोक।	सतनाम
सतनाम	जोजन शब्द विवेकिया, मेटि जाय सकल सभ शोक ॥१२९॥	सतनाम	संबत् १८३७ में, गयो पुरुष के पास।	सतनाम	जोजन शब्द विचारहीं, मेंटि जाय यम त्रास॥१३०॥	सतनाम
सतनाम	॥ ग्रन्थ ज्ञान रतन पूर्ण॥	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	87	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम